एनईपी-2020 कार्यान्वयन
रणनीतियाँ एवं लक्ष्य

NEP

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 द्वारा स्थापित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय)
कोनी, बिलासपुर (छ.ग.) - 495009

एनईपी-2020 कार्यान्वयन
रणनीतियाँ एवं लक्ष्य

NEP

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 द्वारा स्थापित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय)
कोनी, बिलासपुर (छ.ग.) - 495009

विषय सूची

- प्रस्तावना
- कुलपति का संदेश
- संरक्षक का संदेश
- कुलसचिव का संदेश
- संयोजक, NEP-2020 कार्यान्वयन समिति का प्राक्कथन
- विश्वविद्यालय एक नजर में
- NEP-2020 कार्यान्वयन कार्य बल
- प्रकाशन समिति
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति की रूपरेखा
- NEP-2020 कार्यान्वयन का सारांश
- संस्थान : विशिष्ट नीतिगत योजनाएँ एवं लक्ष्य
- NEP-2020 का कार्यान्वयन : नीतिगत रूपरेखा
- बहु विषयक समग्र शिक्षा
- उच्च शिक्षा में सहभागिता,समावेशन और संभावनाएं
- लचीली, समग्र और बहु-विषयक शिक्षा उपलब्ध कराना
- शिक्षकों का आदान-प्रदान और नवाचारी शिक्षक के रुप में उनकी भूमिका का पुनरावलोकन
- प्रौद्योगिकी समर्थित अधिगम और अधिगम की मिश्रित पद्धति से क्षमता निर्माण
- वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मुली एवं संस्कृति का एकीकरण
- उच्च शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण
- शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार की रैंकिंग प्रणाली
- NEP-2020के प्रति जागरूकता के लिए प्रयास
- NEP-2020के कार्यान्वयन के लिए श्रेष्ठतम अभ्यास
- एकाधिक प्रवेश-निकास विकल्प के साथ एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी)का प्रभावी कार्यान्वयन
- स्वावलम्बी छत्तीसगढ़
- समाचार कवरेज
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आयोजित संगोष्ठी/वेबिनार/कार्यक्रम आदि का विवरण
- वेबिनार: नीति आयोग और बीएसएम - भारतीय ज्ञान प्रणाली और सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका

- एलओसीएफ पर कार्यशाला- प्रतिवेदन
- NEP-2020 पर संगोष्ठी : उच्च शिक्षा-क्रियान्वयन नीति
- NEP-2020 पर संगोष्ठी : उच्च शिक्षा का रूपांतरण
- 'सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के विकास में गुरुकुल शिक्षा का योगदान' विषय पर संगोष्ठी
- 'समकालीन शोध जगत में साहित्यिक चोरी के रोकथाम' पर वेबिनार
- 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की अधिरचना पर सिविल सोसायटी से विचार विमर्श' पर कार्यशाला
- शिक्षा मंत्रालय को प्रस्तुत गुरु घासीदास विश्वविद्यालय का सतत और श्रेष्ठतम अभ्यास
- तकनीकी एवं अभियांत्रिकी शिक्षा में NEP-2020 पर NPIU, नई दिल्ली को पत्र
- संयुक्त सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली को NEP-2020 के कार्यान्वयन-प्रगति का प्रतिवेदन
- गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा MOOC पाठ्यक्रम का अंगीकरण
- एलओसीएफ आधारित स्नातक पाठ्यक्रम संरचना का निर्माण

प्रस्तावना

हमारे कुलगुरु के दूरदर्शी नेतृत्व में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को एक अभिनव तरीके से लागू करने के लिए अपनी यात्रा शुरू की है, जहाँ राष्ट्रीय विशेषज्ञों सहित संरक्षक श्री अतुल कोठारी जी और माननीय कुलपति प्रो आलोक चक्रवाल जी के साथ चर्चा एवं शिक्षकों, हितधारकों के बीच निरंतर मंथन के बाद नीति की इस रणनीतिक योजनाओं एवं लक्ष्य को अंतिम रुप दिया गया।

हमारे लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के कार्यान्वयन का मतलब अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में परिकल्पित गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करना है। इस प्रकार, व्यक्तिगत ज्ञान, सामाजिक जुड़ाव और मूल्यवर्धन के माध्यम से ज्ञान को आर्थिक विकास में बदलना मूल लक्ष्य रहा है। योजनाओं और लक्ष्यों को तैयार करते समय रणनीति तैयार की गई है ताकि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में बेहतर प्रदर्शन किया जा सके, जो शिक्षार्थियों को सक्षम करने के लिए महत्वपूर्ण है। रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों में सुझाए गए परिवर्तन ज्ञान उत्पादन में प्रभावी भागीदारी, ज्ञान अर्थव्यवस्था में योगदान के साथ-साथ वैश्वीकृत दुनिया में राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में गुणात्मक सुधार सुनिश्चित करते हैं। यह सुनिश्चित करने का हमारा प्रयास रहा है कि शिक्षार्थी वैश्विक और राष्ट्रीय मानकों के लिए उपयुक्त कौशल से लैस हों और एक ऐसा पारिस्थितिकी-तंत्र तैयार करें, जो शिक्षार्थियों के लिए बेहतर अवसर प्रदान करे। परिणामोन्मुख उच्च शिक्षा को संस्थागत कैसे बनाया जाए, इस पर मैराथन विमर्श के परिणामस्वरूप सीखने के परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम योजना और विकास हुआ है, जहां यूजीसी के एलओसीएफ को राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के साथ संरेखित करने के लिए संशोधित किया गया है और ज्ञान क्षेत्र की समझ, समस्या के समाधान दृष्टिकोण, मूल्यों का निर्माण, कौशल और नवीन दृष्टिकोण में उत्कृष्ट उपलब्धियों के आधार पर शिक्षार्थियों की डिग्री प्रदान की गई है। हमने शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को एकीकृत करने, एमओओसी(मूक)/ओडीएल के माध्यम से शिक्षार्थियों तक पहुँचने के साथ-साथ हमारे विश्वविद्यालय से ओडीएल/एमओओसी(मूक) के लिए गुणवत्तापूर्ण सामग्री विकसित करने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग में बेहतरी के लिए रणनीतियों को भी शामिल किया है। सामाजिक समस्याओं को हल करने और अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए नवाचार के माध्यम से अनुसंधान को मूल्यवर्धन में अनुवाद करने के साथ-साथ ध्यान केंद्रित किया गया है। अंतर-विषयक क्षेत्रों की पहचान की गई है और एलओसीएफ

आधारित स्नातक कार्यक्रम के माध्यम से बहु-विषयक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित किया गया है और 04 वर्षों के पाठ्यक्रमों में प्रवेश-निर्गम प्रावधानों को शुरू करने के प्रयास चल रहे हैं, जिसकी प्रमुख विशेषता समग्र और लचीली शिक्षा है।

इन रणनीतियों के माध्यम से लघु-मध्य और दीर्घकालिक आधार पर हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

टास्क फोर्स की ओर से, हम अपने पथ प्रदर्शक और टास्क फोर्स के संरक्षक के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमें लक्ष्यों के प्रति जागरूक किया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को लागू करने में हमारा मार्गदर्शन किया। हम अपने प्रेरणा स्रोत के भी ऋणी हैं, जिनकी निरंतर प्रेरणा, दूरदर्शी नेतृत्व और टीम भावना ने हम सभी को टीम के माहौल में मुखर होने और काम करने के लिए प्रेरित किया है। हम कुलसचिव प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार जी, टास्क फोर्स में हमारे सभी सहयोगियों के साथ-साथ मानदंडवार उप-समितियों के सभी सम्मानित सदस्यों और रचना, मुद्रण और आयोजन समितियों के सभी सदस्यों और उन सभी लोगों के भी आभारी हैं जिन्होंने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को लागू करने के लिए इन मूल्यवान दिशानिर्देशों को सामने लाने में अपना योगदान दिया है।

प्रो. पी.के. बाजपेयी

कुलपति का संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) एक बहुत विमर्श किया हुआ और प्रभावी परिवर्तनकारी सुधार है। साथ ही राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक बहुत ही सकारात्मक कदम और आर्थिक विकास और अकादमिक उत्कृष्टता के लिए ज्ञान को मूल्य परक शिक्षा में बदलने के लिए रोडमैप है। इस नीति में कई तत्व हैं जो शिक्षार्थियों को रोमांचक अनुभव प्रदान करने में सक्षम हैं और इसका उद्देश्य 21 वीं सदी के कौशल और नवाचार, जटिल समस्याओं के समाधान, रचनात्मकता और डिजिटल साक्षरता को बढ़ाने के साथ-साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत के साथ लोगों को शिक्षित करना है, ताकि उनके व्यक्तित्व को भारतीय मूल्यों और लोकाचार में गहराई से विकसित किया जा सके। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को सही मायने में लागू करना हमारी प्राथमिकता रही है। हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कार्यान्वयन टास्क फोर्स नामक एक कार्यान्वयन समिति का गठन करके विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के कार्यान्वयन के लिए कई पहल की हैं। यह खुशी की बात है कि टास्क फोर्स ने यूजीसी और शिक्षा मंत्रालय द्वारा समय-समय पर सुझाए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के विभिन्न प्रावधानों को लागू किया है, जिसमें बहु-विषयक दृष्टिकोण को अपनाना, बहु प्रवेश-निर्गम विकल्पों को शामिल करना, संशोधित एलओसीएफ आधारित स्नातक पाठ्यक्रम लागू करना एवं त्रिपक्षीय अनुबंध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 लक्ष्यों को शामिल करना है। इसके अलावा टास्क फोर्स ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के बारे में जागरुक करने के साथ-साथ मिश्रित मोड लर्निंग को लागू करने, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री बनाने आदि के लिए शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि टास्क फोर्स ने निर्धारित समय सीमा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कार्यान्वयन योजना : रणनीतिक योजनाएं और लक्ष्य का खाका तैयार कर लिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन की स्थिति को एक पुस्तिका के रूप में सामने लाया। मैं प्रोफेसर बाजपेयी और उनकी पूरी टीम को महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल करने के लिए बधाई देता हूं और रणनीतिक योजना के अनुसार सभी लघु, मध्य और दीर्घकालिक लक्ष्यों के प्रभावी और समय पर कार्यान्वयन के लिए शुभकामनाएं देता हूं। मुझे यकीन है कि प्रकाशित की जा रही "रणनीतिक योजनाएं और लक्ष्य" गुरु घासीदास विश्वविद्यालय को उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में बदलने और राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 में परिकल्पित सकारात्मक बदलाव लाने में एक अग्रणी भूमिका निभाएंगे।

(प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल)

कुलसचिव का संदेश

यह हर्ष का विषय है कि गुरू घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा गठित टास्क कोर्स कुशलतापूर्वक कार्य करते हुए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा समय-समय परदिए गए दिशा-निर्देशों के अुनसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) के विभिन्न प्रावधानों को कार्यान्वित कर रही है। विशेष रूप से हमारे नए एवं करिश्माई कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार चक्रवाल के कार्यभार ग्रहण करनेके बाद यह प्रक्रिया और तेज हो गई है। उनके दूरदर्शी नेतृत्व एवं प्रेरक दृष्टिकोण से विश्वविद्यालय परिसर में सकारात्मक परिवर्तन एवं उत्कृष्ट शैक्षणिक माहौल देखने को मिल रहा है। वास्तव में यह सौभाग्य की बात है कि गुरू घासीदास विश्वविद्यालय ने अधिगम- परिणाम आधारित स्नातक पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन किया है। यह विश्वविद्यालय सभी संस्थाओं के लिए एबीसी पंजीयन उपलब्ध कराने में अगुवा है एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के सभी महत्वपूर्ण प्रावधानों को कार्यान्वित करने में सबसे आगे है। इस संदर्भ में लघु-मध्य एवं दीर्घ अवधि के लक्ष्यों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यान्वयन रणनीति एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन की स्थिति को समाहित करने वाली किताब ''रणनीति योजना एवं लक्ष्य'' राष्ट्रीय शिक्षा नीति के महत्वपूर्ण तत्वों के आगामी कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण होगी। समिति को उनके इस प्रयास के लिए शुभकामनाएं।

(प्रो.शैलेन्द्र कुमार)

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल
कुलपति
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर

Date : 14-04-2022

Message

National Education Policy (NEP-2020) has been a much debated and deliberated transformative reform and a very positive step towards nation building and roadmap for knowledge transformation into value addition for economic growth and academic excellence. The policy has several elements capable of providing exciting experience among learners and aims to armour the leaners with 21st Century skills and innovation, critical problem solving, enhancing creativity and digital literacy on one hand at the same time enlightening the leaners with ancient Indian knowledge and cultural heritage so as to develop their personalities deep rooted into the Indian values and ethos. Implementing National Education Policy-2020 in its true spirit has been our priority at Guru Ghasidas Vishwavidyalaya. We have taken up many initiatives for the implementation of NEP-2020 in the University by constituting an implementation committee called NEP-2020 Implementation Task Force.

It is heartening to note that the Task Force has implemented various provisions of NEP-2020 as suggested by the UGC and the Ministry of Education from time to time including adoption of multidisciplinary approach, incorporation of multiple entry-exit options, implementing modified LOCF based Under Graduate programs, inclusion of NEP-2020 targets in tripartite agreement. Further the Task Force has organized several important programs for making awareness about the NEP-2020 as well as capacity enhancement of faculty for implementing blended mode learning, creating quality teaching learning materials, etc.

It gives me immense pleasure to note that the Task Force has completed the design of NEP-2020 implementation Plan: Strategic Plans and Goals in the set time limit and bringing out the status of NEP-2020 implementation in a booklet form. I congratulate Professor Bajpai and his whole team for attaining the important milestone and wish them all the best for effective and timely implementation of all short, mid and long term goals as per the strategic plan. I am sure the "Strategic Plans and Goals" being published will be the guiding force for transforming GGV as a centre of excellence and a leader in bringing the positive change as envisaged in NEP-2020.

(Prof. Alok Kumar Chakrawal)

देश को बदलना है तो शिक्षा को बदलो

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

Shiksha Sanskriti Uthan Nyas

अध्यक्ष : दीनानाथ बत्रा   सचिव : अतुल कोठारी

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के दूरदर्शी कुलपति प्रो. आलोक चक्रवाल द्वारा गठित राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की टास्क फोर्स ने "रणनीतिक योजनाएँ और लक्ष्य" तैयार किए हैं और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के महत्वपूर्ण प्रावधानों के चरण-दर-चरण कार्यान्वयन के लिए उन्हें एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने की योजना बना रहे हैं। शिक्षा नीति 2020 के समयोचित कार्यान्वयन के लिए यह आवश्यक है कि इसके विभिन्न आयामों के लिए निर्धारित लक्ष्यों हेतु लघु, मध्यम और लंबी अवधि के आधार पर एक अच्छी तरह से बनाई गई समयबद्ध योजना तैयार की जाए।

मुझे बताया गया था कि "रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों" को आठ उप-समितियों द्वारा बनाया गया है, जिनमें से प्रत्येक ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के एक पूर्वनिर्धारित महत्वपूर्ण प्रावधानों के लिए अनुशंसाएँ एवं लक्ष्य तैयार किए है, जिन्हें विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद द्वारा विचार विमर्श के बाद अनुमोदित किया गया था। इसके अतिरिक्त, पुस्तिका राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के कार्यान्वियन विवरण के साथ-साथ नीति की उचित समझ के लिए विश्वविद्यालय द्वारा किए गए जागरुकता और क्षमता वृद्धि कार्यक्रमों को भी प्रस्तुत करती है।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह पुस्तिका राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के कार्यान्वयन के माध्यम से संस्थागत परिवर्तन के लिए एक दृष्टि-पत्र (विजन डॉक्युमेंट) के रूप में काम करेगी। "रणनीतिक योजना और लक्ष्य" विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित शैक्षणिक कार्यक्रमों में प्रवेश-निकास नीति, समग्र और बहुआयामी दृष्टिकोण को लागू करने, कौशल और नवाचार को शामिल करने, शिक्षार्थियों को अनुभवात्मक शिक्षा और इंटर्नशिप प्रदान करने के साथ-साथ बहुआयामी शैक्षिक परिस्थिति तंत्र को बढ़ाने के लिए प्रोटोकॉल भी होगा।

मुझे राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के विभिन्न आयामों को लागू करने के लिए टास्क फोर्स के साथ बातचीत करने, दिशा-निर्देश प्रदान करने और अनुभव साझा करने का सौभाग्य मिला है। यह पुस्तिका न केवल इस विश्वविद्यालय के लिए बल्कि अन्य शैक्षिक संस्थानों में भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 को लागू करने के लिए बहुत उपयोगी दस्तावेज साबित होगी।

मैं गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के कार्यान्वयन के लिए "रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों" के सफल प्रकाशन के लिए टास्क फोर्स को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ। मुझे विश्वास है कि प्रो. आलोक चक्रवाल के नेतृत्व में समस्त विश्वविद्यालय परिवार इन लक्ष्यों को सफलतापूर्वक हासिल करने में यशस्वी होंगे।

अतुल कोठारी

राष्ट्रीय सचिव

सरस्वती बाल मन्दिर, जी ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली

Saraswati Bal Mandir, G Block, Narayana Vihar, New Delhi-110028

दूरभाष : 011- 25898023 | E-mail : atulssun@gmail.com | Website: www.bhartiyashiksha.com @Shiksha Sanskriti

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
[illegible]
कोनी, बिलासपुर–495009 (छ.ग.) भारत

Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
(A Central University Established under the Central Universities Act, 2009 No. 25 of 2009)
Koni, Bilaspur-495009 (C.G.) INDIA

Dr. Shailendra Kumar
(Ph.D. IIT Kharagpur)
Professor (Civil Engineering)
Registrar (Acting)

Message

I am happy to know that the Task Force constituted by the Guru Ghasidas Vishwavidyalaya has been working very efficiently and implementing various provisions of National Education Policy (NEP- 2020) as directed by the Ministry of Education, GoI and the University Grants Commission, New Delhi from time to time. The process has been expedited especially after the joining of our new and charismatic Vice-Chancellor, Professor Alok Kumar Chakrawal. His visionary leadership and motivational approach have brought out positive change and transformed the academic eco-system in the University campus.

It is indeed a matter of privilege that Guru Ghasidas Vishwavidyalaya has implemented learning outcome based Under graduate programs, taken leadership in providing ABC registration for all institutions and is in the forefront in implementing all important provisions of NEP-2020. In this regard the book "Strategic Plans and Goals" describing the NEP-Implementation strategy with short- mid and long -term goals as well as providing the status of the NEP-implementation will be very useful in further implementing the important element of the policy. I wish the committee all the best for their endeavours.

(Prof. Shailendra Kumar)

Phone: (O) 07752-260209 (M) [illegible] Fax : 07752-260154 E-Mail: ggv.registrar@gmail.com Website : www.ggu.ac.in

Prof. P.K. Bajpai,
Convener
NEP-2020 Task Force

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति में बदलने में सक्षम एक सुविचारित, अभिनव रोड मैप के रूप में सामने आई है। सही मायने में, यह नीति देश भर में लगभग सभी हितधारकों से व्यापक चर्चा, संवाद और योगदान से विकसित हुई है। नीति में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के मामले में उच्चतम वैश्विक मानकों को प्राप्त करने की परिकल्पना की गई है और एक ही समय में शिक्षार्थियों में भारतीय मूल्यों, लोकाचार, देशभक्ति, मानवीय सशक्तिकरण और सामाजिक जुड़ाव के प्रति संवेदनशीलता अन्तर्निविष्ट करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, सरकार की नीतियों और उच्च शिक्षा संस्थानों के दृष्टिकोणों के बीच समन्वित राष्ट्रीय प्रयासों और परस्पर संबंधों को तालमेल बिठाने की जरूरत है, ताकि इसे समयबद्ध ढांचे में लागू किया जा सके। इस कार्य का पूरा विचार शिक्षार्थियों की हमारी युवा पीढ़ी को वास्तव में वैश्विक नागरिक बनाना है, जो भारतीय मूल्यों में गहराई से निहित है, हमारी सांस्कृतिक विरासत से अवगत है और भारतीय होने पर गर्व करने के साथ भारत को इसकी महिमा के शिखर पर ले जाने के लिए आश्वस्त है।

इस उद्देश्य को साकार करने का प्रयास करते हुए, माननीय कुलपति महोदय ने उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के विभिन्न तत्वों के प्रभावी और समय पर कार्यान्वयन के लिए कार्यान्वयन रणनीतियों को तैयार करने के लिए एक टास्क फोर्स का गठन किया है। टास्क फोर्स ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के विभिन्न आयामों को लागू करने के लिए बुनियादी रोडमैप और रणनीति विकसित की है। विकसित रणनीति में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम, विदेशों में भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों के ब्रांड निर्माण, विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ अकादमिक और शोध सहयोग, दोहरी व्यवस्था के तहत क्रेडिट मान्यता, वैश्विक नागरिकता दृष्टिकोण और विदेशी पूर्व छात्रों के साथ जुड़ाव जैसी गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

बड़े गर्व और सौभाग्य के साथ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 टास्क फोर्स द्वारा तैयार की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कार्यान्वयन के लिए रणनीतिक योजना और लक्ष्य साझा कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि यह दिशा-निर्देश हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों को शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग के नवीन क्षेत्रों का पता लगाने और नए भारत की आकांक्षाओं को पूरा करने में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

प्रो. पी.के. बाजपेयी

विश्वविद्यालय एक नजर में

दृष्टि एवं उद्देश्य

दृष्टि

18वीं शताब्दी के महान सतनामी संत गुरु घासीदास के विचारों एवं शिक्षा से प्रेरित होकर गुरु घासीदास विश्वविद्याल बिलासपुर, गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा की सहायता से सामाजिक सशक्तिकरण, विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्गों के सशक्तीकरण हेतु प्रतिबद्ध है। विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य विज्ञान सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के उभरते अंतर विषयक क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण नवीन अकादमिक पाठ्यक्रम को उपलब्ध कराने एवं इसे सुदृढ़ करने पर है, जिससे न केवल विश्वविद्यालय, बल्कि अकादमिक जगत के ज्ञान भण्डार का भी निरंतर विकास हो। विश्वविद्यालय का उद्देश्य मूल्य आधारित संपूर्ण शिक्षा प्रदान करना भी है, जिससे मानवता की सेवा हेतु सुशिक्षित समुदाय की अभिवृद्धि एवं विकास किया जा सके।

उद्देश्य

निर्देशात्मक एवं शोध सुविधाओं के माध्यम से ज्ञान का विकास एवं प्रसार।

मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के शैक्षणिक कार्यक्रमों में एकीकृत पाठ्यक्रम हेतु विशेष प्रावधान।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं अंतर–अनुशासनात्मक अध्ययन तथा शोध में नवीन ज्ञान को प्रोत्साहित करने हेतु यथोचित उपाय।

राष्ट्र के विकास हेतु मानव शक्ति का शिक्षण एवं प्रशिक्षण। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास हेतु उद्योगों से संबंध स्थापित करना।

ऐसे शैक्षणिक कार्यक्रमों का निरूपण एवं आरंभ, जो व्यक्तियों, विशेषतः आवश्यक सुविधा से वंचित व्यक्तियोंकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार कर सके तथा उनके बौद्धिक, अकादमिक व सांस्कृतिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर सके।

INSPIRATION

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय का नामकरण दूरदर्शी समाज सुधारक संत गुरु घासीदास (1756-1836ई) के नाम पर हुआ है, जिन्होंने तत्कालीन भेदभाव पूर्ण सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दी और शोषण मुक्त एवं वंशानुगत जाति-व्यवस्था का खंडन कर सामाजिक समरसता को महत्व प्रदान किया। गुरु घासीदास जी ने सर्वग्राही दृष्टि एवं चरणबद्ध सुधार के माध्यम से प्रचलित सामाजिक अन्याय एवं असमानता को दूर करने में योगदान दिया। सतनाम पंथ सत्य ही ईश्वर है, में विश्वास करता है जो निर्गुण निराकार और अनन्त है। उनके द्वारा मदिरा-मांस के निषेध द्वारा आत्मशुद्धि का प्रयास किया गया। गुरु घासीदास के सिद्धांतों में चर-अचर के प्रति प्रेम एवं प्राणी मात्र के प्रति हिंसा निषेध प्रमुख है। सतनाम पंथ के अनुयायी सैकड़ों वर्षों से इन उपदेशों का अनुकरण करते आ रहे हैं। केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में उन्नयन के उपरांत गुरुजी के विचारों को जीवन में उतारने के लिये विश्वविद्यालय प्रशासन ने अनेक कदम उठाये हैं। वर्तमान में हमारा विश्वविद्यालय परिसर मदिरा एवं तम्बाखू से पूर्णतः मुक्त है। गुरुजी की शिक्षा के अनुरूप भारत भर से आये विभिन्न वर्गों एवं जातियों के विद्यार्थियों को समानताधर्मी वातावरण विश्वविद्यालय के जीवंत परिसर में उपलब्ध है।

our campus is an alcohol and tobacco free campus. Our vibrant university campus, where students from diverse castes, creeds and classes come together from all over India, provides an egalitarian environment based on Guruji's teachings.

गुरु कृपा के पुण्य परस से, विद्या का वरदान है।
घासीदास विश्वविद्यालय, हम सब का अभिमान है।

महानदी, शिवनाथ, नर्मदा, हसदो पावन धारा है।
अंतः सतिला अरपा का सतत् प्रवाह हमारा है।

छत्तीसगढ़ की माटी का यह अभिषेक महान है।

भोरमदेव, सरगुजा, शिवरी, रतनपुर, मल्हार यहीं।
कालिदास का आम्रकूट है, अमर काव्य शृंगार यहीं।
धरती, गगन, सघन वन गूंजे, जीवन का नवगान है।

शस्य श्यामला धरती है, खेतों में हरियाली है।
नये भगीरथ कोरबा जैसी, लोक–शक्ति की लाली है।

जाग उठे हैं गांव हमारे, जागे सभी किसान हैं।
ज्ञान सभ्यता से आलोकित, विद्वत्जन सम्मान यहाँ

माधव, लोचन, मुकुटधर पाण्डेय, बख्शी जी अरु भानु यहाँ।
राव विप्र, रविशंकर, छेदी, कुंवर वीर का गान है।

मानव मूल्यों का सृजन करें हम, समता, ममता, शांति भरे।
हर्षित, पुलकित हो भारत माँ . सुख–समृद्धि सर्वत्र झरे।
विद्या मंदिर के प्रांगण से, नव–युग का अभियान है।
गुरु कृपा के पुण्य परस से................

NEP 2020कार्यान्वयन समिति

श्री अतुल कोठारी	संरक्षक
प्रो. पी. के. बाजपेयी	समन्वयक
सभी अधिष्ठाता, सामाजिक SoS	सदस्य
निदेशक,IQAC	सदस्य
अधिष्ठाता, छात्र कल्याण	सदस्य
ओएसडी, विकास	सदस्य
मानकसमिति I. प्रो. एस. एस. सिंह II. प्रो. अनुपमा सक्सेना III. प्रो. बी. एन. तिवारी IV. प्रो. ए. एस. रणदिवे V. प्रो. एस. सी. श्रीवास्तव VI. प्रो. मनीषा दुबे VII. प्रो. अमित सक्सेना VIII. प्रो. पी. के. बाजपेयी	

प्रकाशन समिति

नाम	पदनाम	विभाग
डॉ. ए. के. दीक्षित	समन्वयक	वनस्पति विज्ञान
डॉ. एस.के.शाही	सदस्य	वनस्पति विज्ञान
डॉ. घनश्याम दुबे	सदस्य	इतिहास
डॉ. गौरी त्रिपाठी	सदस्य	हिंदी
श्री मुरली मनोहर सिंह	सदस्य	हिंदी
डॉ. अखिलेश गुप्ता	सदस्य	हिंदी
डॉ. अनीश कुमार	सदस्य	हिंदी
डॉ. अनुपमा कुमारी	सदस्य	जनसंचार एवं पत्रकारिता
डॉ. शिव कुमार मिश्र	सदस्य	जनसंचार एवं पत्रकारिता
डॉ. बसंत	सदस्य	शिक्षा
डॉ. ज्योति वर्मा	सदस्य	शिक्षा
डॉ. कृष्णा पाठक	सदस्य	शिक्षा
श्री सत्येश भट्ट	संयोजक	जनसंपर्क अधिकारी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की रूपरेखा

केंद्रीय कैबिनेट द्वारा 29 जुलाई 2020 को स्वीकृत राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 शिक्षा के क्षेत्र में सबसे परिवर्तनकारी सुधारों में से एक है और यह “आत्मनिर्भर भारत” को दूरदर्शी वैश्विक मार्गदर्शक के रूप में स्थापित करने के लिए मील का पत्थर साबित होगा। कोविड महामारी के दौरान लगभग सभी शैक्षिक संगठनों के द्वारा यह बात निर्विवादित रूप से चर्चा के केंद्र में आई है कि प्रत्येक नीति में ऐसे तत्वों को शामिल किया जाए जिससे हमारी युवा स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर सतत विकास हेतु नवाचारी ज्ञान से संपन्न हों। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में भी इस हेतु समिति बनाई गई है। समिति ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के कार्यान्वयन के लिए कई बैठकें आयोजित की हैं। NEP-2020 के कार्यान्वयन पर दो राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किए हैं। जिनमें श्री अतुल कोठारी जी और अन्य प्रख्यात शिक्षाविदों ने अपना मार्गदर्शन दिया। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में NEP-2020 के प्रावधानों के कार्यान्वयन के लिए क्रमबद्ध एकीकृत रोडमैप प्रक्रिया में है।

विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सत्र 2021–22 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को लागू करने के लिए 13.09.2021 को नई कार्यान्वयन समिति का गठन किया।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय के लिए रणनीतिक योजना और लक्ष्यों का मसौदा तैयार करना, और

2. चरणबद्ध तरीके से राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन के लिए एक रोडमैप प्रदान करना।

यह देखते हुए कि उपरोक्त प्रारूपण एक कठिन कार्य है और समिति के पास बहुत सीमित समय है जैसा कि सत्र लगभग एक महीने के बाद शुरू होगा। इसके अलावा, एनईपी के कार्यान्वयन के लिए व्यापक रोडमैप में विश्वविद्यालय के उच्च शिक्षा/शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों के प्रख्यात विशेषज्ञों के साथ प्रणाली के भीतर चर्चाओं और विमर्श की एक विस्तृत श्रृंखला, वेबिनार/परामर्शी सत्रों की श्रृंखला शामिल है। हम कार्यान्वयन के लिए रोडमैप तैयार करने के लिए आंतरिक और बाहरी विशेषज्ञों के साथ ऐसे कई विचार-मंथन सत्र आयोजित करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, इसके बजाय, हमारे कुछ आंतरिक सदस्यों का लाभ उठाएं जिन्होंने ऐसे कई सत्रों में व्यापक रूप से भाग लिया और कई व्याख्यान दिए। हम पिछले एक साल के दौरान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अधिसूचित ऐसे कई विनियमों का भी लाभ उठाएंगे, जिनमें ABC विनियम, मिश्रित मोड अधिगम के लिए विनियम, बहु-प्रवेश-निर्गम दिशानिर्देश, 36 स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए अधिगम परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम शामिल है। नैक की मान्यता के लिए भी एसएसआर जमा करने की प्रक्रिया अंतिम चरण में हैं। इस कार्य के दौरान भी, हम में से अधिकांश ने डेटा विश्लेषण का कठिन काम किया है और गुणवत्ता सुनश्चयन के बारे में विशेषताओं, कमजोरियों, चुनौतियों और अवसरों के साथ-साथ परिसर में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार के साथ-साथ परिसर को इको-सिस्टम में बदलने की प्रक्रिया से गुजरे हैं। अंत में, हमने अपने कामकाज, व्यवहार और दृष्टिकोण पर व्यस्त गतिविधियों और प्रेरक नेतृत्व के प्रभाव को देखा है। अनुसंधान के चिन्हित क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना, केंद्रीय अनुसंधान सुविधा की स्थापना, सहयोग के लिए नए एमोयू, नए संस्थान-अकादमिक संपर्क रणनीति आदि सहित गुणवत्ता सुधार के लिए विभिन्न प्रयास शुरू किए गए हैं, सभी को इस

योजना में एकीकृत किया जाना चाहिए। इसलिए, नवगठित समिति की ओर से, हम समिति के क्षेत्र में परिकल्पित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित समयसीमा प्रस्तावित करते हैं

1. "राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कार्यान्वयन योजना: रणनीतिक कार्य योजना एवं लक्ष्य" तैयार करने के लिए समिति उच्च शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निम्नलिखित चिन्हित तत्वों पर ध्यान केंद्रित करेगी, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा के लिए ढांचा भी शामिल है:

   • परिसर में उच्च शिक्षा में समता, पहुंच और समावेशन

   • लचीली, समग्र और बहुविषयक शिक्षा प्रदान करना

   • शिक्षक का उन्नयन और नवाचारी शिक्षक के रूप में उनकी भूमिका सुनिश्चित करना।

   • मिश्रित मोड सीखने के लिए प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षण और क्षमता निर्माण

   • भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्यों और संस्कृति को वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ एकीकृत करना

   • उच्च शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण: वैश्विक पहुंच बढ़ाना

   • रैंकिंग के साथ शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार को जोड़ना

   • एकीकृत उच्च शिक्षा प्रणाली विकसित करना

   रणनीतिक योजना में, प्रत्येक श्रेणी में कई उप श्रेणियाँ होंगी, जिनके लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाएंगे। हम प्रत्येक बिंदु के लिए उप-समिति बनाकर 40 दिनों के भीतर इस कार्य को पूरा करने की योजना बना रहे हैं।

2. कार्यान्वयन के कुछ पहलुओं पर चर्चा और विचार-विमर्श एक साथ जारी रहेगा और रणनीतिक योजना का ढांचा तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया को शामिल किया जाएगा। अस्थायी रूप से नियोजित इनमें से कुछ अभ्यास हैं:

• राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कार्यान्वयन रणनीतियों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 17.09.2020

• राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को लागू करने में भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक मूल्यों और गुरुकुल मॉडल की भूमिका पर राष्ट्रीय संगोष्ठी: 28.09.2021 (नीति आयोग, भारत सरकार, बीएसएम और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के सहयोग से)

• संस्थानों के समूह बनाने के लिए क्षेत्रीय कार्यशाला, अक्टूबर 2021 का पहला सप्ताह

• संबंधित बीओएस द्वारा यूजीसी द्वारा अधिसूचित एलओसीएफ में पुनरीक्षण और संशोधन: 15 अक्टूबर, 2021

• एमओओसी(मूक) के माध्यम से मेंटर-मेंटी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए शिक्षकों की पहचान और उनकी क्षमता वृद्धि: दिसंबर 2021

• स्नातक शिक्षा को और अधिक बहुविषयक बनाने के लिए मूल्य वर्धित पाठ्यक्रमों की पहचान करना, पाठ्यक्रमों को जोड़ना और पाठ्यक्रम तैयार करना: अक्टूबर 2021

3 **व्यावसायिक शिक्षा में बहु-विषयक कार्यक्रमों की पहचान:** AICTE कार्यान्वयन कार्यक्रम का पालन करने के लिए एक उपसमिति प्रस्तावित है। AICTE कार्यान्वयन कार्यक्रम समिति के संयोजक प्रो. संजय ढांडे हैं।

NEP-2020 के कार्यान्वयन के लिए उचित प्रक्रियाओं, प्रणालियों और आँकलन एवं वितरण संबंधी तत्वों की आवश्यकता होती है ताकि आसानी से प्रगति का विश्लेषण कर लक्ष्यों को प्राप्त करने में सुधार किया जा सके।

NEP-2020 कार्यान्वयन का सारांश

पूर्व में 16 जून, 1983 को अविभाजित मध्य प्रदेश राज्य विधानसभा के एक अधिनियम के माध्यम से स्थापित एक राज्य विश्वविद्यालय, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर में अरपा नदी के तट पर स्थित है और केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के तहत केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया था। संसद द्वारा विश्वविद्यालय । 17 वीं शताब्दी के समाज सुधारक सतनामी संत गुरु घासीदासजी के नाम पर, यह एक आवासीय विश्वविद्यालय है जिसका अधिकार क्षेत्र छत्तीसगढ़ का बिलासपुर राजस्व संभाग है। नैक(NAAC) ने विश्वविद्यालय को B ग्रेड प्रदान किया है। विश्वविद्यालय के 32 विभागों में 36 स्नातक, 28 स्नातकोत्तर, 33 पीएचडी, 4 डिप्लोमा और 2 प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम संचालित है, जो कला, शिक्षा, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी; अंतरविषय अध्ययन, विधि, जीवन विज्ञान; प्रबंधन और वाणिज्य; गणितीय और संगणक विज्ञान; प्राकृतिक संसाधन; भौतिकीय विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों की एक श्रृंखला से संबंधित हैं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन के लिए, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने एक टास्क फोर्स का गठन किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020के संदर्भ में विश्वविद्यालय में निम्नलिखित सर्वोत्तम अभ्यास हैं:

• विश्वविद्यालय में संचालित 16 पाठ्यक्रम और 31 विषय बहु-विषयक प्रकृति के हैं।

• शैक्षणिक सत्र 2021-22 से सभी स्नातक पाठ्यक्रम एलओसीएफ आधारित हैं। सभी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में पीओ, सीओ, पीएसओ होते हैं।

• औसतन, स्नातक कार्यक्रमों के 23% पाठ्यक्रमों और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के 34% पाठ्यक्रम में अनुभवात्मक शिक्षण घटक होते हैं। सभी कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम में प्रायोगिक/परियोजना/इंटर्नशिप कार्यक्रम/निबंध/क्षेत्र कार्य प्रशिक्षण शामिल हैं।

• विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2022-23 से बहु प्रवेश-निर्गम के साथ 15 पाठ्यक्रम संचालित है।

• एनआईआरएफ रैंकिंग और नैक प्रत्यायन बाधाओं के कारण विश्वविद्यालय अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के लिए पंजीकरण नहीं करा सका। इस संबंध में कुलपतियों की बैठक के दौरान विश्वविद्यालय ने एबीसी के साथ रैंकिंग को अलग करने का प्रावधान करने के लिए सुझाव दिए हैं।

• राष्ट्रीय शैक्षणिक निक्षेपागार (NAD) प्रणाली 2014-2015 से लागू की गई है। एनएसडीएल से 9696 छात्रों का डाटा ट्रांसफर कर डिजिलॉकर में अपलोड किया गया है। एनएडी (NAD) के तहत लगभग 9696 छात्र लाभान्वित हुए हैं।

• विश्वविद्यालय वर्तमान में "स्वयं" (SWAYAM) के तहत एम.टेक में एक पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। क्रेडिट ट्रांसफर के तहत कोई भी पाठ्यक्रम संख्या नहीं है, क्योंकि पाठ्यक्रम जारी है।

• विश्वविद्यालय योग में एक प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। इसके अलावा, तीन कौशल विकास-आधारित कार्यक्रम 2022-23 से संचालित करने के लिए अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया गया है। नैनोटेक्नोलॉजी, नैनो साइंस एवं एडवांस मैटेरियल्स में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और परफॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) और फाइन आर्ट्स (बीएफए) में स्नातक पाठ्यक्रम कौशल आधारित कार्यक्रम हैं।

• विश्वविद्यालय शैक्षणिक वर्ष 2022-23 से क्षेत्रीय भाषा में तीन पाठ्यक्रम प्रारंभ करेगा।

• वर्तमान में, विश्वविद्यालय ऑनलाइन मोड में कोई पाठ्यक्रम संचालित नहीं कर रहा है। लेकिन विश्वविद्यालय "स्वयं" (SWAYAM) के तहत एम.टेक में एक पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है।

• राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को सुचारू रूप से और सफलतापूर्वक लागू करने के लिए विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर 10 कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

• एनईपी 2020 टास्क फोर्स और 08 उपसमितियों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सूक्ष्म विवरण और विकसित रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों पर काम किया है।

संस्थान : विशिष्ट नीतिगत योजनाएँ और लक्ष्य

रणनीतिक योजनाएं और लक्ष्य संस्थान की सुधार के लिए पहल का हिस्सा है, ताकि छात्र परिणामों में सुधार के साथ-साथ एक अधिक कुशल और प्रभावी संगठन बनने के लिए खुद को प्रबंधित कर सके। रणनीतिक योजना प्रभावशीलता और दिशा बोध के लिए उद्देश्यों और मापनीय लक्ष्यों की रूपरेखा प्रदान करती है। इसके अलावा, यह प्रगति का मूल्यांकन करने और आगे बढ़ने पर दृष्टिकोण बदलने में मदद करता है। विश्वविद्यालय की दृष्टि और मिशन पर ध्यान केंद्रित करने के साथ रणनीतिक योजना विकसित की गई है, ताकि गहरी जड़ें स्थापित की जा सके जो विश्वविद्यालय के निरंतर उन्नयन के लिए एक स्थिर आधार के रूप में काम करेगी, साथ ही साथ प्रयोग और नवाचार के अभियान को मजबूत करेगी। यह हितधारकों को समान लक्ष्यों को व्यक्त करने और सहमत होने के साथ-साथ विकास के समान पथ पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है। रणनीतिक योजना में फीड बैक सत्रों में समुदाय और अन्य हितधारकों को शामिल करना भी शामिल है, जो टीम को अधिक लक्षित रणनीतिक योजना स्थापित करने और सामुदायिक समर्थन प्राप्त करने में सहायता करता है।

अधिकांश विश्वविद्यालय तीन से पांच साल की योजना तैयार करते हैं, जिससे रणनीतियों, जिम्मेदार व्यक्ति, समय सीमा और आवश्यक राशि का पता चलता है। निष्पादन प्रक्रिया में पहले चरण के रूप में रणनीतिक योजना का मूल्यांकन किया जाता है। रणनीति की पूरी तरह से जांच की जानी चाहिए, और योजना के किसी भी घटक जो असाधारण रूप से कठिन हो सकता है, पर जोर दिया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए, योजना का कोई भी हिस्सा जो अवास्तविक या लागत में अत्यधिक हो सकता है, या तो समय या धन राशि के मामले में। रणनीति को कार्यान्वित करने के लिए आवंटित टीम के नेताओं के साथ टीमों को तैनात करना महत्वपूर्ण है। प्रगति की निगरानी और टीम के संयुक्त प्रयासों और समय-सीमा पर कड़ी नज़र रखना टीम को सफलता की ओर ले जाएगा। इस तरह की रणनीतिक योजनाओं को लागू करने से न केवल विश्वविद्यालय के प्रयासों के लिए आंतरिक और बाहरी हितधारकों का समर्थन प्राप्त होता है, बल्कि सफलता पर नजर रखने और मापने के लिए सार्थक उपायों का विकास भी होता है।

चूंकि सभी उच्च शिक्षा संस्थान और अन्य सभी हितधारक राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 की भावना को समझने का प्रयास कर रहे हैं और नीति के भावानुरुप अपनी कार्यान्वयन योजनाओं को विकसित कर रहे हैं, हमने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को चरणबद्ध तरीके से लागू करने के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों की पहचान की है। । राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के कार्यान्वयन के लिए रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों के अनुमोदन के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि चरणबद्ध कार्यान्वयन के लिए आठ प्रमुख क्षेत्रों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों में बताई गई प्रक्रियाओं पर काम करना जारी रखना होगा।

1. बहुविषयक समग्र शिक्षा

रणनीतियाँ और कार्य योजना

Committee

1.	**Prof. S. S. Singh**	**Chairman**
2.	Prof. A.S. Randive	Member
3.	Prof. T.V. Arjunan	Member
4.	Prof. Manish Shrivastava	Member
5.	Dr. Babita Majhi	Member
6.	Dr. Pankaj Gupta	Member
7.	Dr. B.D. Mishra	Member
8.	Dr. Sanmati Jain	Member

NEP–2020 का कार्यान्वयन : नीतिगत रूपरेखा

बहुविषयक समग्र शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मौजूदा शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक और वैचारिक सुधार लाने पर जोर देती है। मौजूदा शिक्षा प्रणाली में NEP-2020 के कार्यान्वयन में अग्रणी होने के नाते, गुरु घासीदास, बिलासपुर बहु–विषयक और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाता है।

जैसा कि हम समझते हैं कि एक समग्र औरबहु-विषयक शिक्षा का उद्देश्य मानव की सभी क्षमताओं को एक एकीकृत तरीके से विकसित करना होगा। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ रहा है। एक अधिक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली के लिए एक सुचारु परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए लघु, मध्यम, दीर्घकालिक लक्ष्य और कार्य योजनाएं विकसित की जा रही हैं।

लघु अवधि के लक्ष्य और नीतियां (<2 वर्ष)

बहु-विषयक और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए,गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के निम्नलिखित अल्पकालिक लक्ष्य और कार्य योजनाएँ हैं।

क्र. सं.	लघु अवधि के लक्ष्य	लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कार्यप्रणाली/कार्यान्वयन नीति
	बहुविषयक और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लचीले पाठ्यक्रम में बदलाव के लिए एक रोडमैप तैयार करें	गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में उपलब्ध सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में बहु-विषयक पाठ्यक्रमों को समायोजित करने के लिए अध्यादेश में प्रावधान करना।
	बहुविषयक शिक्षा के खुले विकल्प के साथ स्नातक/स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में सीबीसीएस की शुरूआत, बहुविषयक प्रकृति के सामान्य/मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रमों का परिचय	स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में मुख्य और व्यावसायिक वैकल्पिक विषयों के साथ मुक्त विकल्प के लिए योजना में प्रावधान करें। यूजी और पीजी पाठ्यक्रम में मुख्य और व्यावसायिक वैकल्पिक विषयों के साथ मुक्त ऐच्छिक के लिए योजना में प्रावधान करें। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली के कार्यान्वयन और इसके दिशा-निर्देशों के बारे में छात्रों में जानकारी प्रसारित करना।
	परीक्षा योजना और क्रेडिट हस्तांतरण सहित बहु-विषयक पाठ्यक्रमों के लिए नीति विकसित करना	निम्नलिखित महत्वपूर्ण मापदंडों के साथ छात्रों, शिक्षकों और परीक्षा अनुभाग के लिए दिशा-निर्देश तैयार करना। प्रति पाठ्यक्रम न्यूनतम और अधिकतम संख्या, परीक्षा की योजना यानी आंतरिक मूल्यांकन, बाहरी मूल्यांकन, आंतरिक मूल्यांकन की क्रेडिट की संख्या आदि।

	मौजूदा विभागों में उन पाठ्यक्रमों की जानकारी प्राप्त करें , जो बहुविषयक पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में व्यावसायिक कार्यक्रमों के अंतर्गत अन्य विभागों/विद्यापीठों में संचालित किए जा सकते हैं।	अधोसंरचना और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों द्वारा स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों छात्रों को दिए जाने वाले खुले वैकल्पिक विषयों की सूची का चिन्हांकन। छात्रों द्वारा चयन/ अपनाने की अनुमति देने के लिए खुले वैकल्पिक विषयों को आम छात्र के पोर्टल में जारी करना।
	छात्रों के लिए आवश्यक गैर-व्यावसायिक विषय प्रारम्भ कर बहु-विषयक और समग्र शिक्षा को मजबूत करना ।	गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में कला, विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान, वाणिज्य, इतिहास, विधि, शारीरिक शिक्षा आदि जैसे मौजूदा विभागों से योग, ध्यान, भारतीय संस्कृति, विरासत और जीवन शैली आदि जैसे मुक्त विकल्प के रूप में नए पाठ्यक्रम शुरू करने की संभावनाएं तलाशना।
	सभी विषयों और पाठ्यक्रमों में पाठ्यचर्या के साथ सह-पाठयक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों को प्रोत्साहित करना।	सभी विषयों और कार्यक्रमों में पाठ्यचर्या के साथ सह-पाठयक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों को एकीकृत करने के लिए नीति विकसित करना।
	स्नातक/स्नातकोत्तर छात्रों के लिए अंतरविषयक परियोजना/अनुसंधान कार्य को बढ़ावा देने के लिए एक प्रणाली विकसित करना।	अन्य विद्यापीठ/विभाग के स्नातक छात्रों को प्रोजेक्ट टीम के सदस्यों के रूप में उनके प्रोजेक्ट में भाग लेने के लिए अध्यादेश/योजना में प्रावधान करना। पीजी छात्रों के लिए पर्यवेक्षक के रूप में कार्य करने के लिए अन्य स्कूल/ विभाग संकाय को समायोजित करने के लिए अध्यादेश/ योजना में प्रावधान करना।
	बहु-विषयक और समग्र शिक्षा पर छात्रों के बीच रुचि पैदा करने के लिएबहु-विषयक क्लबों की शुरुआत।	सोसाइटी ऑफ ऑटोमोटिव इंजीनियर्स, इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स, इंडियन सोसाइटी फॉर टेक्निकल एजुकेशन, आईईईई, रिन्यूएबल एनर्जी क्लब, आदि जैसे बहु-विषयक प्रकृति में विभिन्न तकनीकी क्लब / छात्र इकाई बनाएं। इन निकायों के माध्यम से छात्रों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विभिन्न तकनीकी कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करना।
	उद्योग-आधारित पाठ्यक्रमों को मुक्त ऐच्छिक विषय के रूप में प्रस्तुत करना।	पाठ्यक्रमों से संबंधित पास के /राज्य स्तर/राष्ट्रीय स्तर के उद्योगों की उपलब्धता की पहचान करना। सेमिनार, वेबिनार, प्रशिक्षण आदि के आयोजन के माध्यम से उद्योगों के साथ लाभप्रद सम्पर्क स्थापित करना। उद्योग आधारित पाठ्यक्रम विकसित करना जिन्हें उद्योग विशेषज्ञों द्वारा पढ़ाया जाना है।

मध्यम अवधि (2-5 वर्ष) नीति एवं लक्ष्य

क्र. सं.	मध्यम अवधि के लक्ष्य/उद्देश्य	लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कार्यप्रणाली/कार्यान्वयन नीति
	प्रारंभिक चरण में विकसित नीतियों के आधार पर नए बहु-विषयक कार्यक्रमों का कार्यान्वयन और परिचय।	पूर्व छात्रों, उद्योग व्यसायियों और शेयर धारकों से प्रतिपुष्टि के माध्यम से हाल के प्रौद्योगिकी विकास और औद्योगिक जरूरतों की पहचान। उद्योगों और अनुसंधान क्षेत्रों की आवश्यकता के अनुसार, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में शुरू करने के लिए बायोमेडिकल इंजीनियरिंग, एनर्जी इंजीनियरिंग, मेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग, नैनो इंजीनियरिंग, माइनिंग इंजीनियरिंग आदि जैसे नए बहु-विषयक पाठ्यक्रमों को चिन्हित किया जा सकता है।
	समकालीन प्रासंगिक कार्यक्रमों और भारतीय मूल्य प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए नए विभागों की शुरूआत।	योग और ध्यान विभाग, भारतीय विद्या और समग्र स्वास्थ्य जैसे समकालीन प्रासंगिक कार्यक्रमों के लिए नए विभागों की स्थापना।
	बहु-विषयक और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने वाले मुक्त ऐच्छिक/सामान्य ऐच्छिक के अंतर्गत पाठ्यक्रमों की संख्या का विस्तार करना।	नए स्थापित विभागों के माध्यम से अतिरिक्त पाठ्यक्रमों की पेशकश की जा सकती है, बशर्ते पर्याप्त संसाधन और बुनियादी ढांचा उपलब्ध हो।
	बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान के लिए उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना।	राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक उद्योगों और अनुसंधान उद्योगों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करना। फंडिंग एजेंसियों, उद्योगों और प्रमुख शोध संस्थानों के सहयोग से उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना।

दीर्घकालिक (5-10 साल) नीति एवं लक्ष्य

विश्वविद्यालय में एक सहज और जीवंत शैक्षणिक वातावरण के लिए एक सक्षम परिवेश बनाना प्रस्तावित है जो बहु-विषयक शिक्षा और अनुसंधान सुनिश्चित करता है।

क्र.सं.	दीर्घकालिक लक्ष्य/उद्देश्य	लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कार्य विधि /कार्यान्वयन नीति
1.	दीर्घावधि में विश्वविद्यालय भारतीय दर्शन, शिक्षा और मूल्य प्रणालियों में सीखने और अनुसंधान के लिए एक अग्रणी और सक्रिय केंद्र बनने की परिकल्पना करता है, जो छात्रों, शोधकर्ताओं और अन्य हितधारकों के समग्र विकास को सुनिश्चित करता है।	अल्पकालिक और दीर्घकालिक लक्ष्यों/उद्देश्यों के सफल कार्यान्वयन से दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।
2.	गुरु घासीदास विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न बहु-विषयक संस्थानों के केंद्र के रूप में बनाना	

व्यावसायिक एवं तकनीकी कार्यक्रम में खुले–ऐच्छिक पाठ्यक्रमों की सूची

क्र.सं.	विभाग	खुले वैकल्पिक विषय
1.	CSE	1. डेटा संरचना और एल्गोरिथम 2.आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस
2.	IPE	1. प्रबंधन के सिद्धांत 2. ऑपरेशन रिसर्च
3.	CHEM	1. ऊर्जा के लिए अपशिष्ट 2. केमिकल इंजीनियरिंग की मूल बातें
4.	CIVIL	1. सिविल इंजीनियरिंग अभ्यास 2. टिकाऊ संकुचनशील सामग्री और प्रबंधन 3. हरित निर्माण सामग्री और प्रौद्योगिकी
5.	ECE	1. बुनियादी इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार प्रणाली 2. इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी)

		3. चित्र और वीडियो प्रसंस्करण के मूल सिद्धांत
6.	MECH	1. नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत 2. उत्पाद डिजाइन और विकास 3. रोबोटिक्स का परिचय
7.	IT	1. साइबर सुरक्षा 2. सूचना प्रौद्योगिकी का परिचय
8.	Pharmacy	1.पेटेंट और बौद्धिक संपदा अधिकार 2. एथनो-मेडिसिन और हर्बल टेक्नोलॉजी
9.	CSIT	1. सी/सी++ में प्रोग्रामिंग 2. सी/सी++/पायथन/जावा का उपयोग कर डेटा संरचना 3. आरडीबीएमएस 4. सूचना प्रौद्योगिकी का परिचय 5. लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम 6. सॉफ्ट कंप्यूटिंग
10.	MBA	भारतीय वित्तीय प्रणाली तनाव प्रबंधन डिजिटल विपणन

II. उच्च शिक्षा में सहभागिता, समावेशन और संभावनाएं

रणनीतियाँ और कार्य योजना

Committee

1.	Prof. Anupama Saxena	Chairman
2.	Prof. D.N. Singh	Member
3.	Dr. Anurag Chouhan	Member
4.	Dr. Gopa Bagchi	Member
5.	Dr. Ghanshyam Dubey	Member

शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ. ग.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: उच्च शिक्षा में कार्यान्वयन रणनीति
National Education Policy 2020: Implementation Strategy in Higher Education
के शुभ अवसर पर आप सादर आमंत्रित हैं।
कार्यक्रम के मुख्य अतिथि
श्री अतुल कोठारी
राष्ट्रीय महामंत्री, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास , नई दिल्ली
कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि
श्री अशोक कड़ेल
संचालक, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी , भोपाल
कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि
श्री ओम प्रकाश शर्मा
क्षेत्रीय संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, भोपाल होंगे
एवं
अध्यक्षता
प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल
कुलपति, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग .) करेंगे।

कार्यक्रम स्थल: रजत जयंती सभागार
तिथि: 17 सितम्बर, शुक्रवार, 2021
समय : 09:15 (प्रात:)

कुलसचिव

(कृपया निर्धारित समय से 15 मिनट पूर्व कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए अपना स्थान ग्रहण करने का कष्ट करें।)

उच्च शिक्षा में सहभागिता , समावेशन और संभावनाएं

संबंधित समिति ने अपने कामकाज में समानता, पहुंच और समावेश के लिए विश्वविद्यालय द्वारा उठाए जा सकने वाले कदमों को तय किया। समिति की औपचारिक रूप से दो बार और कई अन्य अवसरों पर अनौपचारिक रूप से बैठक हुई । समिति ने नई शिक्षा नीति दस्तावेज और एआईयू दस्तावेज से अपने दिशा-निर्देश लिए। संबंधित मामलों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया और विषय से संबंधित क्षेत्रों की पहचान की गई और मापदण्डों को अपनाया गया और विश्वविद्यालय की संबंधित इकाइयों/ कर्मियों को उचित कदम उठाने और समय सीमा तय की गई, जो निम्नानुसार है:

1. विविधता , समानता , पहुंच और समावेश सुनिश्चित करने के लिए संस्थागत तंत्र की स्थापना

समिति की सिफारिश है कि परिसर में विविधता, समानता, पहुंच और समावेश सुनिश्चित करने के लिए निरंतर विश्लेषण, निगरानी और उचित सुझाव देने के लिए एक प्रकोष्ठ की स्थापना की जानी चाहिए । यह प्रस्तावित है कि प्रकोष्ठ का अध्यक्ष सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग से होना चाहिए और 50% से अधिक सदस्य इसी वर्ग से होने चाहिए। इसके पीछे तर्क यह है कि सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की आबादी लगभग 70% है लेकिन उनका प्रतिनिधित्व काफी कम है।

2. विकलांगों और महिलाओं के लिए समावेशी अधोसंरचना

उपयुक्त उपायों में सड़क पर दिशात्मक संकेत स्थापित करना और ब्रेल में संकेत शामिल होंगे। अन्य आवश्यकताओं में माताओं के लिए शिशु सदन सुविधाएं, शौचालय सहित बाधा मुक्त (बैरियर फ्री) भवन और विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर सामान्य प्रसाधन केंद्र की है।

3. समावेशी शैक्षणिक उन्नति को बढ़ावा देना

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी और हिंदी माध्यम के छात्रों के लिए सेतु पाठ्यक्रम की आवश्यकता होगी और विश्वविद्यालय प्रशासन उसके लिए आवश्यक कदम उठा सकता है। अकादमिक क्षेत्र के कुछ अन्य मामलों में ब्रेल भाषा में मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम, लैंगिक समानता और संवैधानिक अधिकार, मानवाधिकार आदि पर पाठ्यक्रम शामिल हैं। यूजीसी के मानदंडों के अनुसार प्रत्येक विभाग में शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करके विश्वविद्यालय की परामर्श प्रणाली को मजबूत करना, मौजूदा पाठ्यक्रमों की रोजगार क्षमता में वृद्धि करना और यह सुनिश्चित करना कि कक्ष सहभागिता द्वारा नियोजक विशेषताओं को समान रुप से वितरित किया जाता है और संबंधित विभागों और विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा उचित रणनीति तैयार की जानी चाहिए। एक और लक्ष्य, कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम विकसित करना और ऐसे पाठ्यक्रमों तक सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की समान पहुंच सुनिश्चित करना है । इस पाठ्यक्रम को कौशल विकास प्रकोष्ठ के पर्यवेक्षण में रखा जाना चाहिए। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के प्रयोग को बढ़ावा

देना चाहिए। आजीवन सीखने को बढ़ावा देने के लिए लचीला बहु प्रविष्टि और बहु निर्गत विकल्प। दिव्यांग छात्रों के लिए विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को सुलभ बनाना और सॉफ्टवेयर की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

4. समावेशी शिक्षाशास्त्र का अभ्यास

इसे प्राप्त करने के लिए विभिन्न सामाजिक समूहों के छात्रों सहित समूह अध्ययन को शिक्षण पद्धति के रूप में शामिल करने की आवश्यकता होगी। अधिष्ठाताओं और विभागाध्यक्षों को सत्र के दौरान आवश्यक प्रावधान करने और इसे व्यवहार में लाने की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, एक शिक्षाशास्त्र अध्ययन केंद्र भी स्थापित किया जा सकता है।

5. समावेशी परिसर

सामुदायिक भावना लाने का एक सुझाव है कि छात्रावासों में कमरे का आवंटन इस तरह से किया जाएगा ताकि सामाजिक समावेश सुनिश्चित हो सके और मुख्य छात्रावास अधीक्षक इसे सुनिश्चित कर सकें। खेल और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ,जो समावेशिता को बढ़ावा देते हैं। एक और सुझाया गया कदम यह होगा कि छात्रों को सहज महसूस कराने और विश्वविद्यालय के माहौल के अनुकूल होने के लिए 'दीक्षारंभ' जैसा तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया जाए। यह और इस तरह के अन्य आयोजन स्कूलों और कॉलेजों को विश्वविद्यालय से जोड़ने के लिए एक मंच बनाने में मदद करेंगे।

6. सभी को एक सुरक्षित परिसर प्रदान करना

विश्वविद्यालय के छात्रों और कर्मचारियों की सुरक्षा सर्वोपरि है। समिति द्वारा सुझाए गए उपायों में विशेष रूप से महिलाओं के रहने और आने-जाने के क्षेत्रों में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था प्रदान करना शामिल है (इंजीनियरिंग अनुभाग को इस पर काम करना है); 24/7 सहायता के लिए गश्ती दल और, आवश्यकता पड़ने पर महिलाओं की रक्षा करना (विश्वविद्यालय सुरक्षा अनुभाग को इस पर काम करना है); शिकायत निवारण प्रकोष्ठ को मजबूत करना और इसके कामकाज के बारे में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग सहित सभी से वार्षिक प्रतिपुष्टि; और उन परिसरके उन स्थानों को चिन्हित करने के लिए सुरक्षा ऑडिट किया जा सकता है, जो महिलाओं और छात्राओं के लिए असुरक्षित हैं (इस पर काम करने के लिए नोडल अधिकारी, लिंग चैंपियन योजना)। विशेष रूप से रेलवे स्टेशन को जोड़ते हुए छात्रों के लिए परिसर में आने-जाने के लिए बसों की संख्या में वृद्धि। आपातकालीन नंबरों के साथ एक एकीकृत विश्वविद्यालय सुरक्षा प्रणाली का भी सुझाव दिया गया है। रैगिंग विरोधी, उत्पीड़न विरोधी उपायों का सख्ती से क्रियान्वयन।

7. बाधा मुक्त परिसर

इसे प्राप्त करने के लिए, कि परिसर के भीतर आने-जाने के लिए दिव्यांगों और अन्य लोगों के लिए बैटरी से चलने वाले रिक्शा अनुशंसा की जाती है । इसके लिए अधिष्ठाता, छात्र कल्याण द्वारा आवश्यक कदम उठाए जाने की उम्मीद है।

8. समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियाँ

समावेशी परिसर में विभागों को सह- पाठ्येतर और पाठ्येतर गतिविधियों सहित सभी विभागीय गतिविधियों में नेतृत्व की भूमिका, प्रतिनिधित्व और भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। परिसर में विभिन्न अनौपचारिक समूहों/मंचों का निर्माण करना।

9. जरूरतमंदों को वित्तीय और अन्य सहायता

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कई कदमों की आवश्यकता है जिसमें गरीब छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की संख्या बढ़ाना, मुफ्त भोजन कूपन, मुफ्त डेटा कार्ड और मुफ्त परिवहन कूपन और जरूरतमंद छात्रों को मुफ्त किताबें और स्टेशनरी, और स्थानीय बैंकों और अन्य फंडिंग एजेंसियों के साथ सहयोग करना शामिल है। जरूरतमंद छात्रों को मौके पर/वित्त पोषण प्रदान करें। अधिष्ठाता, छात्र कल्याण और वित्त अनुभाग से इन पर काम करने की उम्मीद है। परिसर के बाहर आसान और सुरक्षित आवासीय सुविधाओं की सुविधा के लिए स्थानीय छात्रावासों और पीजी मालिकों के साथ सहयोग करने के लिए अधिष्ठाता, छात्र कल्याण और मुख्य छात्रावास अधीक्षक को शामिल करते हुए एक समिति की स्थापना और पुस्तकालय प्रबंधन, डिजाइनिंग, टाइपिंग, ग्राफिक्स आदि में "अध्ययन सह आय " योजना का कार्यान्वयन। छात्रों के लिए अन्य उपाय हैं जिन्हें अधिष्ठाता, छात्र कल्याण की सहायता से अपनाया जा सकता है और वित्त अनुभाग भी सुझाया गया है ।

10. छात्रों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों और विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रकोष्ठों द्वारा परामर्श

विश्वविद्यालय छात्रों और सेवानिवृत्त कर्मचारियों की मदद से अपनी जनशक्ति का पर्याप्त उपयोग कर सकता है। वे सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग के समान समूह बनाने में मदद कर सकते है, अग्रणी लोगों को चिन्हांकित कर उन्हें सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग के लिए परामर्श और सहकर्मी समूह में शामिल कर सकते हैं और वरिष्ठ छात्रों को छात्रों के लिए शिक्षण सहायक/ सलाहकार के रूप में कार्य करने के लिए शामिल कर सकते हैं। अधिष्ठाता,विभागाध्यक्ष और विश्वविद्यालय प्रशासन को इसे लागू करना चाहिए। इसके अलावा,एक अन्य आवश्यकता उपचारात्मक कोचिंग प्रणाली को सुधारना और मजबूत करना है ताकि इसे और अधिक परिणामोन्मुखी बनाया जा सके और उपचारात्मक कोचिंग प्रकोष्ठ प्रभारी उपयुक्त रणनीति तैयार कर सकें।

छात्रों के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक परामर्श के लिए बने विभिन्न प्रकोष्ठों को मजबूत किया जाना चाहिए।

11. विभिन्न शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की संख्या बढ़ाना

छात्रों का विविधतापूर्ण डेटा बेस विकसित करना और शैक्षणिक क्षेत्र में उनका प्रदर्शन एक महत्वपूर्ण संबंधित विषय है। यह डेटा बेस छात्रों की गोपनीयता बनाए रखते हुए संस्थान में समावेशी नीतियों को लगातार तैयार करने में मदद करेगा। परीक्षा और अकादमिक अनुभाग योजना बना सकते हैं और इसे लागू कर सकते हैं। यह भी सुझाव दिया

जाता है कि अकादमी अनुभाग उन पाठ्यक्रमों के लिए सीटों की संख्या बढ़ाने के लिए काम करे,जहां अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,अन्य पिछड़ा वर्ग और विकलांग उम्मीदवारों की संख्या उन्हें आवंटित सीटें (विभाग को पर्याप्त सुविधाएं प्रदान करने के बाद) से अधिक है। साथ ही अकादमी अनुभाग उन पाठ्यक्रमों में महिला आवेदकों के लिए अतिरिक्त सीटें बनाने के लिए भी पहल करे,जहां वे पुरुष प्रतिद्वंद्वी के साथ प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम नहीं हैं। साथ ही, महिला अध्ययन केंद्र उन पाठ्यक्रमों में महिलाओं के लिए उन विशेष कार्यक्रमों की सुगमता का ध्यान रखेगा जहां पाठ्यक्रम की मांग अधिक है, लेकिन महिला आवेदकों की संख्या कम है।

12. विश्वविद्यालय समुदाय का संवेदीकरण

माता-पिता, शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों के लिए लगातार लिंग संवेदीकरण कार्यशालाओं का आयोजन करना एक महत्वपूर्ण कदम होगा, जिसका आयोजन लिंग संवेदीकरण प्रकोष्ठ और नोडल अधिकारी, जेंडर चैंपियंस योजना द्वारा किया जाएगा। एक अन्य उपाय में विभाग के शिक्षक, कर्मचारियों और छात्रों के लिए विशेष संवेदीकरण सत्र शामिल है, जहां कोई भी दिव्यांग छात्र नामांकित है। इस कार्य को शिक्षा विभाग द्वारा लिया जा सकता है। इसके अलावा, शिक्षकों के लिए विविधता और समता के मुद्दे पर विशेष सत्र आयोजित करने की आवश्यकता है और इसे समाज कार्य विभाग द्वारा कराने की अनुशंसा की जाती है । यह भी अनुशंसा की जाती है कि परिसर के सभी छात्रों के लिए कम से कम एक विशेष पाठ्यक्रम अनिवार्य किया जाना चाहिए, ताकि छात्रों के साथ-साथ दौरा करने वाले समुदायों, समूहों को विविधता, समानता और विभिन्न समूहों की विशेष जरूरतों के बारे में जागरूक किया जा सके। अधिष्ठाता और विभागाध्यक्षों से इस दिशा में बेहतर सहयोग की उम्मीद है।

13. समावेशी नीति और निर्णय लेना

यह महसूस किया गया कि कि कार्यपरिषद, विद्या परिषद, भवन समिति, अनुशासन और रैगिंग विरोधी समिति, सांस्कृतिक समिति आदि जैसे सभी वैधानिक निर्णय लेने वाले निकायों में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग का प्रतिनिधित्व और नेतृत्व की भूमिका सुनिश्चित की जानी चाहिए। विश्वविद्यालय प्रशासन इसे करवा सकता है।

अल्पकालिक (<2 वर्ष) लक्ष्य

- पर्याप्त अधोसंरचना वाले मौजूदा विभागों की क्षमता में वृद्धि।
- स्नातक और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए कौशल आधारित पाठ्यक्रमों की शुरुआत।
- छात्र हितैषी संस्थागत वेबसाइट, दिव्यांगों और अन्य आगंतुकों को साइट पर आसानी से पता करने में मदद करने के लिए उपयुक्त ऑडियो/वीडियो घटकों को शामिल किया जाना चाहिए।
- खेलकूद/ मनोरंजन सुविधाओं में वृद्धि।

- सीखने के माहौल और समावेशी शिक्षाशास्त्र को जोड़ने के लिए छात्रों की चर्चा के लिए मंच/ पाठ्येतर गतिविधियों का मंच।
- छात्र के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण।
- समान अवसर प्रकोष्ठ का सुदृढ़ीकरण।
- यह सुनिश्चित करना कि सभी भवन और सुविधाएं (मौजूदा और आगामी) बाधा रहित, व्हीलचेयर-सुलभ और विकलांग-अनुकूल हैं, सड़क पर दिशात्मक संकेत स्थापित करनाऔर ब्रेल में चेतावनी संकेतक लगाना।
- माताओं के लिए पालना-घर सुविधा, फीडिंग रूम, पर्याप्त संख्या में शौचालय, विश्वविद्यालय परिसर में सामान्य प्रसाधन केंद्र की स्थापना।
- वंचित शैक्षिक पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों के लिए सेतु पाठ्यक्रम विकसित करना
- लिंग-पहचान के मुद्दों पर शिक्षकों, परामर्शदाता और छात्रों का संवेदीकरण और पाठ्यक्रम सहित उच्च शिक्षा संस्थान के सभी पहलुओं में लिंग संवेदनशीलता पर ध्यान केंद्रित करना।
- संवैधानिक मूल्यों और मानवाधिकारों पर पाठ्यक्रमों का परिचय।

मध्यावधि (3-5 वर्ष) लक्ष्य

- शैक्षणिक, वोकेशनल और व्यावसायिक कार्यक्रमों/पाठ्यक्रमों की संख्या में वृद्धि करना।
- समावेशी और गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करने की दिशा में पहल के लिए तकनीकी सहायता के मिश्रित मोड की सुविधा के लिए आईसीटीलैब, स्मार्ट क्लासरूम आदि की स्थापना शिक्षण, एमओओसी(MOOCs) आधारित पाठ्यक्रम का चयन करना आदि।
- विविध छात्र समूहों का सहयोग करने के लिए अधिक अनौपचारिक मंचों का निर्माण।
- पूर्व छात्रों एवं समाज की मदद से सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग को अधिक वित्तीय सहायता और छात्रवृत्ति प्रदान करना।
- सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की भागीदारी बढाने वाली संस्थागत विकास योजनाओं की समीक्षा जिसमें कार्यवाही के लिए विशिष्ट योजनाएं शामिल हैं।
- निःशक्तता अध्ययन, विविधता अध्ययन और लिंग अध्ययन पर विशेष पाठ्यक्रम और कार्यक्रमों की शुरूआत।
- सभी संकायों के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक कौशल और अनुभवात्मक शिक्षा का प्रदर्शन।
- प्रौद्योगिकी आधारित 24*7 स्मार्ट केंद्रीय सुरक्षा प्रणाली की स्थापना।

- विश्वविद्यालय में विविधता, समानता, पहुंच और अंतर्वेशन सुनिश्चित करने के लिए डेटा एकत्र करने और विश्लेषण करने के लिए प्रकोष्ठ की स्थापना करना।

दीर्घकालिक (5-10 वर्ष) लक्ष्य

- अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण आवासीय सुविधा।
- अंतरराष्ट्रीय मानक के साथ व्यावसायिक कौशल के भारतीय मानकों को संरेखित करना।
- सभी निर्णय लेने वाले निकायों में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्ग के प्रतिनिधित्व एवं नेतृत्व की भूमिकाएं सुनिश्चित करना।
- वैश्विक नौकरियों और मूल्य प्रणाली की मांग की पूर्ति हेतु उपयुक्त छात्रों के लिए सभी प्रकार के जीवन कौशल, अकादमिक कौशल, व्यावसायिक कौशल और कैरियर परामर्श/ कोचिंग प्रदान करने के लिए समान अवसर केंद्र की स्थापना। ।
- उच्च शिक्षा हेतु कम-विशेषाधिकार प्राप्त छात्रों के लिए फंड जुटाने/ प्रायोजन की व्यवस्था करना।
- लैंगिक सुरक्षा अंकेक्षण और समावेश अंकेक्षण कराना।

III. समग्र और बहु-विषयक शिक्षण हेतु नमनीयता

रणनीतियाँ और कार्य योजना

Committee

1.	**Prof. B.N Tiwary**	**Chairman**
2.	Prof. V.S. Rathore	Member
3.	Dr. Abhishek Jain	Member
4.	Dr. Rohit Seth	Member
5.	Dr. Ratnesh Singh	Member
6.	Dr. Sudhir Pandey	Member

लचीली ,समग्र और बहु-विषयक शिक्षा उपलब्ध कराना

चरणबद्ध तरीके से शैक्षणिक कार्यक्रमों का पुनर्गठन

अ. 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम / 5 वर्षीय एकीकृत स्नातक/स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना।

ब. एलओसीएफ को पाठ्यक्रम में शामिल करना।

स. विभिन्नस्तरों–बीओएस, अकादमिक परिषदोंऔरअन्य वैधानिक निकायों से अनुमोदन लेना।

एकाधिक प्रवेश/निर्गमन

अ. प्रथम चरण में B.Pham और B.Tech कार्यक्रमों के लिए एकाधिक प्रवेश/निर्गत विकल्प प्रस्तुत करना।

ब. बाद में, अन्य स्नातक कार्यक्रम ,व्यावसायिक और सामान्य शिक्षा कार्यक्रम में भी एकाधिक प्रवेश/निकास विकल्प प्रदान किए जा सकते हैं।

क्रेडिट आधारित प्रणाली – एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) :

यूजीसी की एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) की स्थापना और संचालन योजना को अंगीकृत करना। प्राप्त दिशा निर्देश/अधिसूचना के अनुसार चरणबद्ध तरीके से विश्वविद्यालय में एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स पर यूजीसी विनियमों को क्रियान्वित किया जा रहा है।

विषयवार प्रचलित वर्गों की समाप्ति

अ. बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाना।

ब. व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ जोड़ना।

स. विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी एवं प्रबंधन (एसटीईएम) के साथ कला, सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य का एकीकरण।

द. कौशल के साथ मूल्यों का एकीकरण।

ई. व्यावसायिक और जीवन कौशल को एकीकृत करना।पारंपरिक शिक्षा शास्त्र को आधुनिक और रचनात्मक शैक्षणिक नीति को मिश्रित मोड के साथ एकीकृत करना।

फ. छत्तीसगढ़ के पारंपरिक ज्ञान (जहां लागू हो) को आधुनिक ज्ञान के साथ एकीकृत करना।

बहुआयामी शिक्षा और अनुसंधान

अ. पहले चरण में बहु–विषयक प्रकृति के चयनित वैकल्पिक पाठ्यक्रमों की परिचय और फिर चरणबद्ध तरीके से पाठ्यक्रमों की संख्या बढ़ाना। शिक्षा, योग, स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती, व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन, पर्यावरण विज्ञान, छत्तीसगढ़ की कला और संस्कृति, नृत्य, संगीत, नाटक आदि पाठ्यक्रम मूल्य पर आधारित होंगे।

ब. उद्योगों/कंपनियों/शिल्प कौशल में इंटर्नशिप करने का अवसर प्रदान करना आदि।

स. विश्वविद्यालय और उद्योग के बीच सेतु के रूप में कार्य करने के लिए बहुविषयक अनुसंधान केंद्र की स्थापना।

द. विश्वविद्यालय (अंतरा और अंतर विद्यापीठ) में बहु–विषयक अनुसंधान प्रारम्भ करना ।

प्रयोजन/लक्ष्य निर्धारित करना

I- लघु अवधि (एक वर्ष के भीतर)

- पाठ्यचर्या सुधारों के लिए विश्वविद्यालय के रोड मैप को चरणबद्ध तरीके से अंतिम रूप देना, बहु–विषयक और समग्र शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना (घटनाक्रम के साथ)।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप पाठ्यचर्या सुधारों पर विश्वविद्यालय स्तर पर चर्चा।
- लचीले विकल्पों की सुविधा के लिए पाठ्यचर्या में संशोधन शुरू करना।
- वैश्विक नागरिकता शिक्षा के अनुरूप पाठ्यक्रम मे संशोधन।
- सुसंगत भारतीय पारंपरिक ज्ञान और शास्त्रीय ग्रंथों से मूल्यों को शामिल करना जैसे भगवदगीता, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, चरक–संहिता, पतंजलि योग सूत्र और समृद्ध भारतीय परंपराओं की आवश्यक समझ प्रदान करने के लिए अन्य मौलिक ग्रंथ।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए परिणाम–आधारित पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना ।
- बहु-विषयक प्रकृति के खुले/सामान्य ऐच्छिक पाठ्यक्रमों की डिजाइनिंग/शुरूआत(प्रत्येकविभाग/विद्यापीठ से कम से कम एक में)।
- विश्वविद्यालय और उद्योग के बीच सेतु के रूप में कार्य करने के लिए बहुविषयक अनुसंधान केंद्र की स्थापना।
- छात्रों को पीएचडी के लिए उनके मूल विषयों के अलावा अन्य विषयों में पंजीकरण करने के लिएअनुमति देकर **पार–विषयक** और अंतरविषयक अनुसंधान की संस्कृति को बढ़ावा देना।
- रोगों से लड़ने, पर्यावरण संरक्षण, जल कटाई, अपशिष्ट प्रबंधन, भारतीय परिवार प्रणाली, स्वास्थ्य और कल्याण, त्योहार और अन्य प्रासंगिक क्षेत्र के क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा देना।

- संस्कृत, संगीत, दर्शन, योग,ललित कला, अनुवाद और व्याख्या और तुलनात्मक साहित्य जैसे अध्ययन विभाग प्रारम्भ करना।
- NAAC में A ग्रेड प्राप्त करने की ओर अग्रसर है।

मध्यावधि (3-4 वर्ष)

- सामान्य और व्यावसायिक पाठ्यक्रम में एकीकृत स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम (4 वर्षीय B.A B.Ed./BSc B.Ed./ B.P.Ed.)
- अतिरिक्त क्रेडिट के साथ समुदाय-आधारित पाठ्यक्रमों की शृंखला का विस्तार करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के नए अभिविन्यास और नीति के जोर को ध्यान में रखते हुए विभागों और विद्यापीठों का पुनर्गठन।
- क्रेडिट स्थानांतरण के लिए देश में विश्वविद्यालयोंऔरउच्चशिक्षा के संस्थानों को चिन्हितकरना।
- बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान केंद्र की स्थापना।
- समसामयिक प्रासंगिकता के कार्यक्रमों के लिए नए विभाग जैसेआर्टिफिशियलइंटेलिजेंस, डिजाइन थिंकिंग, समग्र स्वास्थ्य, जैविक जीवन, पर्यावरण शिक्षा, वैश्विक नागरिकता, वैदिक अध्ययन आदि प्रारम्भ करना।

दीर्घ अवधि (5-10 वर्ष)

- सभी विषयों में एकीकृत स्नातक, स्नातकोत्तरऔरअनुसंधान कार्यक्रम।
- बहु-विषयक कार्यक्रम संचालित करने के लिए अतिरिक्त विभाग प्रारम्भ करना।
- स्थानीय कलाकारों,उद्यमी आदि के सहयोग से विशेष समुदाय आधारित व्यावसायिक कार्यक्रम।
- सहयोगात्मक शैक्षणिक और अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय/ अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 में अभिकल्पित अन्य लक्ष्यों का क्रियान्वयन।

IV. संकायेतर सदस्यों का आदान-प्रदान और नवाचार की भूमिका

रणनीतियाँ और कार्य योजना

Committee

1.	**Prof. A.S. Ranadive**	**Chairman**
2.	Dr. C.S. Vazalwar	Member
3.	Dr. Sanjit Sardar	Member
4.	Dr. Arun Kumar Singh	Member
5.	Dr. Seema Rai	Member
6.	Dr. Vivekanand Mandal	Member
7.	Dr. Sambit Padhi	Member
8.	Dr. Payel Banerjee	Member

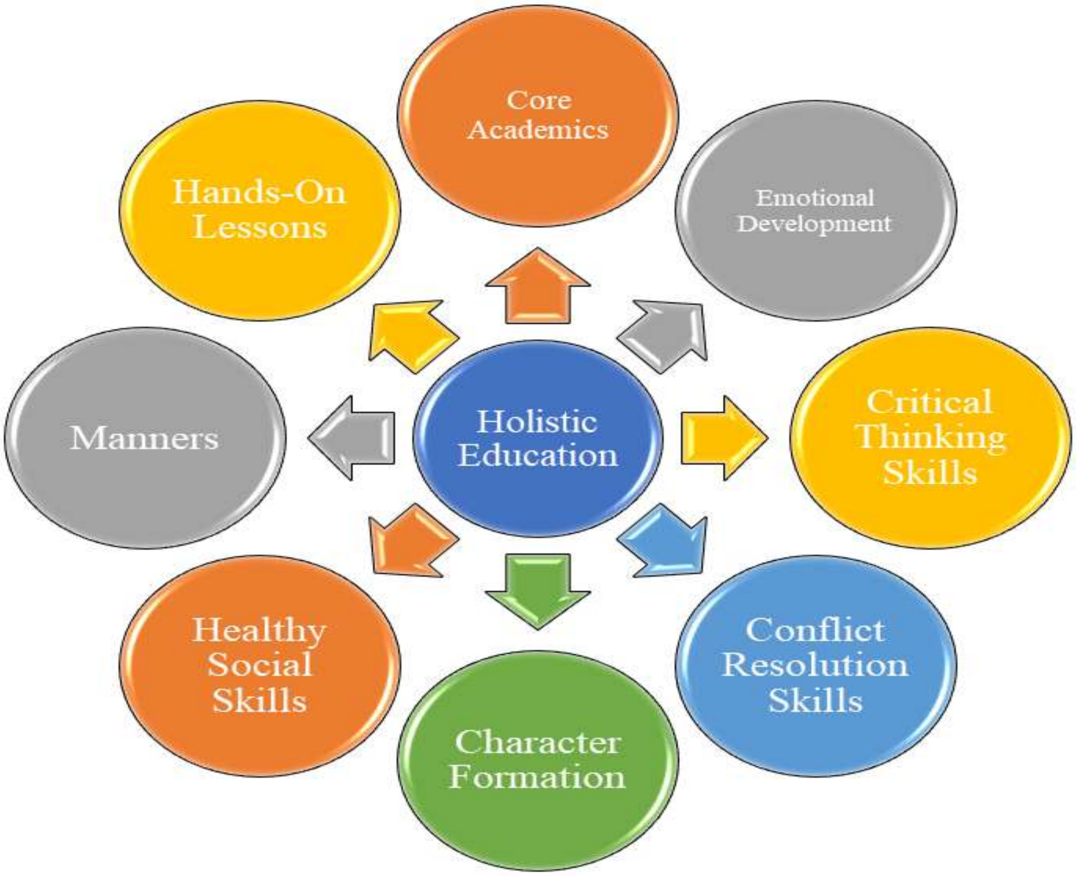

IV शिक्षक का रूपांतरण और नवाचारी शिक्षक के रूप में उनकी भूमिका की समीक्षा

1.	प्रो. एएस रणदिवे	अध्यक्ष
2.	डॉ. सीएस वझलवार	सदस्य
3.	डॉ. संजीत सरदार	सदस्य
4.	डॉ अरुण कुमार सिंह	सदस्य
5.	डॉ. सीमा राय	सदस्य
6.	डॉ विवेकानंद मंडल	सदस्य

शिक्षक का रूपांतरण और नवाचारी शिक्षक के रूप में उनकी भूमिका की समीक्षा के लिए

रणनीतियाँ एवं कार्य योजना

आयाम	विषय	कार्य योजना
		अल्पकालिक रणनीतियाँ
सशक्तिकरण	पाठ्यक्रम प्रारूप	इन विषयों पर कार्यशालाओं का आयोजन - पाठ्यचर्या प्रारूप विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम डिजाइन बहुआयामी पाठ्यक्रम - संज्ञानात्मक, भावात्मक, न्यूरोमोटर , मेटाकॉग्निटिव पहलुओं को एकीकृत करना परिणाम आधारित डिजाइनिंग अन्य पाठ्यचर्या आयामों की खोज (रोजगार, सामाजिक, व्यवहार, मूल्य, अंतरविषयात्मक आदि)
	शिक्षण प्राविधि	इन विषयों पर कार्यशालाओं का आयोजन - शिक्षाशास्त्र और प्रौढ़ शिक्षा पद्धति की संकल्पना विभिन्न शिक्षार्थी केंद्रित अभिनव दृष्टिकोण (जैसे परामर्श, टीम शिक्षण, परियोजना पद्धति, फ़्लिप कक्षा, आदि) प्रौद्योगिकी, शिक्षाशास्त्र और सामग्री ज्ञान (TPACK) एकीकरण
	मूल्यांकन	इन विषयों पर कार्यशालाओं का आयोजन - मूल्यांकन की विभिन्न विधियाँ एवं रीति गुणवत्ता मूल्यांकन उपकरण विकसित करना शैक्षिक एवं गैर-शैक्षिक विधियों को जोड़ना प्रौद्योगिकी-एकीकृत मूल्यांकन रचनात्मक एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए शिक्षकों को सशक्त बनाने उपयुक्त रणनीति तैयार करना व अपनाना
नवाचार	विश्वविद्यालय स्तर पर नीति	शिक्षकों को आईसीटी-युक्त शिक्षण-अधिगम अध्यापन के साथ मजबूत और सशक्त बनाने तथा नवीन व नवाचारी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या के विकास के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम विश्व स्तर पर प्रशंसित सभी प्रमुख वैज्ञानिक डेटाबेस की उपलब्धता के साथ पूर्ण पुस्तकालय स्वचालन।

		प्रत्येक परियोजना के लिए उपलब्ध बजट/अनुदान का उपयोग करने के लिए शिक्षकों/परियोजना निदेशक/परियोजना अन्वेषक को स्वायत्तता । अनुसंधान परियोजनाओं और कागज मुक्त कार्य (सॉफ्टवेयर ऑटोमेशन प्रणाली का उपयोग करके) के लिए फास्ट ट्रैक वित्तीय अनुमोदन।
प्रेरणा (बाह्य व आंतरिक)	शिक्षकों के सामर्थ्य को स्वीकार करके	प्रत्येक शिक्षक को उनके सामर्थ्य और विभाग/विश्वविद्यालय में अद्वितीय योगदान के लिए वार्षिक प्रशंसा उपयुक्त पुरस्कारों, सम्मानों, अकादमिक प्रशासन के संचलन के माध्यम से प्रत्येक स्तर के शिक्षक को प्रोत्साहित करना। अनुकूल संगठनात्मक माहौल/पर्यावरण को बनाए रखने के लिए प्रशासन, अधिकारियों और शिक्षकों को संगठनात्मक व्यवहार, और आंतरिक प्रेरणा को बढ़ावा देने की प्रणाली पर प्रशिक्षण देना सुधार के लाभ व संभावनाओं का पता लगाने के लिए छात्रों, उनके मित्रों और प्राधिकरण से फीडबैक का एकीकृत दृष्टिकोण लेना
	शिक्षण–अधिगम के लिए	सभी शिक्षकों को आईटी-टूलकिट (कंप्यूटर, वेब-कैम, प्रिंटर सहित) और कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा के रूप में बुनियादी ढांचागत सहायता।
	अनुसंधान के लिए	अनुसंधान परियोजनाओं और परामर्श को बढ़ावा देने के लिए पृथक अनुसंधान कक्ष / नोडल कार्यालय अनुसंधान के लिए आसान प्रशासनिक सहायता प्रदान करने के लिए नीति तैयार करना शिक्षकों को आंतरिक अनुसंधान आकस्मिक अनुदान आवंटित किया जा सकता है अनुसंधान परामर्श सेवाओं के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित करना, और शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता और दृश्यता में सुधार करना
	व्यक्तिगत	शिक्षकों की भर्ती/नियुक्ति और उनकी सेवा शर्तों के लिए सुपरिभाषित नीति। कैरियर उन्नयन योजना (सीएएस) के तहत समय पर पदोन्नति अतिरिक्त जिम्मेदारियों और मूल्यांकन को महत्त्व देना और प्रोत्साहित करना नागरिक चार्टर का समय पर कार्यान्वयन
मध्यावधि रणनीतियाँ		
सशक्तिकरण	शिक्षण प्रविधि	नियमित आवश्यकता आधारित सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के लिए नीति प्रत्येक विभाग के लिए प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण-अधिगम

		वातावरण सुनिश्चित करना बहुभाषी शिक्षण दक्षता पर कार्यशालाओं का आयोजन करना
	मूल्यांकन	नीति बनाने के लिए- विभिन्न मूल्यांकन विधियों और अभ्यास को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए
नवाचार	विश्वविद्यालय स्तर पर नीति	विज्ञान प्रयोगशालाओं के लिए, विशेष रूप से रसायन-आधारित प्रयोगशालाएं जो संक्षारक रसायनों और अम्ल के साथ काम करने के कारण क्षतिग्रस्त होने की अधिक संभावना है, उचित नवीनीकरण और वार्षिक रखरखाव बजट परिचालन रूप से परिभाषित नवाचार संकेतक पाठ्यचर्या, शिक्षाशास्त्र, मूल्यांकन, अनुसंधान, व्यावसायिक सेवाओं के संबंध में शिक्षकों के बीच जागरूकता प्रदान करना कार्यभार, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन नीतियों और व्यावसायिक मानकों को परिभाषित करने में नवीन दृष्टिकोणों को कैसे एकीकृत किया जाए, इस पर नीति तैयार करना शिक्षकों को नवीन दृष्टिकोण अपनाने, व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करने, और अनुमोदित ढांचे के भीतर अपने स्वयं के पाठ्यक्रम (समानांतर या स्वतंत्र) को डिजाइन करने और अपने स्वयं के शैक्षणिक दृष्टिकोण तय करने के लिए सम्भावना और स्वतंत्रता प्रदान करने की नीति। उपयुक्त संस्थागत तंत्र तैयार करके प्रत्येक शिक्षक को प्रायोजित अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक और अनुसंधान एक्सपोजर प्रदान करने की नीति। प्रोत्साहन, प्रचार और मान्यता के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन और अनुसंधान के लिए शिक्षक को प्रेरित करने की नीति । इच्छुक और चिन्हित शिक्षक को व्यावसायिक विकास, शैक्षिक प्रबंधन और नेतृत्व कौशल के लिए अवसर दिया जा सकता है। आदर्श छात्र-शिक्षक अनुपात, छात्रों के साथ संवाद के लिए पर्याप्त समय, शोध और अन्य सेवाओं के लिए पर्याप्त समय प्रदान करना। छात्र-शिक्षक अनुपात बनाए रखने और बहु-विषयक शिक्षा की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विविध पृष्ठभूमि से अधिक शिक्षकों की नियुक्ति अध्यापन के साथ अनुसंधान को एकीकृत करने के लिए शिक्षकों को बढ़ावा देना
प्रेरणा (बाहरी और आंतरिक)	शिक्षण–अधिगम के लिए	शिक्षकों को नवोन्मेषी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहन, स्वतंत्रता और लचीलापन प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय/विभाग स्तर की नीति तैयार करना

		पाठ्यक्रम डिजाइनिंग, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन के लिए शिक्षकों को स्वायत्तता गुणवत्तापूर्ण शिक्षण-अधिगम और अनुसंधान के लिए शिक्षकों के सर्वोत्तम उपयोग के लिए- प्रत्येक विभाग को उनकी छात्र संख्या के अनुपात में अच्छी तरह से प्रशिक्षित गैर-शैक्षणिक कर्मचारी (सहायक और तकनीकी कर्मचारी) प्रदान करना शिक्षकों पर गैर– शैक्षणिक भार कम करने के लिए नीति का सख्ती से क्रियान्वयन गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों को उनकी उपयुक्त कार्य भूमिका के लिए सशक्त बनाना कार्यालय कौशल पर गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों को समय-समय पर प्रशिक्षण देना
	अनुसंधान के लिए	उच्च प्रभाव अनुसंधान योगदान के साथ जोड़ने वाली फास्ट ट्रैक प्रचार प्रणाली प्रतिबद्ध जनशक्ति और नवीनतम उपकरणों के साथ संचालित होने वाली केंद्रीय इंस्ट्रुमेंटेशन सुविधा। व्यक्तिगत शिक्षकों या समूह के लिए प्रारंभिक धन राशि उपलब्ध कराना अध्ययन के विभिन्न विषयों के लिए अनुसंधान आवश्यकताओं और गुणवत्ता संकेतकों की पहचान करना जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से अंतर-विषयक अनुसंधान को सुदृढ़ बनाना एक लचीला अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए नीति विकसित करना विभिन्न विषयों में वित्त पोषण के लिए महत्वपूर्ण अनुसंधान क्षेत्रों को प्राथमिकता देना
	व्यक्तिगत	स्वस्थ, लचीला और मुक्त वातावरण व्यक्तित्व वृद्धि के लिए प्रेरक कार्यक्रम (जैसे योग, ध्यान कार्यक्रम, आध्यात्मिक वार्ता आदि) आयोजित करना शिक्षकों के लिए मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन शिक्षकों के बच्चों और बुजुर्ग पारिवारिक सदस्यों के लिए सहायता प्रणाली विकसित करना
	शिक्षकों के सामर्थ्य को स्वीकार करके	प्रत्येक शिक्षक की अद्वितीय क्षमता और सामर्थ्य की पहचान करना शिक्षकों को योग्यता के आधार पर प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए नीति तैयार करना

		शिक्षक की व्यक्तिगत अद्वितीय क्षमता और सामर्थ्य का आकलन करने में मदद के लिए अभिलेख तैयार करने के लिए व्यापक डिजिटल रिपोजिटरी (सीडीआर) का प्रारूपण एवं संचालन।

V. तकनीकी क्षमता के विकास हेतु शिक्षण की मिश्रित पद्धतियाँ और क्षमता निर्माण

रणनीतियाँ और कार्य योजना

Committee

1.	Prof. S.C. Shrivastava	Chairman
2.	Dr. Charu Arora	Member
3.	Dr. Alok Kushwaha	Member
4.	Dr. Rohit Raja	Member
5.	Dr. Pushplata Pujari	Member

प्रोद्योगिकी सक्षम अधिगम एवं शिक्षण की मिश्रित पद्धतियाँ के लिए क्षमता निर्माण के लिए रणनीतियाँ एवं कार्य योजना

पारंपरिक कक्षा मॉडल से वर्तमान ऑनलाइन और मिश्रित मॉडल में शिक्षण और सीखने में काफी परिवर्तन आया है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों में विकास ऐसे परिवर्तन की कुंजी है। मुक्त शैक्षिक संसाधन नीति और कार्यान्वयन सहित शिक्षा नीति के विकास में आईसीटी,; प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षण (टीईएल) और मिश्रित शिक्षण अभ्यास, मूक (MOOC) पाठ्यक्रम; शैक्षिक संस्थानों में व्यवस्थित प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षण (टीईएल) कार्यान्वयन; और उन्नत आईसीटी कौशल विकास। प्रौद्योगिकी–सक्षम शिक्षा: नीति, शिक्षाशास्त्र और ज्यादातर पिछले पांच वर्षों में विभिन्न टीईएल परियोजनाओं पर आधारित अभ्यास है, जो महत्वपूर्ण शोध परिप्रेक्ष्य से टीईएल के विविध अनुभव प्रस्तुत करता है, जो सिखाता है कि इसे कहीं और विस्तारित किया जा सकता है।

मिश्रित शिक्षा, ज्ञान विस्फोट की समस्या को हल करने में मदद करने के सबसे आधुनिक तरीकों में से एक है, जो शिक्षा की बढ़ती मांग और दूरस्थ शिक्षा में उपयोग करने पर व्याख्यान में भीड़ की समस्या, शिक्षा में स्वीकृति के अवसरों का विस्तार, प्रशिक्षित, शिक्षित और पुनर्वास करने में सक्षम बनाना होता है।

अल्पकालिक लक्ष्य

- “दीक्षा”(DIKSHA)/ “स्वयं” (SWAYAM) जैसे प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा मंचों का इष्टतम उपयोग।
- शैक्षिक प्रक्रियाओं और परिणामों में सुधार के लिए पर्याप्त तकनीकी सहायता।
- शिक्षण–अधिगम और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी समर्थित शिक्षण और क्षमता निर्माण के उद्देश्य।
- शिक्षक की तैयारी और व्यावसायिक विकास, शैक्षिक पहुंच बढ़ाने और शैक्षिक योजना, प्रबंधन और प्रशासन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए पर्याप्त हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का पर्याप्त उपयोग।
- स्नातक और व्यावसायिक कार्यक्रमों में ऑनलाइन के साथ पारंपरिक शिक्षण का सम्मिश्रण।
- प्रत्यक्ष अधिगम के अनिवार्य महत्व को समझते हुए विभिन्न विषयों के लिए मिश्रित शिक्षण के विभिन्न प्रभावी प्रदर्शों की पहचान करना।
- ऑनलाइन कक्षाओं के आयोजन के लिए टू-वे वीडियो और टू-वे-ऑडियो इंटरफेस जैसे टूल का उपयोग विशेष रूप से महामारी जैसी स्थितियों में बातचीत की एक लोकप्रिय विधा के रूप में किया जा सकता है।
- ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए “दीक्षा”(DIKSHA)/ “स्वयं” (SWAYAM) प्लेटफॉर्म का पूरा लाभ उठाने के लिए शिक्षकों को बढ़ावा देना और सीएएस(CAS) पदोन्नति के लिए ऐसे प्रशिक्षण/कार्यशालाएं आयोजित करने पर विचार करना।
- ऑनलाइन मोड के माध्यम से 40%तक शिक्षण के प्रावधान के साथ मिश्रित शिक्षण प्रणाली को अपनाना।
- प्रत्येक विभाग में ध्वनि तकनीकी सहायता के साथ नवीनतम आईसीटी सुविधाओं के साथ एक स्मार्ट क्लास रूम।

दीर्घकालिक

- नवीन या अभूतपूर्व प्रौद्योगिकियों पर अनुसंधान करना।
- हमारे जीने के तरीके को बदलने के लिए अपेक्षित नवोन्मेषी या अभूतपूर्व प्रौद्योगिकियों पर प्राथमिकता के साथ ज़ोर देना और इसलिए हम स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा, जल संरक्षण, टिकाऊ खेती, पर्यावरण संरक्षण, और अन्य हरित पहल सहित छात्रों को शिक्षित करने के तरीके को बदलते हैं।
- आर्टीफ़िशियल इंटेलीजेंस (एआई) आधारित प्रौद्योगिकियों के विकास और विस्तार से जुड़े नैतिक मुद्दों पर उन्मुखीकरण।
- विश्वविद्यालय मुख्य क्षेत्रों जैसे मशीन लर्निंग के साथ-साथ बहु-विषयक क्षेत्रों और स्वास्थ्य देखभाल, कृषि और विधि जैसे व्यावसायिक क्षेत्रों में "स्वयं" (SWAYAM) के माध्यम से पीएचडी और परास्नातक कार्यक्रम संचालित कर सकता है। ।
- भाषाई विविधता के विषय पर चर्चा के लिए कई भारतीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री।
- एक संस्थागत समर्थन व्यवस्था तैयार करके डिजिटल डिवाइड के विषय पर चर्चा करना।
- बेहतर अधिगम परिणामों के लिए पारंपरिक और आईसीटी-संचालित अभिनव शिक्षाशास्त्र के मध्य सही संतुलन बनाए रखना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 में परिकल्पित प्रौद्योगिकी उपयोग और एकीकरण से संबंधित शेष लक्ष्यों का कार्यान्वयन।

प्रौद्योगिकी समर्थित अधिगम और क्षमता निर्माण को मिश्रित अधिगम विधियों में कैसे लागू करें

स्रोत: NEP2020 हैंड बुक पेज नंबर 36

चरण 1. संस्थानों के पास ओपन डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) और ऑनलाइन कार्यक्रम चलाने का विकल्प होगा, बशर्ते वे ऐसा करने के लिए मान्यता प्राप्त हों, ताकि वे ज्यादा पाठ्यक्रम संचालित कर सकें सुगमता में सुधार कर सकें, जीईआर बढ़ा सकें और आजीवन सीखने के अवसर प्रदान कर सकें (एसडीजी 4) . किसी भी डिप्लोमा या डिग्री के लिए अग्रणी सभी ओडीएल कार्यक्रम और उनके घटक, उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा उनके परिसरों में चलाए जा रहे उच्चतम गुणवत्ता कार्यक्रमों के समकक्ष मानकों और गुणवत्ता के होंगे। ओडीएल के लिए मान्यता प्राप्त शीर्ष संस्थानों को उच्च गुणवत्ता वाले ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए प्रोत्साहित और समर्थन किया जाएगा। ऐसे गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को उच्च शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम में उपयुक्त रूप से एकीकृत किया जाएगा और मिश्रित मोड को प्राथमिकता दी जाएगी।

चरण 2. मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (एमओओसी) प्लेटफॉर्म जैसे “स्वयं” (SWAYAM) एनपीटीईएल आदि पर उपलब्ध पाठ्यक्रमों का चयन या विकास करें।

चरण 3. मिश्रित मोड पाठ्यक्रमों के विकास के लिए प्रशिक्षण/वेबिनार/सेमिनार आदि का आयोजन किया जाएगा।

चरण 4. मिश्रित शिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता को मापने के लिए।

मिश्रित शिक्षण वह शब्द है जो डिजिटल शिक्षण उपकरणों को अधिक पारंपरिक कक्षा के साथ प्रत्यक्ष शिक्षण के संयोजन के शैक्षिक अभ्यास को दिया जाता है। एक सही मिश्रित अधिगम के माहौल में,छात्र और शिक्षक दोनों को शारीरिक रूप से एक ही स्थान पर स्थित होना चाहिए।

मिश्रित शिक्षण (हाइब्रिड लर्निंग के रूप में भी जाना जाता है) शिक्षण का एक तरीका है, जो पारंपरिक प्रशिक्षक के नेतृत्व वाली कक्षा की गतिविधियों के साथ प्रौद्योगिकी और डिजिटल मीडिया को एकीकृत करती है, जिससे छात्रों को अपने सीखने के अनुभवों को अनुकूलित करने के लिए अधिक सरलता मिलती है।

मिश्रित शिक्षण कार्यक्रम: इसकी प्रभावशीलता को कैसे मापें

आपको कैसे पता चलेगा कि आपके संगठन में मिश्रित शिक्षा काम कर रही है? लोगों और उनके कौशल, व्यवसाय के रणनीतिक कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मानव संसाधन में आपके निवेश की लागत भी हमेशा एक चिंता का विषय होती है। हमें विचार करना चाहिए कि उस निवेश की प्रभावशीलता को कैसे मापें। मिश्रित शिक्षा के प्रभाव को मापना आम तौर पर सीखने के प्रभाव को मापने से अलग नहीं है, केवल कुछ और तत्वों को मापने के अलावा। हम जानते हैं कि किसी संगठन पर सीखने के वास्तविक प्रभाव को मापना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आप मूल्यांकन के 4 स्तरों के किर्कपैट्रिक के मॉडल [1] से परिचित हो सकते हैं:

स्तर 1.प्रतिक्रिया :

प्रशिक्षण मूल्यांकन आमतौर पर निम्नतम स्तर पर सबसे आसान होता है– सीखने के बाद सरल सर्वेक्षणों के माध्यम से छात्र प्रतिक्रियाओं का मापन। यद्यपि ये सर्वेक्षण एक मंच प्रदान करते हैं कि आपके विद्यार्थी सीखने पर कैसे प्रतिक्रिया दे

रहे हैं, क्या वे आपको सहयोग देने के लिए पर्याप्त होंगे जब प्रशिक्षण में अधिक निवेश की आवश्यकता होती है, जब बजट कम होता है, या जब आपसे संबद्ध बाजार मंदी होती है?शायद नही।

स्तर 2.अधिगम :

स्तर 2 पर सकारात्मक बदलाव को मापने के लिए, हम यह आकलन करने के लिए पूर्व और बाद में प्रश्नोत्तरी दे सकते हैं कि क्या किसी विशिष्ट विषय पर ज्ञान में वृद्धि हुई है। अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई शिक्षा में आमतौर पर विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम

से निर्मित बढ़ी हुई क्षमता प्रदर्शित करने के तरीके शामिल होते हैं।

अधिगम अभ्यास और ज्ञान की जांच के माध्यम से, हम सीखने के परिवर्तन के कुछ सामान्य उपायों का पता लगा सकते हैं। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन पाठ्यक्रम लेने के लिए 217 प्रतिभागियों में से 200 पहली बार पाठ्यक्रम के अंत में ज्ञान की जांच में उत्तीर्ण करने में सक्षम थे।

ये मेट्रिक्स सीखने के मामलों में मददगार साबित होते हैं , लेकिन संगठन के लिए सीखने के मूल्यों पर चर्चा करने के लिए अपर्याप्त हैं । सीखना यह जरूरी नहीं है कि सीखना बेहतर प्रदर्शन के बराबर हो।

स्तर 3. व्यवहार :

स्तर3 पर, हम सीखने के प्रयोग और कार्यान्वयन को मापते हैं-- नौकरी में व्यवहार में बदलाव। इन उपायों को अंतराल (जैसे, 3 महीने, 6 महीने, 1 वर्ष) पर दोहराना मददगार होता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे कम नहीं हुए हैं।

सर्वोत्तम स्तर 3 के आकलन में अधिक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के लिए - एक पर्यवेक्षक, संरक्षक, या सहकर्मी - द्वारा विद्यार्थी के व्यवहार का मूल्यांकन शामिल है। इस प्रकार के मूल्यांकन में प्रत्यक्ष अवलोकन, साक्षात्कार, कौशल प्रदर्शन, ड्रिल या कौशल परीक्षण का दूसरा रूप शामिल हो सकता है। प्रशिक्षण के बाद के आकलन को ट्रैक करने के लिए यह मोबाइल ऐप की तरह होना मददगार हो सकता है।

स्तर 4. परिणाम :

क्या कर्मचारी के व्यवहार में बदलाव से संगठन के लिए उल्लेखनीय लाभ होता है? क्या आप इन व्यवहार परिवर्तनों के मूल्य को माप सकते हैं? आपके मेट्रिक्स आपके सीखने के उद्देश्यों से जुड़े रहेंगे। सीखने के उद्देश्यों को समग्र रूप से संगठन पर लक्षित एक प्रभाव उद्देश्य में बदलना चाहिए। क्या आपके द्वारा पढ़ाए जा रहे व्यवहारों से जुड़ा कोई मजबूत डेटा है?

उदाहरण के लिए, यदि आपका सीखने का उद्देश्य प्रभावी कर्मचारी प्रदर्शन की समीक्षा करना है, तो वर्ष के अंत तक कर्मचारी समीक्षाओं को सफलतापूर्वक पूरा करना या अधिक सकारात्मक कार्य वातावरण बनाना और इस प्रकार, कर्मचारियों के कारोबार को कम करना संगठनात्मक लक्ष्य हो सकता है।

VI. भारतीय भाषाएं, जीवन मूल्य, संस्कृति और भारतीय ज्ञान परम्परा का नवीन सन्दर्भों में एकीकृत एवं समग्र विकास

रणनीतियाँ और कार्य योजना

Committee

1.	**Prof. Manisha Dubey**	**Chairman**
2.	Dr. Nilkanth Panigrahi	Member
3.	Dr. M.N. Tripathi	Member
4.	Dr. Sujit Mishra	Member
5.	Dr. Ramesh Gohe	Member
6.	Dr. Shalini Menon	Member

वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ एकीकृत भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषाएं, जीवन मूल्य एवं संस्कृति के लिए रणनीति व कार्ययोजना

समग्र व्यक्तित्व विकास :

- सभी कार्यक्रमों में 40 प्रतिशत अनुभवात्मक शिक्षण को शामिल करके शिक्षा को अधिक अनुभवात्मक बनाना;
- छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों को संवेदनशील बनाना;
- सभी क्षेत्रों में बहु–विषयक शिक्षा को बढ़ावा देना;
- व्यावसायिक विकास के साथ शिक्षकों के प्रशिक्षण में परिवर्तन

कौशल, मूल्य और व्यवहार :

- बेहतर रोजगार के लिए छात्रों और शिक्षकों के कौशल का खाका तैयार करना ;
- अधिक व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम स्थापित करना;
- अल्पकालिक कौशल–आधारित कार्यक्रम प्रारम्भ करना ;
- बहु–विषयक कौशल घटक को एकीकृत करने के लिए पाठ्यक्रम का संशोधन;
- सभी विषयों में छात्रों और शिक्षकों को प्रदान किए जाने वाले व्यावसायिक और जीवन कौशल के समूह की पहचान करना;
- स्थानीय क्षेत्र में विद्यार्थियों की रोजगार योग्यता के कौशल आधार में सुधार करना;
- भारतीय संस्कृति के मूल्यों / लोकाचार / कला / परंपराओं पर प्रशिक्षण।
- पाठ्यचर्या विकास कार्यशालाओं के माध्यम से नैतिकताआधारित पाठ्यक्रम , संवैधानिक मूल्यों और भारतीय संस्कृति, कला और विरासत के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना।

भारतीय संस्कृति, सभ्यता और कला :

- पारंपरिक भारतीय ज्ञान, विरासत, और मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करना;
- वन संसाधनों के संबंध में जनजातीय ज्ञान, कला और मूल्यों को शामिल करना, तैयार करने के तरीके, मूल्य संवर्धन, जीवन और आजीविका से संबंधित, स्वास्थ्य और उपचार।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली को वर्तमान ज्ञान क्षेत्र के साथ एकीकृत करके **क्रॉस–डिसिप्लिनरी** और अंतःविषय अनुसंधान की संस्कृति को बढ़ावा देना।
- भारतीय संस्कृति, मूल्यों और कला के विभिन्न पहलुओं से छात्रों को परिचित कराने के लिए पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना।

- भारतीय कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से संबंधित भारतीय भाषाओं में अध्यापन और शोध को प्रोत्साहित करना;
- भारतीय लोकाचार पर आधारित संगीत, ललित कला, अनुवाद और व्याख्या, तुलनात्मक साहित्य, दर्शन और प्रदर्शन कला विभागों का परिचय।
- भारतीय खेलकूद, नृत्य, संगीत, फोटोग्राफी और ललित कला के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न छात्र क्लबों की स्थापना।

भारतीय भाषाएं :

- भारतीय भाषाओं में विभाग और कार्यक्रम प्रारम्भ करना ।
- शिक्षण और सीखने को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शास्त्रीय भाषा संस्थानों के साथ विभागों का समन्वय;
- पाली, फारसी और प्राकृत भाषाओं के लिए संस्थान / केंद्र स्थापित करना और इन संस्थानों / केंद्रों को अन्य विश्वविद्यालय विभाग/ केंद्रों के साथ एकीकृत करना।
- भारतीय भाषाओं में शिक्षण में आवश्यक सहायता के लिए विभिन्न राष्ट्रीय मिशनों के साथ समन्वय स्थापित करना;
- चयनित विभागों और केंद्रों में एक भाषा विकल्प के रूप में संस्कृत को बढ़ावा देना।

समय योजना :

अल्पकालिक लक्ष्य (<2वर्ष)

- सभी शिक्षण विभागों को विभिन्न कार्यक्रमों के संबंधित पाठ्यक्रमों में भारतीय लोकाचार, मूल्यों और भारतीय विचारकों के योगदान को शामिल करना है।
- विभागों/केंद्रों को विकसित किया जाना है और शिक्षा को भारतीय परिप्रेक्ष्य से अधिक अनुभवात्मक और समग्र बनाने के लिए उनके पाठ्यक्रम में नई शिक्षाशास्त्र को शामिल किया जाएगा।
- पाठ्यचर्या सामग्री को इस तरह से विकसित किया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक कार्यक्रम में छात्र न केवल मुख्य पाठ्यक्रम सीख सकें, बल्कि आलोचनात्मक सोच के लिए जगह भी प्राप्त कर सकें और यह सीख सकें कि कैसे पूछताछ, खोज, चर्चा, लिखना और विश्लेषण करना है। सर्वांगीण विकास के लिए ये कौशल आवश्यक हैं।
- नई शिक्षा नीति में मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण शिक्षा पर बल दिया गया है जहां शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इस संदर्भ में, शिक्षण के साथ भारतीय खेलों और कौशल का एकीकरण समग्र विकास, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ावा देगा और संज्ञानात्मक क्षमताओं को भी बढ़ाएगा।
- विश्वविद्यालय का कम से कम प्रत्येक स्कूल/विभाग सभी सेमेस्टर में एक मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम का प्रस्ताव करेगा जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्य, संस्कृति शामिल है और इसे भारतीय विद्या , भारतीय

भाषाओं, चिकित्सा की आयुष प्रणाली, योग से संबंधित वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ शामिल किया गया है। , आधुनिक भारत के साथ कला, संगीत, इतिहास, संस्कृति आदि।

- छात्रों के कौशल को उन्नत करने के लिए प्राचीन से आधुनिक भारत में खेल, नृत्य, संगीत, फोटोग्राफी, ललित कला, रंगमंच, एनीमेशन और डिजाइनिंग के प्रचार के लिए विभिन्न क्लबों की स्थापना।
- उपाधि कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम तैयार करना, कार्यक्रम के प्रत्येक पाठ्यक्रम में विशिष्ट भारतीय मूल्य, भारतीय संस्कृति, भारतीय इतिहास और संबंधित पाठ्यक्रम से संबंधित भारतीय मूल को निर्धारित पाठ्यक्रम की पहली इकाई (या कम से कम पहली इकाई का हिस्सा) के रूप में शामिल किया जाना है।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्यों और संस्कृति पर आधारित सम्मेलनों/कार्यशालाओं का आयोजन।
- मानवतावादी, नैतिक, संवैधानिक और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के विकास सहित मूल्य–आधारित शिक्षा पर एक पाठ्यक्रम प्रदान करना।
- भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए सभी उम्र के लोगों के लिए विशेष छात्रवृत्ति शुरू करना।
- छात्रों को कार्यक्रम की कुल अवधि के भीतर यूजीसी द्वारा अनुमोदित ऑनलाइन पाठ्यक्रमों / एमओओसी(MOOC) द्वारा प्रदान किए गए यूजी स्तर पर मूल्य वर्धित पाठ्यक्रमों के समूह में से कम से कम 2 क्रेडिट अर्जित करने होंगे, जो उम्मीदवारों की अंतिम प्रगति रिपोर्ट में परिलक्षित होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर की शुरुआत में पाठ्यक्रमों की उपलब्धता की घोषणा की जाएगी, ताकि छात्र अपनी पसंद के अनुसार जो भी सेमेस्टर उनके लिए उपयुक्त हो, पाठ्यक्रम ले सकें।
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी और साहित्य के क्षेत्र में हमारे प्राचीन योगदान को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक संबंधित विभाग विषय के ज्ञान को बढ़ावा देने में हमारे पूर्वजों की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए अपने विभाग में एक उचित स्थान विकसित कर सकता है। यह एक चित्र गैलरी मॉडल प्रदर्शनी या सचित्र विवरण के रूप में हो सकता है।

- प्रत्येक विषय छात्रों को पढ़ाए जाने वाले अपने पाठ्यक्रम में भारतीय विद्वानों/वैज्ञानिकों के योगदान को शामिल कर सकता है।

मध्यावधि लक्ष्य (<3वर्ष) :

- अपने मुख्य विषयों के अलावा अन्य विषयों में छात्रों को पीएच.डी. के लिए पंजीकरण करने की अनुमति देकर क्रॉस–डिसिप्लिनरी और अंतरविषयक अनुसंधान की संस्कृति को बढ़ावा देना। छात्रों को कला, रचनात्मकता और क्षेत्र/देश की समृद्ध विरासत से परिचित कराने के लिए आवासीय कार्यक्रम में कलाकारों/लेखकों को संस्थागत बनाना।
- कला और संग्रहालय प्रशासन, कलाकृति संरक्षण, ग्राफिक डिज़ाइन और वेब डिजाइन में कार्यक्रम/ उपाधि।

दीर्घकालिक लक्ष्य (<5वर्ष)

- चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व का विकास आधुनिक युग की आवश्यकता है। इसलिए, विभिन्न कौशल जैसे संचार, भाषाओं में दक्षता, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी, और वार्ता कौशल, प्रश्न पूछना आदि के के लिए मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम।
- कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ को पाठ्यक्रम में आदिवासी और स्वदेशी ज्ञान सहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान को शामिल करना चाहिए। प्रासंगिक 22 दीर्घकालिक (5-10वर्ष)
- पाली, फारसी और प्राकृत भाषाओं के लिए संस्थान/केंद्र स्थापित करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में परिकल्पित भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, संस्कृति और मूल्यों को बढ़ावा देने से संबंधित लक्ष्यों का कार्यान्वयन। पारंपरिक भारतीय ज्ञान के घटकों को विज्ञान, ललित कला, खेल आदि सहित सभी विषयों में शामिल किया जा सकता है।
- सभी ज्ञान की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल में बहुआयामी और समग्र शिक्षा।
- विश्वविद्यालय के शिक्षकों को भारतीय भाषाओं में शिक्षण में आवश्यक सहायता के लिए राष्ट्रीय परामर्श मिशन के साथ समन्वय।
- मातृभाषा, पड़ोसी और राष्ट्रीय भाषा सहित 3 भाषा फार्मूले में भाषा विकल्पों में से एक के रूप में संस्कृत को बढ़ावा देना।
- शैक्षिक प्रणाली में संमिलन की प्रक्रिया प्रारम्भ करने के लिए भारतीय भाषाओं, तुलनात्मक साहित्य, रचनात्मक लेखन, कला, संगीत, लोकगीत, लोक साहित्य, मौखिक साहित्य, दर्शनशास्त्र में विभिन्न विभाग और कार्यक्रम प्रारम्भ करना ।

भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, मूल्यों और संस्कृति को वर्तमान ज्ञान प्रणाली के साथ एकीकृत करने के लिए यह प्रस्तावित है कि गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित आठ सेमेस्टर स्नातक पाठ्यक्रमों में निम्नलिखित योजना को पाठ्यक्रम में लागू किया जा सकता है–

प्रथम वर्ष		द्वितीय वर्ष		तृतीय वर्ष		चतुर्थ वर्ष	
पहला सेमेस्टर	दूसरा सेमेस्टर	तीसरा सेमेस्टर	चौथा सेमेस्टर	पांचवा सेमेस्टर	छठवाँ सेमेस्टर	सातवाँ सेमेस्टर	आठवाँ सेमेस्टर
कॉमन हिंदी	कॉमन अँग्रेजी	कॉमन हिंदी	कॉमन अँग्रेजी	भारतीय कला एवं पुरातत्व	भारतीय पारम्परिक संस्कृति	ज्ञान प्रणाली	लोकाचार

VII. उच्च शिक्षा का वैश्विक फलक

रणनीतियाँ और कार्य योजना

Committee

1.	**Prof. Amit Saxena**	**Chairman**
2.	Prof. Manish Shrivastava	Member
3.	Prof. V.D. Rangari	Member
4.	Dr. P.P. Murthy	Member
5.	Dr. Dilip Pal	Member
6.	Dr. S.K. Shahi	Member
7.	Dr. H.S. Tiwari	Member

उच्च शिक्षा का वैश्विक फलक

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण विविध शिक्षा प्रणालियों के बीच पारस्परिक विचार-विमर्श के माध्यम से सर्वोत्तम शैक्षणिक और अनुसंधान क्रियाओं को साझा करने को बढ़ावा देता है और छात्रों और विद्वानों की गतिशीलता के माध्यम से वैश्विक नागरिकों को विकसित करने में मदद करता है। उच्च शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण वैश्वीकरण की प्रतिक्रिया है, ताकि वैश्विक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम के संरेखण के साथ वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक अर्थव्यवस्था में उत्पादकता में सुधार के लिए कौशल के विविध प्रकार को स्थापित किया जा सके। अंतरराष्ट्रीय छात्रों, शिक्षाविदों और वित्त पोषण को आकर्षित करने के अवसर बढ़ रहे हैं और कई भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान अब अपनी वैश्विक पहुंच बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। कुछ भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान पहले ही विश्वविद्यालयों की 'विश्व रैंकिंग' में शामिल हो चुके हैं। QS 2022 वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में, 35 संस्थानों ने जगह बनाई है और 63 उच्च शिक्षा संस्थानों ने टाइम्स हायर एजुकेशन (THE) वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2021 में जगह बनाई है। हालांकि, जो अधिक महत्वपूर्ण है, वह है इन रैंकिंग में समान रूप से अच्छा प्रदर्शन करने के लिए भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों की छिपी हुई अव्यक्त क्षमता पर ध्यान केंद्रित करना। छात्र गतिशीलता उच्च शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण का सबसे स्पष्ट पहलू है। अपने देश के बाहर उच्च शिक्षा में नामांकित छात्रों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है और यह सिलसिला जारी रहने की संभावना है। भारत, विदेशी महाविद्यालयीन उम्मीदवारों के सबसे बड़े वैश्विक स्थानों में से एक है। दिसंबर 2020 की स्थिति में, भारत के 10 लाख से अधिक छात्र विदेशों में पढ़ रहे थे(MEA 2020-21)।हालांकि, उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (एआईएसएचई) 2019-2020 के अनुसार उच्च शिक्षा के उद्देश्य से भारत आने वाले विदेशी छात्रों की संख्या 49,348 है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और अंतरराष्ट्रीयकरण

पहुंच, समता, गुणवत्ता, वहनीयता और जवाबदेही के मूलभूत स्तंभों पर बनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में अनुशंसा की गई है कि "अभूतपूर्व सुधारों का उद्देश्य हमारे छात्रों, शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों को सही दक्षताओं और क्षमताओं से लैस करके और बेहतर बनाना और एक नए जीवंत भारत के लिए शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम और पुनर्जीवित करना है।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति व्यापक रूप से उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में उच्चतम वैश्विक मानकों को प्राप्त करने पर केंद्रित है। इसके अलावा, यह अधिक से अधिक अंतरराष्ट्रीयकरण छात्रों को आकर्षित करने और "घर पर अंतरराष्ट्रीयकरण" के लक्ष्य को प्राप्त करने की आवश्यकता पर बल देता है। यह नीति भारत को "वैश्विक अध्ययन गंतव्य के

रूप में बढ़ावा देने की महत्वपूर्ण आवश्यकता की सराहना करती है जो कि वहनीय खर्च पर अच्छी शिक्षा शिक्षा प्रदान करती है जिससे विश्वगुरु के रूप में अपनी भूमिका को पुनः स्थापित करने में मदद मिलती है।”

उद्देश्य

- विदेशी छात्रों के लिए भारत को एक आकर्षक अध्ययन स्थल बनाना।
- हमारे शिक्षकों और छात्रों में अंतरराष्ट्रीय दक्षता को बढ़ावा देना।
- हमारे विद्यार्थियों की वैश्विक मानसिकता विकसित करना और उन्हें भारतीय होने के बहुत ज्यादा गर्व के साथ वैश्विक नागरिक तैयार करना।
- भारतीय और विदेशी उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच सक्रिय संपर्क को बढ़ावा देना।
- अंतरराष्ट्रीय सूचकांकों में वैश्विक रैंकिंग में सुधार करना।

रणनीतिक कार्यक्रम और पहल

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने और हमारी उच्च शिक्षा प्रणाली की पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। संस्था और नियामक/सरकारी दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण पहल करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय नीति और संस्थागत रणनीति के बीच यह तालमेल उच्च शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण पर जोर देगा।

- घर पर अंतरराष्ट्रीयकरण
- दोहरी व्यवस्था के तहत क्रेडिट की स्वीकार्यता
- वैश्विक नागरिकता दृष्टिकोण
- आईसीटी आधारित अंतरराष्ट्रीयकरण
- अकादमिक और अनुसंधान सहयोग
- विदेशों में ब्रांड निर्माण
- पूर्व छात्रों से जुड़ना
- अंतरराष्ट्रीय मामलों के लिए कार्यालय

रणनीतिक योजनाएं और लक्ष्य

- गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर में उच्च शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित पहल की जा सकती है :

विदेशी छात्रों की पीएच.डी. के लिए सीधे पंजीयन (विदेशी छात्रों के लिए सीटों का आवंटन) : विदेशों के छात्रों को गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययनशालाओं/विभागों में पीएचडी कार्यक्रमों में पंजीयन के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में पीएचडी करने विदेशी छात्रों को आकर्षित करने के लिए भारत सरकार या आवेदन करने वाले छात्रों के देशों में उपलब्ध कई फैलोशिप/ छात्रवृत्ति का उपयोग किया जा सकता है। इससे यहां डिग्री हासिल करने के लिए उनका आर्थिक बोझ कम होगा। उनकी भाषा संबंधी समस्याओं या शिकायतों को समझने के लिए संचालन/विशेष काउंटर जैसे कुछ विशेष विशेषाधिकार/छूट दी जा सकती हैं।

अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ संयुक्त अनुसंधान सहयोग को प्रोत्साहित करना –इस पहल के तहत, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के शिक्षक/विद्वान संयुक्त शोध पत्र संलेखन, सम्मेलनों, व्याख्यान, वेबिनार, संयुक्त परियोजनाओं, समझौता ज्ञापनों जैसे अनुसंधान उद्देश्यों के लिए विदेशों के साथ पारस्परिक विचार-विमर्श कर सकते हैं।

यूजीसी, एसईआरबी, डीबीटी, एआईसीटीई, आयुष मंत्रालय जैसी विभिन्न भारत सरकार की फंडिंग एजेंसियां अन्य उन्नत देशों जैसे अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन, कोरिया आदि के साथ संयुक्त सहयोग अनुसंधान परियोजना के लिए फंड प्रदान करने के लिए विज्ञापन करती हैं। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय इस प्रकार की द्विपक्षीय/ अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है और आवेदन प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए एक प्रकोष्ठ बना सकता है, ताकि एक देश से दूसरे देश तक के संबंधित आधिकारिक मामले/बातचीत/इससे संबंधित समस्याओं को विश्वविद्यालय स्तर पर आसानी से हल किया जा सके। इस तरह से भी अंतरराष्ट्रीय सहयोग बिना वित्तीय भार के किया जा सकता है।

अकादमिक और अनुसंधान एवं विकास सहयोग के लिए हमारे संस्थान और प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) को प्रोत्साहन जैसा कि उल्लेख किया गया है, एमओयू गुरु घासीदास विश्वविद्यालय और विदेशी संस्थानों के बीच महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह हमारे शिक्षक/विद्वान छात्रों को भागीदार (एमओयू) विदेशी संस्थानों और विदेशी संस्थानों के लोगों को यहाँ दौरा करने के लिए अवसर प्रदान कर सकता है । इससे संस्थानों के बीच अनुसंधान का बेहतर माहौल बनेगा। इस पहल के माध्यम से शोध करने वालों की गतिशीलता भी बढ़ेगी।

अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए अकादमिक/कैरियर परामर्श सहायता केंद्र स्थापित करना–गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में एक अलग समर्पित सहायता केंद्र बनाया जा सकता है जो गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में शिक्षक/शोधकर्ताओं या विदेशी छात्रों द्वारा सुझाए गए सभी मुद्दों, पदोन्नति और पहलों पर कार्य करेगा, जो यहां या वहाँ शोध करना चाहते हैं। इसमें गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के ऐसे छात्र हो सकते हैं, जो एक विदेशी विश्वविद्यालय कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की इच्छा रखते हैं, यह सहायता केंद्र उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन/परामर्श दे सकता है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय का ई–लेटर शुरू करना– सोशल मीडिया, संस्थान की वेबसाइट और पूर्व छात्र संघ के माध्यम से अकादमिक और अनुसंधान एवं विकास के प्रचार-प्रसार और विदेशी छात्रों के लिए अवसर हेतु गुरु घासीदास विश्वविद्यालय से एक ई–लेटर शुरू किया जा सकता है। प्रचार/विज्ञापन के पोस्टर सहायता केंद्र या विश्वविद्यालय (गुरु घासीदास विश्वविद्यालय) में महत्वपूर्ण स्थानों पर चिपकाए जा सकते हैं। ई–लेटर उन सभी हितधारकों को भेजा जा सकता है, जो गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में या विदेश में विदेशी अध्ययन के बारे में जानना चाहते हैं।

संस्थानों द्वारा छवि बनाने के लिए विदेशों/विदेश के संस्थानों में रह रहे पूर्व छात्रों का सहयोग लेना –ऐसे कई छात्र हैं, जो गुरु घासीदास विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण हुए हैं और विदेशों में रहते हैं। वे स्वयं भी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में अपनी उच्च शिक्षा का अध्ययन/पढ़ाई शुरू करना पसंद कर सकते हैं, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय उन्हें अपना कार्य पूरा करने और डिग्री प्राप्त करने के लिए मंच प्रदान कर सकता है। दूसरे, विदेश में बसे पूर्व छात्र अपने कार्यस्थल पर गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित अध्ययन कार्यक्रम का प्रचार कर सकते हैं या वे गुरु घासीदास विश्वविद्यालय को सूचित कर सकते हैं कि हमारे छात्र वहां कैसे अध्ययन कर सकते हैं। उन स्थानों के स्थानीय निवासी होने के कारण, पूर्व छात्र अपने स्थानों और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की स्थितियों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। वे हमारे छात्रों को यथार्थवादी सुझाव दे सकते हैं कि वे विदेश में कैसे अध्ययन कर सकते हैं। इसी तरह वे विदेशी छात्रों को समझा सकते हैं कि वे गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में कैसे रह सकते हैं और अपना डिग्री प्रोग्राम पूरा कर सकते हैं। लोग पारंपरिक पोस्टरों/ईमेलों की तुलना में हमारे पूर्व छात्रों पर अधिक विश्वास करेंगे।

पृथक कार्यालय का विकास–गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने के लिए ऊपर उल्लिखित कई रणनीतिक योजनाओं की आवश्यकता है जिसके लिए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में एक अलग समर्पित कार्यालय की आवश्यकता होगी। कार्यालय पूरी तरह से लक्ष्य से संबंधित सभी गतिविधियों/पत्राचारों/सहायता आदि के लिए समर्पित होगा (उच्च शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण के लिए प्रकोष्ठ) । विदेशी संस्थानों/पूर्व छात्रों से नियमित रूप से संपर्क करने के लिए कार्यालय को एक फोन, इंटरनेट के साथ डेस्कटॉप, प्रिंटर और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय छात्र नीति – चूंकि अनुसंधान समुदाय के आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ विशेषाधिकारों/छूटों के साथ पहली बार अध्ययन के लिए अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे, इसलिए अंतरराष्ट्रीय संस्थानों को प्रेरित करने और सुविधा प्रदान करने के लिए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की विद्या परिषद द्वारा शिक्षकों और छात्रों को ऐसे अकादमिक और अनुसंधान एवं विकास सहयोग के लिए एक अलग नीति तैयार और अनुमोदित की जानी चाहिए।

पदोन्नति की रणनीति – हमारे छात्रों को विदेशी संस्थानों एवं विदेशी छात्रों को यहाँ अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही पहल, भारत सरकार की योजनाओं का अधिकतम लाभ उठाने के लिए सोशल मीडिया (फेसबुक, वेबसाइट, समाचार पत्र आदि) द्वारा प्रचारित किया जाएगा। प्रस्तावों, फेलोशिप आदि के लिए भी बुलाया जाएगा। विदेशी छात्रों के प्रवेश के लिए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की नीति को नवीनतम संदर्भ में सवंर्धित किया जा जा सकता है ।

कुछ स्वतंत्रता के साथ एक सकारात्मक मानसिकता, लक्ष्य के लिए एक अतिरिक्त कारक होगी।

घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
ज्ञान परंपरा एवं अद्वैत वेदांत दर्शन
लोक प्रबोधन एवं जन
श्री शंकर भारती महास्वामी

VIII. शिक्षण अनुसंधान और नवाचार की रैंकिंग प्रणाली

रणनीतियाँ और कार्य योजना

Committee

1.	**Prof. P.K. Bajpai**	**Chairman**
2.	Prof. L.V.K.S. Bhaskar	Member
3.	Dr. Renu Bhatt	Member
4.	Dr. K.K. Chandra	Member
5.	Dr. Pushparaj Singh	Member

रैंकिंग के साथ शिक्षण अनुसंधान और नवाचार में तालमेल

उद्देश्य :

शिक्षा के साथ–साथ शोध में अधिगम परिणामों के संदर्भ में गुणवत्ता सुधार के लिए हमें पाठ्यक्रम डिजाइन, अध्यापन और मूल्यांकन सहित हमारी उच्च शिक्षा के सभी पहलुओं को इस तरह से समन्वयित करके नवाचार को विकसित करना और समग्र रूप से आगे बढ़ना होगा, ताकि अनुसंधान डिजाइन और पद्धतियों, सामुदायिक पहुंच और विस्तार गतिविधियों को अनुभवात्मक अधिगम के लिए शिक्षण उपकरण के रूप में एकीकृत किया जा सके। अनुसंधान अनुभव और डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म, विस्तार और प्रकाशन कार्य, व्यावसायिक प्रशिक्षण, छात्र नियोजन और उच्च शिक्षा की ओर झुकाव, शिक्षक क्षमता संवर्धन, छात्र और शिक्षक आदान–प्रदान कार्यक्रम, मान्यता के साथ–साथ राष्ट्रीय रैंकिंग मानदंड के साथ जुड़ा हुआ हैं, इसी तरह, संस्थान विकास कार्यक्रम और हमारे विश्वविद्यालय की अन्य दीर्घकालिक रणनीतियों का इन उन्नति और विस्तार के साथ समन्वय किया जाना चाहिए।

प्रारंभ में, इस तरह के तालमेल के लिए निम्नलिखित को प्राथमिक तत्व माना गया है।

अनिवार्य इंटर्नशिप :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अनुसार, विद्यार्थियों को बेहतर सीखने का अनुभव प्रदान करने के लिए शोधार्थियों को समय के साथ विकसित किया जाना है। इस बात पर और जोर दिया जाता है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को नवोन्मेषी बनाया जाना चाहिए। राष्ट्रीय कौशल और व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रारुप के साथ शिक्षण और अनुसंधान को प्रभावी ढंग से विकसित करने के लिए, यह आवश्यक है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए और रचनात्मक इंटर्नशिप अनुभव के लिए नवीन विचारों का समावेश किया जाए। इसलिए निम्नलिखित रणनीतियों का सुझाव दिया जाता है।

- सेवा/नौकरी/सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों के लिए 02 क्रेडिट प्रदान करना।
- अध्यापन इंटर्नशिप के लिए पड़ोसी सरकारी/निजी स्कूलों के साथ संपर्क करना।
- स्थानीय उद्योग के साथ इंटर्नशिप के अवसर पैदा करना।
- पाठ्यक्रम में अनुसंधान और इंटर्नशिप के तत्व को शामिल करना।
- परियोजना–कार्य/लघु–शोध–कार्य/इंटर्नशिप उद्योग के सहयोग से आयोजित किया जा सकता है।

इनक्यूबेशन का विचार :

इनक्यूबेशन सेंटर को छात्रों और शिक्षकों के विचारों को प्रेरित करने और उनके विकास में सहायता करने में अधिक सक्रिय होना चाहिए और शिक्षार्थियों के विचार को स्टार्ट अप में परिवर्तित करते हुए प्रौद्योगिकी विकास केंद्र और प्रौद्योगिकी सक्षम केंद्र के साथ-साथ केंद्रीय अनुसंधान सुविधा के साथ तालमेल बिठाना चाहिए, ताकि आवश्यक प्रौद्योगिकी विकास, परिनियोजन और व्यावसायीकरण सहायता प्रदान की जा सके।

उद्योग इंटरफेस सेल और इनक्यूबेशन सेंटर को प्रौद्योगिकी समकक्ष उद्योग विशेषज्ञ संगठन, संस्थान नेटवर्क का एक व्यावसायिक संघ भी बनाना चाहिए जो छात्र और संकाय द्वारा स्टार्टअप स्थापित करने के लिए उद्यमी विकास, विपणन रणनीति प्रदान करने में भागीदार हो सके।

शासकीय संगठन, कौशल विकास संगठन, उद्योग आदि के साथ प्रभावी भागीदारी, ताकि सीखने की गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ कौशल और उद्यमिता प्रशिक्षण को शामिल किया जा सके।

निम्नलिखित कार्य योजना का सुझाव दिया गया है :

अल्पकालिक (<2 वर्ष)

- प्रासंगिक पाठ्यक्रमों से क्रेडिट, उद्यमशीलता क्षमता, संचार, सॉफ्ट स्किल्स, महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता और मूल्य शिक्षा शामिल हैं।
- युवा लोगों को उद्यमिता और नवाचार में संभावनाओं और वास्तविकताओं से अवगत कराने के लिए विश्वविद्यालय के अंदर और बाहर छात्रों और शिक्षकों के आदान-प्रदान कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना।
- इंटर्नशिप से संबंधित गतिविधियों को पढ़ाने के लिए नजदीकी राज्य/निजी स्कूलों के साथ जुड़ना , सामुदायिक जुड़ाव, प्रौढ़ और व्यावसायिक शिक्षा।
- स्थानीय उद्योग, कंपनियों, कलाकारों, और शिल्पकार के साथ इंटर्नशिप की संभावनाएं पैदा करना। साथ ही अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों/अनुसंधान संस्थानों के साथ अनुसंधान इंटर्नशिप ।
- उद्योग और अन्य विश्वविद्यालयों/अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से परियोजना कार्य/शोध प्रबंध/इंटर्नशिप किया जा सकता है।
- अनुसंधान और नवाचार के लिए शिक्षकों और छात्रों को प्रोत्साहित करना। स्नातक कार्यक्रम में एक शोध और इंटर्नशिप घटक शामिल करना।
- सेवा/नौकरी/सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों के लिए 1-2अतिरिक्त क्रेडिट प्रदान करना।

- छात्रों की खोजी पहल के लिए नियमित प्रतियोगिताओं का संस्थानीकरण, साथ ही वार्षिक नवाचार पुरस्कार प्रदान करना।
- स्थानीय/ क्षेत्रीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय/प्रजातीय/क्षेत्रीय खाद्य पदार्थों/पोशाक पर नवाचार को बढ़ावा देना।
- प्रासंगिक अनुसंधान के माध्यम से समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुसंधान क्षेत्रों को प्राथमिकता देना।
- उद्योग और सेक्टर–कौशल परिषद के संयोजन में एक्यूबेशन केंद्रों की स्थापना।

मध्यावधि (3-5 वर्ष)

- अनुसंधान को बढ़ाने और अनुसंधान की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार करने के लिए अनुसंधान अधोसंरचना को मजबूत करना।
- व्यापक, लक्ष्योन्मुखी और केंद्रित अनुसंधान नीतियों की स्थापना।
- संसाधन साझा करने और अवसर प्रदान करने के लिए अनुसंधान संस्थानों और वित्त पोषण निकायों के बीच सहयोग।
- सहयोगी अनुसंधान विधियों के माध्यम से अंतःविषय अनुसंधान के लिए अनुदान उपलब्ध हैं।
- नवोदित उद्यमियों को उनके नवोन्मेषी उपक्रमों को विकसित करने और अनुसंधान के व्यावसायीकरण के लिए पर्याप्त राशि के रूप में स्टार्टअप अनुदान प्रदान करना
- सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, एनसीईआरटी, एनसीटीई, आरसीआई, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय जैसे अन्य मंत्रालयों/संगठनों/संस्थाओं के साथ सहयोग विकसित करना।
- देश के शीर्ष 50 विश्वविद्यालयों की एनआईआरएफ रैंकिंग।
- अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में इंटर्नशिप के अवसरों की खोज करना।
- व्यावसायिक और व्यावसायिक कौशल परामर्श प्रदान करना।
- प्रमुख कौशल समूहों की लक्षित भर्ती के लिए उद्योग–विश्वविद्यालय इंटरफेस सेल की स्थापना।

लंबी अवधि (5-10 वर्ष)

- क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी और टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग जैसे वैश्विक प्रदर्शन तालिकाओं में भागीदारी के लिए शिक्षण, अनुसंधान, ज्ञान हस्तांतरण और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण को सुव्यवस्थित करना।

- सभी व्यावसायिक डिप्लोमा, स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों का एनबीए प्रत्यायन।
- विश्वविद्यालय-व्यवसाय के परस्परिक सम्पर्क की एक विस्तृत श्रृंखला में उद्योग-विश्वविद्यालय अनुसंधान कार्य।
- सम्पूर्ण उद्यमशीलता यात्रा के सहयोग के लिए उद्योग परिभाषित नवाचारों और सामुदायिक इन्क्यूबेटर्स।
- सभी बुद्धिजीवी समाजों में नवाचारों और उद्यमिता विकास, आर्थिक विकास और प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए अंतर–विश्वविद्यालय सहयोग।
- वैश्विक नवाचार परिदृश्य को फिर से आकार देने के लिए क्षेत्रीय/राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नवाचार केंद्रों के साथ संबंध।
- उल्लेखनीय परिणामों के साथ अत्याधुनिक अनुसंधान, शिक्षण और विस्तार को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्टता केंद्र बनाना।
- गुरु घासीदास विश्वविद्यालय को वैश्विक मानकों के भावी उच्च शिक्षा संस्थानों में बदलने के लिए अनुसंधान, नवाचार और रैंकिंग के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के शेष उद्देश्यों का कार्यान्वयन।

NEP-2020 के बारे में जागरूकता पैदा करने के प्रयास

NEP-2020 के प्रति जागरूकता के प्रयास

क्र.	NEP विषयवस्तु	दिनांक	विधि	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिभागियों का स्तर	कार्यान्वयन के लिए सुझावों की संख्या*
1	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा प्रणाली" और "NEP-2020 में उच्च शिक्षा में शिक्षकों की चुनौतीपूर्ण भूमिका" पर ऑनलाइन संभाषण	05 सितंबर, 2020	गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के 22 विभागों द्वारा आयोजित शिक्षक दिवस समारोह के अवसर पर ऑनलाइन मोड	220 शिक्षक और 1140 विद्यार्थियों ने भाग लिया	शिक्षक और विद्यार्थी	1) शिक्षकों को NEP-2020को अपनाने के लिए प्रेरित करें. 2) विश्वविद्यालयों में प्रत्येक कार्यक्रम की संरचना में एकरूपता बनाए रखने के लिए क्रेडिट के हस्तांतरण के लिए यूजीसी/नियामक निकायों द्वारा नियामक ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है।
2	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" पर विशेष व्याख्यान	05 सितंबर, 2020	ऑनलाइन मोड	21 शिक्षक और 61 विद्यार्थियों ने भाग लिया.	शिक्षक और विद्यार्थी	1) शिक्षकों को NEP-2020 को अपनाने के लिए प्रेरित करें 2)विश्वविद्यालयों में प्रत्येक कार्यक्रम की संरचना में एकरूपता बनाए रखने के लिए क्रेडिट के हस्तांतरण के लिए यूजीसी/नियामक निकायों द्वारा नियामक ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है।

3	उच्च शिक्षा, शिक्षक शिक्षा और स्कूली शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर एक संगोष्ठी	11 नवंबर, 2020	ऑनलाइन मोड	15 शिक्षक और 78 विद्यार्थियों ने भाग लिया.	शिक्षक और विद्यार्थी	1) शिक्षकों को **NEP-2020** को अपनाने के लिए प्रेरित करें 2)विश्वविद्यालयों में प्रत्येक कार्यक्रम की संरचना में एकरूपता बनाए रखने के लिए क्रेडिट के हस्तांतरण के लिए यूजीसी/नियामक निकायों द्वारा नियामक ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है।।
4	**NEP-2020**कार्यान्वयन समिति की बैठकें	23 दिसंबर, 2020	ऑनलाइन मोड	12 समिति सदस्य	12 समिति सदस्य	1) शिक्षकों को NEP-2020 को अपनाने के लिए प्रेरित करें 2)विश्वविद्यालयों में प्रत्येक कार्यक्रम की संरचना में एकरूपता बनाए रखने के लिए क्रेडिट के हस्तांतरण के लिए यूजीसी/नियामक निकायों द्वारा नियामक ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है।।
5	**NEP-2020**	23 दिसंबर, 2020	ऑनलाइन मोड	75 प्रतिभागी	भौतिकी औ ररसायन विज्ञान विभाग के शिक्षक और विद्यार्थियों ने भाग लिया	1) शिक्षकों को **NEP-2020** को अपनाने के लिए प्रेरित करें 2)विश्वविद्यालयों में प्रत्येक कार्यक्रम की संरचना में एकरूपता बनाए रखने के लिए क्रेडिट के हस्तांतरण के लिए यूजीसी/नियामक निकायों द्वारा नियामक ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है।

6	**NEP–2020**कार्यान्वयन समिति की बैठकें	02 फरवरी, 2021	ऑनलाइन मोड	16 सदस्य	16 समिति सदस्य	1) शिक्षकों को **NEP–2020** को अपनाने के लिए प्रेरित करें 2)विश्वविद्यालयों में प्रत्येक कार्यक्रम की संरचना में एकरूपता बनाए रखने के लिए क्रेडिट के हस्तांतरण के लिए यूजीसी/नियामक निकायों द्वारा नियामक ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है।
7.	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: उच्च शिक्षा का रूपान्तरण" पर एक संगोष्ठी।संगोष्ठी का आयोजन शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केंद्रीयविश्वविद्यालय), बिलासपुर छत्तीसगढ़ और विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।	19 फरवरी, 2021	रजत जयंती सभागार, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में प्रत्यक्ष विधि	संगोष्ठी में 300 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।	कुलपति, प्रोफेसर अंजीला गुप्ता, कुलसचिव, प्रो. शैलेंद्र कुमार, संगोष्ठी के मुख्य वक्ता, डॉ. रवींद्र कान्हेरे, अध्यक्ष, एएफआरसी, मध्यप्रदेश सरकार, संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रोफेसर, बलदेवशर्मा, कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.), डीन, प्रमुख, शिक्षक और विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।	11) शिक्षकों को **NEP–2020** को अपनाने के लिए प्रेरित करें 2)विश्वविद्यालयों में प्रत्येक कार्यक्रम की संरचना में एकरूपता बनाए रखने के लिए क्रेडिट के हस्तांतरण के लिए यूजीसी/नियामक निकायों द्वारा नियामक ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है।। इसके अलावा, संगोष्ठी से विस्तृत सुझाव अलग से संलग्न किया गया।

8.	आरसीवीपी नोरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधन अकादमी, भोपाल द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	5–6मार्च, 2021	आरसीवीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधन अकादमी, भोपाल में प्रत्यक्ष विधि	गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ के 06 प्रतिभागी	कुलपति, प्रोफेसर अंजिला गुप्ता ने, आईक्यूएसी (गुरु घासीदास विश्वविद्यालय) के निदेशक, स्कूल ऑफ स्टडीज ऑफ एजुकेशन के डीन, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्षऔर दो शिक्षकों के साथ "राष्ट्रीय शिक्षानीति2020 -थीम : 21वींसदीमेंशिक्षक शिक्षा के कायाकल्प" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।	1) शिक्षकों को **NEP–2020** को अपनाने के लिए प्रेरित करें 2)विश्वविद्यालयों में प्रत्येक कार्यक्रम की संरचना में एकरूपता बनाए रखने के लिए क्रेडिट के हस्तांतरण के लिए यूजीसी/नियामक निकायों द्वारा नियामक ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है।।
9.	शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा "राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020: उच्च शिक्षा में क्रियान्वयन रणनीति" पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी।	17 सितंबर, 2021	रजत जयंती सभागार, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर मेंप्रत्यक्ष विधि.	गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों ने भाग लिया	शिक्षकों और शोधछात्र	

10.	“सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के विकास में गुरुकुल शिक्षा का योगदान” विषय पर भारतीय नीति आयोग व शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।	28 सितंबर, 2021	रजत जयंती सभागार, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय , बिलासपुर मेंप्रत्यक्ष विधि।	गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों ने भाग लिया	शिक्षकों और शोध छात्र	

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के कार्यान्वयन में सर्वोत्तम अभ्यास

कार्यान्वयन विवरण

राष्ट्रीयशिक्षानीति, 2020 केकार्यान्वयन में सतत एवं श्रेष्ठतम अभ्यास

गुरुघासीदासविश्वविद्यालय, बिलासपुर16 जून, 1983 कोअविभाजितमध्यप्रदेशराज्यविधानसभाकेएकअधिनियमकेमाध्यमसेस्थापितएकराज्यविश्वविद्यालय है।गुरुघासीदासविश्वविद्यालयबिलासपुरमेंअरपानदीकेतटपरस्थितहै।संसदद्वारा 2009 मेंकेंद्रीयविश्वविद्यालयअधिनियम, 2009 के अन्तरगत इसेकेंद्रीयविश्वविद्यालयकादर्जादियागयाथा।17 वींशताब्दीकेसमाजसुधारकसतनामीगुरुघासीदासकेनामपरस्थापितयहएकअर्धआवासीय–सह–संबद्धविश्वविद्यालयहै, जोछत्तीसगढ़केबिलासपुरराजस्वसंभागपरक्षेत्रमेंस्थितहै।नैकनेविश्वविद्यालयकोग्रेडबीप्रदानकियाहै।विश्वविद्यालयअपने32 विभागोंमें36 स्नातक, 28 स्नातकोत्तर, 33 पीएचडी, 4 डिप्लोमाऔर2 सर्टिफिकेटकार्यक्रमप्रदानकरताहैजोकला, इंजीनियरिंगऔरप्रौद्योगिकी; जीवनविज्ञान; प्रबंधनऔरवाणिज्य; गणितीयऔरकम्प्यूटेशनलविज्ञान; प्राकृतिकसंसाधन; भौतिकविज्ञान; सामाजिकविज्ञानऔरकानूनजैसेविषयोंकीएकश्रृंखलासेसंबंधितहै।

NEP 2020 केक्रियान्वयनकेलिए, गुरुघासीदासविश्वविद्यालयनेएकटास्कफोर्सकागठनकियाहै।NEP 2020 केसंदर्भमेंविश्वविद्यालयनेमेंनिम्नलिखितसर्वोत्तमअभ्यासकियेहैं:

- विश्वविद्यालयद्वाराप्रस्तावितबहु–विषयकप्रकृतिमें16कार्यक्रमऔर31पाठ्यक्रमप्रदानकियाहै।
- सभीस्नातककार्यक्रमशैक्षणिकसत्र2021-22सेएलओसीएफआधारितहैं।सभीपीजीकार्यक्रमोंकेपासपीओज, सीओज, पीएसओहैं।
- औसतन, यूजीकार्यक्रमोंके23%पाठ्यक्रमऔरपीजीकार्यक्रमोंके34%पाठ्यक्रममेंअनुभवात्मकशिक्षणघटकहैं।प्रैक्टिकल/प्रोजेक्ट्स/इंटर्नशिपप्रोग्राम/निबंध/क्षेत्रकार्यप्रशिक्षणसभीकार्यक्रमोंकेपाठ्यक्रममेंशामिलकिएगएहैं।
- विश्वविद्यालयशैक्षणिकसत्र2022-23 सेमल्टीपलएंट्री–एग्जिटकेसाथ15 कार्यक्रमप्रदानकरेगा।
- एनआईआरएफरैंकिंगऔरएनएएसीप्रत्यायनबाधाओंकेकारणविश्वविद्यालयअकादमिकबैंकक्रेडिटकेलिएपंजीकरणनहींकरसका।इससंबंधमेंविश्वविद्यालयनेवीसीबैठककेदौरानएबीसीकेसाथरैंकिंगकोडीलिंककरनेकाप्रावधानकरनेकेलिएसुझावदिएहैं।
- एनएडी2014-2015सेलागूकियागयाहै।एनएसडीएलसे9696विद्यार्थियोंकाडाटाट्रांसफरकरडिजिलॉकरमेंअपलोडकियागयाहै।एनएडीकेतहतलगभग9960विद्यार्थीलाभान्वितहुएहैं।
- विश्वविद्यालयवर्तमानमेंस्वयंकेअन्तरगतएम. टेकमेंएकपाठ्यक्रमचलारहाहै।क्रेडिटट्रांसफरकेतहतपाठ्यक्रमोंकीसंख्याकोईनहींहैक्योंकिपाठ्यक्रमजारीहै।
- विश्वविद्यालययोगमेंएकप्रमाणपत्रकार्यक्रमचलारहाहै।इसकेअलावा, तीनकौशलविकास–आधारितकार्यक्रम2022-23 सेपेशकिएजानेकेलिएअनुमोदनकेलिएप्रस्तुतकिएगएहैं।नैनोटेक्नोलॉजी, नैनोसाइंसऔरएडवांसमैटेरियल्समेंपीजीप्रोग्रामऔरपरफॉर्मिंगआर्ट्स (बीपीए) औरफाइनआर्ट्स (बीएफए) मेंयूजीप्रोग्राममेंकौशलआधारितपाठ्यक्रमहैं।
- विश्वविद्यालयशैक्षणिकवर्ष2022-23सेक्षेत्रीयभाषामेंतीनकार्यक्रमोंकीपेशकशकरेगा।
- NEP 2020कोसुचारूरूपसेऔरसफलतापूर्वकलागूकरनेकेलिएविश्वविद्यालयनेNEP पर10कार्यक्रमआयोजितकिएहैं।

- NEP 2020 टास्कफोर्सऔर08 उपसमितियोंनेNEP 2020 केप्रभावीकार्यान्वयनकेलिएसूक्ष्मविवरणऔरविकसितरणनीतिकयोजनाओंऔरलक्ष्योंपरकामकियाहै।

किएगएप्रयास:

1. परीक्षाप्रणालीमेंसुधार

   प्रत्येकसेमेस्टरकेदौरानसंबंधितअध्यादेशोंऔरविनियमोंकेअनुसारव्यापकनिरंतरआधारपरमूल्यांकनकियाजाएगा।एकरूपताकेउद्देश्यसेसभीअध्ययनशालाओंद्वाराअपनाईजानेवालीपरीक्षाकीएकसमानप्रक्रियाहोगी।मूल्यांकनकेदोघटकहोंगे, 30% आंतरिकमूल्यांकन (सततव्यापकमूल्यांकन–सीसीए) और70% अंतिमसेमेस्टरपरीक्षाकेलिएहोगा।सीसीएपाठ्यक्रमकेलिएउपयुक्तएकयाअधिकमूल्यांकनउपकरणलगासकताहै।छात्रोंकोमूल्यांकनकीप्रकृतिकेबारेमेंपहलेसेसूचितकियाजानाचाहिए।पाठ्यक्रमकोसंभालनेवालेशिक्षकद्वारा2 सततआंतरिकमूल्यांकन [एकरचनात्मकमूल्यांकन (एफए) औरएकयोगात्मक (एसए)] आयोजितकियाजाएगा।येआकलनछात्रोंकीउपलब्धि/प्रदर्शनकोमापनेकेलिएगहनसीखने, सोचऔरप्रतिबिंबकोबढ़ावादेनेकेलिएहैं।

रचनात्मकमूल्यांकनएकविस्तृतविविधताकेतरीकोंकोसंदर्भितकरताहैजोशिक्षकएकपाठ, इकाईयापाठ्यक्रमकेदौरानछात्रकीसमझ, सीखनेकीजरूरतोंऔरशैक्षणिकप्रगतिकेप्रक्रियागतमूल्यांकनकरनेकेलिएउपयोगकरतेहैं।रचनात्मकमूल्यांकन (एफए) छात्रोंकोउनकीकमियोंकोठीककरनेयाउनपरध्यानदेनेकेबजायअपनीताकतपरनिर्माणकरनेकेलिएप्रोत्साहितकरनाहै।रचनात्मकआकलनछात्रोंऔरअभिभावकोंदोनोंकेलिएसीखनेकीअपेक्षाओंकोस्पष्टऔरजांचनेमेंमददकरसकताहै।एफएछात्रोंकोउनकीसीखनेकीजरूरतों, ताकतऔररुचियोंकेबारेमेंअधिकजागरूकबननेमेंमददकरेगाताकिवेअपनेस्वयंकेशैक्षिकविकासपरअधिकजिम्मेदारीलेसकें।प्रारंभिकमूल्यांकनकीविधिव्यावहारिकसत्रीयकार्यकेरूपमेंहोगी; व्यावहारिककौशलकाअवलोकन; मौखिकपरीक्षा; प्रश्नपूछना; साक्षात्कार; मौखिकप्रस्तुतियां; कम्प्यूटरीकृतअनुकूलीपरीक्षण; कक्षामेंचर्चा; प्रशिक्षकद्वारानिर्मितपरीक्षाएं; संगोष्ठीप्रस्तुतियाँ; क्लिकरप्रश्न; कम-दांवसमूहकार्य; समूहट्यूटोरियलकाम; 1-मिनटकाप्रतिबिंबलेखनकार्य; गृहकार्य; स्वयंऔरसहकर्मीआकलन; पाठ्यक्रमसमन्वयकोंद्वाराविशिष्टपाठ्यक्रमकेलिएआवश्यककोईअन्यविधि।

योगात्मकमूल्यांकनएकपरिभाषितनिर्देशात्मकअवधिकेसमापनपरछात्रसीखने, कौशलअधिग्रहणऔरअकादमिकउपलब्धिकामूल्यांकनकरनेकेलिएउपयोगकियाजाताहै–आमतौरपरएकपरियोजना, इकाई, पाठ्यक्रमयासेमेस्टरकेअंतमें।योगात्मकमूल्यांकनएककक्षापरीक्षण, असाइनमेंटयाप्रोजेक्टहोसकताहै, जिसकाउपयोगयहनिर्धारितकरनेकेलिएकियाजाताहैकिक्याछात्रोंनेवहसीखाहैजोउनसेसीखनेकीउम्मीदकीगईथीऔरलिखितपरीक्षाकेमाध्यमसेमूल्यांकनकियाजासकताहै; ओपनबुकटेस्ट; लेबोरेटरीकीरिपोर्ट; समस्याआधारितकार्य; व्यक्तिगतपरियोजनारिपोर्ट; केसस्टडीरिपोर्ट; टीमपरियोजनारिपोर्ट; साहित्यसर्वेक्षण; मानकीकृतपरीक्षण; पाठ्यक्रमसमन्वयकद्वाराकिसीविशेषपाठ्यक्रमकेलिएविशेषरूपसेडिजाइनकियागयाकोईअन्यशैक्षणिकदृष्टिकोण।

मूल्यांकनमेंनिरंतरनिष्पक्षता:

मूल्यांकनशिक्षाप्रणालीकाएकअभिन्नअंगहैक्योंकियहएकछात्रद्वारापूराकिएगएशैक्षणिकमानकोंकोपहचाननेऔरप्रमाणितकरनेऔरउन्हेंएकछात्रकेप्रदर्शनकेएकउद्देश्यऔरनिष्पक्षसंकेतककेरूपमेंदूर-दूरतकपेशकरनेमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभाताहै।इसप्रकार, यहसुनिश्चितकरनाविश्वविद्यालयकाअनिवार्यकर्तव्यबनजाताहैकिइसेनिष्पक्षतरीकेसेकियाजाए।इससंबंधमें, यूजीसीऔरNEP 2020जांचऔरसंतुलनकीनिम्नलिखितप्रणालीकीसिफारिशकरतेहैंजोविश्वविद्यालयोंकोमूल्यांकनऔरपरीक्षाकीप्रक्रियाकोप्रभावीढंगसेऔरनिष्पक्षरूपसेकरनेमेंसक्षमबनाएगी।सभीकार्यक्रमोंमेंविभिन्नसेमेस्टरमेंकमसेकम30 से50%

कोरपाठ्यक्रमोंकीपेशकशकेमामलेमें, सेमेस्टरकेअंतमेंसैद्धांतिकघटककामूल्यांकनविश्वविद्यालयकेबाहरसेपरीक्षाआयोजितकरनेवालेबाहरीपरीक्षकोंद्वाराकियाजानाचाहिए।परियोजनारिपोर्ट/थीसिस/निबंधआदिकेमूल्यांकनकेमामलेमेंकार्यपर्यवेक्षक/संरक्षककेमाध्यमसेविभागाध्यक्षकोप्रस्तुतकियाजाएगा।मूल्यांकनपर्यवेक्षक (30%) औरबाहरीपरीक्षक (50%) औरसंकायसदस्यों (20%) द्वाराप्रस्तुतपरियोजनारिपोर्ट/ थीसिस/शोधप्रबंधआदिऔरमौखिक/ प्रस्तुतिदोनोंकेआधारपरकियाजानाचाहिए।

गुरुघासीदासविश्वविद्यालयनेक्षमताविकासऔरकौशलवृद्धिकीपहलकेरूपमेंशैक्षणिकवर्ष2021-2022 सेपरिसरमेंभर्तीसभीडिग्रीकार्यक्रमोंकेछात्रोंकेलिएमूल्यवर्धितपाठ्यक्रम, विश्वविद्यालयवैकल्पिकपाठ्यक्रम, प्रमाणपत्रपाठ्यक्रमऔरऑनलाइनप्रमाणपत्रपाठ्यक्रमसहितअतिरिक्तक्रेडिटपाठ्यक्रमोंकोनियंत्रितकरनेवालेएकनियम तैयारकिएहैं।

गुरुघासीदासविश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़राज्यकाएकमात्रकेंद्रीयविश्वविद्यालयहैजोरोजगारपरकता/उद्यमिता/कौशलविकासऔरअभिनव, रचनात्मक, उत्पादकऔरयोगदानदेनेवालेनागरिकोंकेउत्पादनपरध्यानदेनेकेसाथछात्रद्वाराअतिरिक्तक्रेडिटप्राप्तकरनेमेंआमूल-चूलपरिवर्तनलानेकीयोजनाबनारहाहै।विश्वविद्यालयकीदृष्टिसमाजकीसेवाकेलिएज्ञानऔरप्रतिभासेलैसनागरिकोंकीबेहतरीननस्लतैयारकरनाहै।गुरुघासीदासविश्वविद्यालयविश्वस्तरकेमानकोंकेतहतशैक्षणिकअभ्यासकेबेंचमार्किंगकोप्राप्तकरनेकेलिएअग्रसरहै।विश्वविद्यालयअद्वितीयपाठ्यक्रमोंकेचयनमेंबहु-विषयक, लचीला, विविधऔरअवसरवादीक्रेडिटसुनिश्चितकरेगा।

येपांचप्रकारकेपाठ्यक्रमहैं

I. **विश्वविद्यालयअतिरिक्तक्रेडिटऐच्छिक (UACE):**विश्वविद्यालययाविभागइनपाठ्यक्रमोंकोज्यादातरपाठ्येतरगतिविधिपाठ्यक्रम (खेल/सांस्कृतिक/विभागीय/स्वच्छता/सामुदायिकसेवाएं/सरकारआधारितकार्यक्रमआदिगतिविधियोंमेंमदद) केरूपमेंपेशकरेंगे।इनपाठ्यक्रमोंकेलिएविश्वविद्यालयद्वाराकोईशुल्कनहींलियाजाएगा।येकेवलविश्वविद्यालयकेवास्तविकविद्यार्थियोंकेलिएउपलब्धहोंगे।

II. **मूल्यवर्धितपाठ्यक्रम (वीएसी) :शिक्षकऔरविभागद्वारापेशकियाजानेवालायहपाठ्यक्रम**उद्योगऔरसमाजकीमांगोंकोपूराकरनेकेलिएहैजोविद्यार्थियोंकोउसकीरुचिऔरयोग्यताविकसितकरनेकेअलावाबेहतरतरीकेसेतैयारकरेगा|।येपाठ्यक्रमआगेउनकेरेज़्यूमेमेंऔरमूल्यजोड़ेंगे।येपाठ्यक्रमकेवलविश्वविद्यालयकेवास्तविकविद्यार्थियोंकेलिएउपलब्धहोंगे।येपाठ्यक्रमविश्वविद्यालयकेदिशा-निर्देशोंकेअनुसारप्रभार्यहोंगे।

III. **सर्टिफिकेटकोर्स (सीसी) :** विशेषज्ञशिक्षक, पाठ्यक्रमसमन्वयककेरूपमें, शुल्ककेभुगतानपरविद्यार्थियोंऔरगैर-विद्यार्थियोंकोयेपाठ्यक्रमप्रदानकरेंगे।इनपाठ्यक्रमोंकोविशेषज्ञोंद्वाराडिजाइनकियाजाएगाताकिआजकेसबसेअधिकमांगवालेक्षेत्रोंमेंसफलहोने, विशिष्टजरूरतोंकोपूराकरने, बाहरखड़ेहोनेऔरकाममेंसफलहोनेकेलिएआवश्यकमहत्वपूर्णव्यावसायिककौशलकानिर्माणऔरवृद्धिकीजासके।

IV. **एनसीसी/एनएसएस/स्वच्छतासमर :** विश्वविद्यालयद्वारानिर्दिष्टदिशा-निर्देशोंकेअनुसारप्रतिभागियोंकोदोअतिरिक्तक्रेडिटआवंटितकिएजाएंगे।

V. **ऑनलाइनसर्टिफिकेटकोर्स (ओसीसी)** :गुरुघासीदासविश्वविद्यालयकेविशेषज्ञपाठ्यक्रमसमन्वयकद्वाराकेवलऑनलाइनप्लेटफॉर्मपरसर्टिफिकेटकोर्सेस

(न्यूनतम30 घंटेकीअवधि) प्रदानकियेजायेंगे।प्रारंभमेंयेपाठ्यक्रमकेवलगुरुघासीदासविश्वविद्यालयकेविद्यार्थियोंकेलिएउपलब्धहोंगे।

अधिकलचीलेपनऔरबहुविषयकछात्रकेंद्रितदृष्टिकोणकेसाथLOCF औरNEP-2020 परआधारितनएपाठ्यक्रमडिजाइनकेअनुसारएकविषयमेंऑनर्सकेसाथस्नातककीडिग्रीनिम्नलिखितपाठ्यक्रमसंरचनाकेसाथप्रदानकीजाएगी।

- 14मुख्यपाठ्यक्रम
- 04सामान्यऐच्छिकपाठ्यक्रम (जीई)
- 03अनुशासनविशिष्टवैकल्पिक (डीएसई) पाठ्यक्रम
- 05क्षमतावृद्धिपाठ्यक्रम (एईसी)
- 02कौशलसंवर्धनपाठ्यक्रम (एसईसी)
- 01निबंध / परियोजना
- 01संगोष्ठी
- 01इंटर्नशिप
- अतिरिक्तक्रेडिटपाठ्यक्रम (विश्वविद्यालयद्वाराअधिसूचित)
- ऑनलाइनएमओओसीपाठ्यक्रम (यूजीसी/विश्वविद्यालयकेदिशानिर्देशोंकेअनुसार)

इंटर्नशिप :

इंटर्नशिपसीखनेकाएकपेशेवरअनुभवहैजोएकछात्रकेअध्ययनकेक्षेत्रयाकैरियरकीरुचिसेसंबंधितसार्थक, व्यावहारिककार्यप्रदानकरताहै।इंटर्नशिपएकछात्रकोकैरियरकीखोजऔरविकास, औरनएकौशलसीखनेकाअवसरदेताहै।यहनियोक्ताकोकार्यस्थलमेंनएविचारऔरऊर्जालाने, प्रतिभाविकसितकरनेऔरभावीपूर्णकालिककर्मचारियोंकेलिएसंभावितरूपसेएकपाइपलाइनबनानेकाअवसरप्रदानकरताहै।

इंटर्नशिपमेंयहशामिलहै

- एकअंशकालिककार्यअनुसूचीजिसमेंलिखितदस्तावेजकाएकभागरिपोर्टकेरूपमेंशामिलहै।
- विशिष्टक्षेत्रसेसंबंधितकार्यअनुभवकेलिएएकस्पष्टपरियोजनाविवरणप्रदानकरताहै।
- व्यावसायिकपाठ्यक्रमोंकेलिएछात्रकोसंगठन, उसकीसंस्कृतिऔरप्रस्तावितकार्यअसाइनमेंटआदिकीओरउन्मुखकरताहै।

- सीखनेकेलक्ष्योंकोविकसितकरनेऔरहासिलकरनेमेंविद्यार्थीकीमददकरताहै।

CU to become center of self-supporting and inclusive development: VC

Central Chronicle News

Bilaspur, May 25: Guru Ghasidas Vishwavidyalaya (Central University) is working to preserve the cultural heritage, traditional folk arts, glorious historical heritage and glorious history of Chhattisgarh. The Academic Planning, Development and Monitoring Board constituted in the University will establish the University as a center for self-supporting and inclusive development. This statement was given by the Honorable Vice-Chancellor of the University, Sir Professor Alok Kumar Chakrawal in the first meeting of Academic Planning, Development and Monitoring Board held on 25th May, 2022 at 10 am in the meeting hall of the administrative building.

The meeting began with the lighting of the lamp by the guests and offering flowers to the idol of Maa Saraswati. After the welcome address in the meeting, APDMB member and Officer on Special Duty (Development Section), Prof. Manish Shrivastava introduced the topic.

Presiding over the meeting, Hon'ble Vice-Chancellor, Professor Alok Kumar Chakrawal said that the university is developing rapidly in the fields of academics, research, and innovation. Since assuming charge, it is my endeavor that our students make Chhattisgarh strong by marching on the path of self-reliance. He said that Academic Planning, Development and Monitoring Board is working in detail on the scheme of self-reliant Chhattisgarh, in which positive and constructive suggestions are being given by subject experts of every field.

Member of Academic Planning, Development and Monitoring Board, Prof. Manish Srivastava presented various points in the meeting for the consideration of the members. The topics of MoUs signed with various institutions, opening of new departments, CSR policy, opening of Bio Research Development and Training Center, opening of central research facilities, scheme related to infrastructure development as per National Education Policy 2020, establishment of Mahima Guru Peeth and self-supporting Chhattisgarh were discussed in detail.

The purpose of the Academic Planning, Development and Monitoring Board is to periodically review short-term / long-term plans and submit necessary suggestions. The board has been constituted on November 22, 2021.

At the end, the vote of thanks was presented by the Registrar of the University, Prof Shailendra Kumar. In the meeting were present the Deans of various schools, officials, Harish Kediya, President, Small and Cottage Industries Association as external expert and Deputy Secretary Diksha Rajput nominated by UGC through online medium, Samarendra Singh nominated by Chhattisgarh Government and Prof. GK Agarwal and Prof. Seema Chauhan from Government Engineering College.

इंटर्नशिपमेंप्रोजेक्टवर्क, सब्जेक्ट–स्पेसिफिकस्किलकोर्स, इंटर्नशिप, समरइंटर्नशिप, फील्डसाइट्सकाभ्रमण, भ्रमण, औद्योगिकभ्रमण, औद्योगिकप्रशिक्षण, अनुसंधानगतिविधियां, औरव्यावहारिकआधारपरविशिष्टडिग्रीप्रोग्रामकेलिएआवश्यकअन्यविषयभीशामिलहोसकतेहैं।पेशेवरकौशल–आधारितनौकरी–उन्मुखशिक्षाकोबढ़ानेकेलिएगुरु घासीदास विश्वविद्यालयनेसभीस्नातकडिग्रीकार्यक्रमोंकेलिएइंटर्नशिपअनिवार्यकरदियाहै।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालयनेशैक्षणिकसत्र2021-2022 सेयूजीडिग्रीकार्यक्रमोंकेलिए51 नएक्षमतावृद्धिपाठ्यक्रमऔर41 नएकौशलवृद्धिपाठ्यक्रमशुरूकिएहैं।

स्नातकोत्तरकार्यक्रममेंओपनऐच्छिककापरिचय : गुरु घासीदास विश्वविद्यालयनेअध्ययनशालाओंमेंविद्यार्थियोंकेलिएनए30 खुलेवैकल्पिकपाठ्यक्रमपेशकिएहैं।ओपनऐच्छिकएकअनिवार्यपेपरहै, जोविभिन्नविभागोंद्वाराप्रस्तुतकियाजाताहै, जोविद्यार्थियोंकोसामान्यदक्षताप्रदानकरताहै।ओपनऐच्छिकपाठ्यक्रमोंकोपाठ्यक्रमोंकेपूलकेरूपमेंकिसीभीविषयसेचुनाजासकताहै।आमतौरपरजोखिमलेनेकेइरादेसेएकअसंबंधितअनुशासनसेचुनेगएवैकल्पिकपेपरकोओपनइलेक्टिवकहाजाताहै।इनपाठ्यक्रमोंकोएकअसंबंधितअनुशासनकाप्रदर्शनप्रदानकरनेकेइरादेसेतैयारकियागयाहै।

एकाधिक निकास-प्रवेश विकल्प के साथ क्रेडिट का अकादमिक बैंक

प्रभावी कार्यान्वयन के लिए रोडमैप

एकाधिक प्रवेश–निकास विकल्प के साथ एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) का प्रभावी कार्यान्वयन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने शिक्षा मंत्रालय की स्वीकृति से उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को लागू करने के लिए कई कदम उठाए हैं। सबसे चर्चित आयामों में से एक है, अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी), जिसमें एकाधिक प्रवेश–निकास प्रणाली है, जिसकी कल्पना और प्रारूपण उच्च शिक्षा संस्थान में छात्रों के पाठ्यक्रम प्रारूप और अंतरविषयक और या बहु–विषयक शैक्षणिक गतिशीलता में लचीलेपन को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रीय सुविधा के रूप में किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का लक्ष्य उद्योग अंतरफलक पाठ्यक्रम (Industry interface programme)के साथ-साथ असीमित, समस्या मुक्त, समग्र ज्ञान की ओर उन्मुख और संरचित परिभाषित पथ प्रदान करना है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इन प्रक्रियाओं से अपने लक्ष्यों की प्राप्ति होगी, शिक्षा मंत्रालय और यूजीसी ने नियमों के तहत क्रेडिट स्थानांतरण प्रणाली बनाया गयी है.जिसका उद्देश्य एकाधिक प्रवेश –एकाधिक निकास विकल्पों के सिद्धांत पर काम करते हुए छात्रों को डिग्री, डिप्लोमा या किसी भी शैक्षणिक योग्यता को प्राप्त करने के लिए स्वयं ही सीखने का रास्ता चुनने की सुविधा प्रदान करना है।

अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि इसके तहत समावेशी अंतरविषयक और बहु–विषयक पाठ्यक्रमों को एकीकृत करते हुए रचनात्मकता, नवाचार, सोच की उत्कृष्टता तथा आलोचनात्मक विश्लेषण को बढ़ावा मिलेगा। एबीसी से विभिन्न उच्च शिक्षा विषयों या संस्थानों में अध्ययन के कार्यक्रमों, पाठ्यक्रम में लचीलेपन और नवाचार के लिए व्यापक विकल्प मिलने से छात्रों को महत्वपूर्ण स्वायत्तता मिलेगी।

इसका उद्देश्य देश भर में उच्च शिक्षा में छात्र केंद्रित, विद्यार्थी के अनुकूल दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है और एकाधिक प्रवेश–निकास विकल्प के साथ या बहु–विषयक पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देना है। एबीसी छात्रों को उनकी योग्यता और ज्ञान के अनुरूप सर्वोत्तम पाठ्यक्रमों या पाठ्यक्रमों के संयोजन का चयन करने में सक्षम बनाता है। यह छात्रों को उनकी डिग्री लेने के साथ ही विशिष्टता तथा विशेषज्ञता प्राप्त करने की भी सुविधा देता है।

छात्र–केंद्रित एबीसी कई लोगों के लिए आदर्श साबित होगा, जो वर्तमान में शैक्षणिक स्वतंत्रता में कमी या विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के साथ काम करने की इच्छा के बावजूद पाठ्यक्रमों और क्रेडिट के बीच तालमेल बिठाने में असमर्थता महसूस करते हैं। अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट पंजीकृत उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा दिए गए क्रेडिट को छात्र के शैक्षणिक बैंक

खाते में जमा करेगा और ऐसे क्रेडिट की वैधता आयोग द्वारा समय–समय पर जारी किए गए मानदंडों और दिशानिर्देशों के अनुसार होगी। राष्ट्रीय योजनाओं जैसे स्वयं, एनपीटीईएल, वी–लैब आदि या किसी निर्दिष्ट उच्च शिक्षा संस्थान के माध्यम से ऑनलाइन मोड के माध्यम से छात्रों द्वारा किए गए पाठ्यक्रमों को भी क्रेडिट हस्तांतरण और क्रेडिट संचय के लिए वैध माना जाएगा। एबीसी का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि व्यावसायिक डिग्री या डिप्लोमा या पीजी डिप्लोमा या सर्टिफिकेट प्रोग्राम करने वाले छात्र, जो पंजीकृत उच्च शिक्षा संस्थानों से कौशल पाठ्यक्रमों में क्रेडिट प्राप्त करेंगे उसका भी संचयन तथा प्रोग्राम में क्रेडिट छूट के लिए उपयुक्त माना जायेगा.

एक छात्र जो किसी एक संस्थान (डिग्री प्रदान करने वाला संस्थान) में एक कोर्स के लिए नामांकित किया जाता है और उसी दौरान वह अपने पसंद के किसी अन्य संस्थान (उच्च शिक्षा के पंजीकृत संस्थान) में भौतिक अथवा ऑनलाइन मोड से कोई अन्य कोर्स में क्रेडिट अर्जित करने के लिए भी मान्य नामांकित किया जा सकता है. यह अकादमिक जगत के गतिविधियों को संचालित करने तथा ताउम्र सीखने का अवसर प्रदान करने के लिए संस्थानों के एकीकरण को भी सुनिश्चित करता है. यह विद्यार्थियों के सीखने के लिए औपचारिक या अनौपचारिक रूप से, पूर्णकालिक या अंशकालिक मोड़ में एक अतिरिक्त सुविधा है । इसमें किसी भी क्रेडिट पाठ्यक्रम (सैद्धांतिक/ व्यावहारिक/ परियोजना आदि) में जाने का विकल्प है.

एबीसी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों की सक्रिय और गतिशील भूमिका की आवश्यकता है,ताकि विद्यार्थी इसका अधिकतम लाभ उठा सकें. एबीसी में प्रावधान की गई की सुविधा के माध्यम से शैक्षणिक संस्थान, युवाओं के सीखने की आवश्यकता को पूर्ण करने और उन्हें वैश्विक स्तर पर दक्षताओं और कौशल के साथ सशक्त बनाने तथा सामजिक व आर्थिक रूप से संबल व सक्षम बनाने के लिए कार्यक्रमों की विस्तृत श्रृंखला संचालित करते हैं.

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने एमईई के साथ अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट को लागू करने के लिए एमईई के लिए पहले ही विनियम और दिशा–निर्देश जारी कर दिया है तथा उच्च शिक्षण संस्थानों को इस योजना को लागू करने के लिए कार्यवाही करने की सलाह दी गयी है. इनमें एबीसी पर उच्च शिक्षा संस्थानों (एचईआई) का पंजीकरण, छात्र क्रेडिट

का डेटा अपलोड करना, छात्रों के बीच जागरूकता अभियान चलाना और उन्हें एबीसी पोर्टल पर अकादमिक बैंक खाता खोलने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है. जिन विद्यार्थियों ने एबीसी पर अपना पंजीकरण कराया है, उन्हें सभी फार्मों पर अपनी एबीसी आईडी को लिखने की अनुमति दी जानी चाहिए.

हालांकि, यूजीसी द्वारा विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थान के शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए एबीसी सुविधा का प्रभावी कार्यान्वयन, जैसे पाठ्यक्रम पंजीकरण, क्रेडिट जमा, क्रेडिट हस्तांतरण, डिग्री देने वाले संस्थानों द्वारा क्रेडिट अनुमोदन और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि डिज़ाइन की गई डिग्री के लिए छात्रों की पसंद के चयन की आवश्यकता के लिए कार्यवाही की गयी हैं. लेकिन इसके सुचारू रोड मैप बनाने तथा संचालित करने में उच्च शिक्षण संस्थानों, विशेष रूप से अकादमिक नेतृत्वकर्ता, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है।

यहां, कुछ सामान्य रोडमैप का सुझाव दिया गया है जो एबीसी सुविधा के कार्यान्वयन को सीधे तौर पर आगे बढ़ाता है। यह विद्यार्थियों को उनकी पसंद के अनुसार डिग्री, डिप्लोमा, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स करने के लिए एक लचीला, अंतरविषयक पाठ्यक्रम को करने की व्यापक स्वायत्तता प्रदान करता है: इस दिशा में पहला कदम उन कार्यक्रमों की पहचान करना है, जहां संस्था एबीसी सुविधा को लागू करना चाहती है। इसके पश्चात, एबीसी सुविधा को लागू करने में रुचि रखने वाले उच्च शिक्षण संस्थान, पाठ्यक्रम पंजीयन की अनुमति के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर सकते हैं तथा सामान्य विनियम को लागू करने के लिए सहमत हो सकते हैं। तदनुसार, डिग्री प्रदान करने वाले मौजूदा अध्यादेशों को विनियम में निर्धारित प्रावधानों को शामिल करने के लिए उचित रूप से संशोधित किया गया है। इस तरह के प्रावधानों के बाद, भाग लेने वाले उच्च शिक्षण संस्थानों को अंतरविषयक, बहु–विषयक और ऐसे सभी पाठ्यक्रम संचालित करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए, जो विद्यार्थियों को समृद्ध बनाता है और पंजीकृत एचईआई में एबीसी विनियमन के माध्यम से पाठ्यक्रम में पंजीकरण करने वाले छात्रों के लिए अतिरिक्त सीटों का उचित प्रावधान करता है। इस तरह की सुविधा का विवरण सभी भाग लेने वाले एचईआई की वेबसाइटों पर होगा और प्रत्येक पंजीकृत उच्च शिक्षण संस्थान, छात्रों को डिग्री डिजाइन, पाठ्यक्रम विकल्प और पंजीकरण आदि के बारे में मार्गदर्शन करने के लिए एक छात्र सहायता केंद्र स्थापित करेगा। सारांशतः, एबीसी सुविधा को लागू करने के लिए विनियमन को शामिल करने के लिए अध्यादेशों में संशोधन, सामान्य विनियम का मसौदा तैयार करना, पाठ्यक्रम पंजीयन के लिए उपलब्ध पाठ्यक्रमों की सूची की पहचान करने, क्रेडिट ट्रांसफर के माध्यम से और अधिसूचित पाठ्यक्रमों के लिए एबीसी सुविधाएं शुरू करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने की आवश्यकता है। यह वर्तमान सत्र से किया जा सकता है,बशर्ते

संस्थान सक्रिय रूप से एक साथ आएं और यूजीसी दिशा निर्देशों के अनुसार एबीसी विनियमन और एकाधिक प्रवेश–निकास विकल्पों के नियामक प्रावधानों को लागू करें।

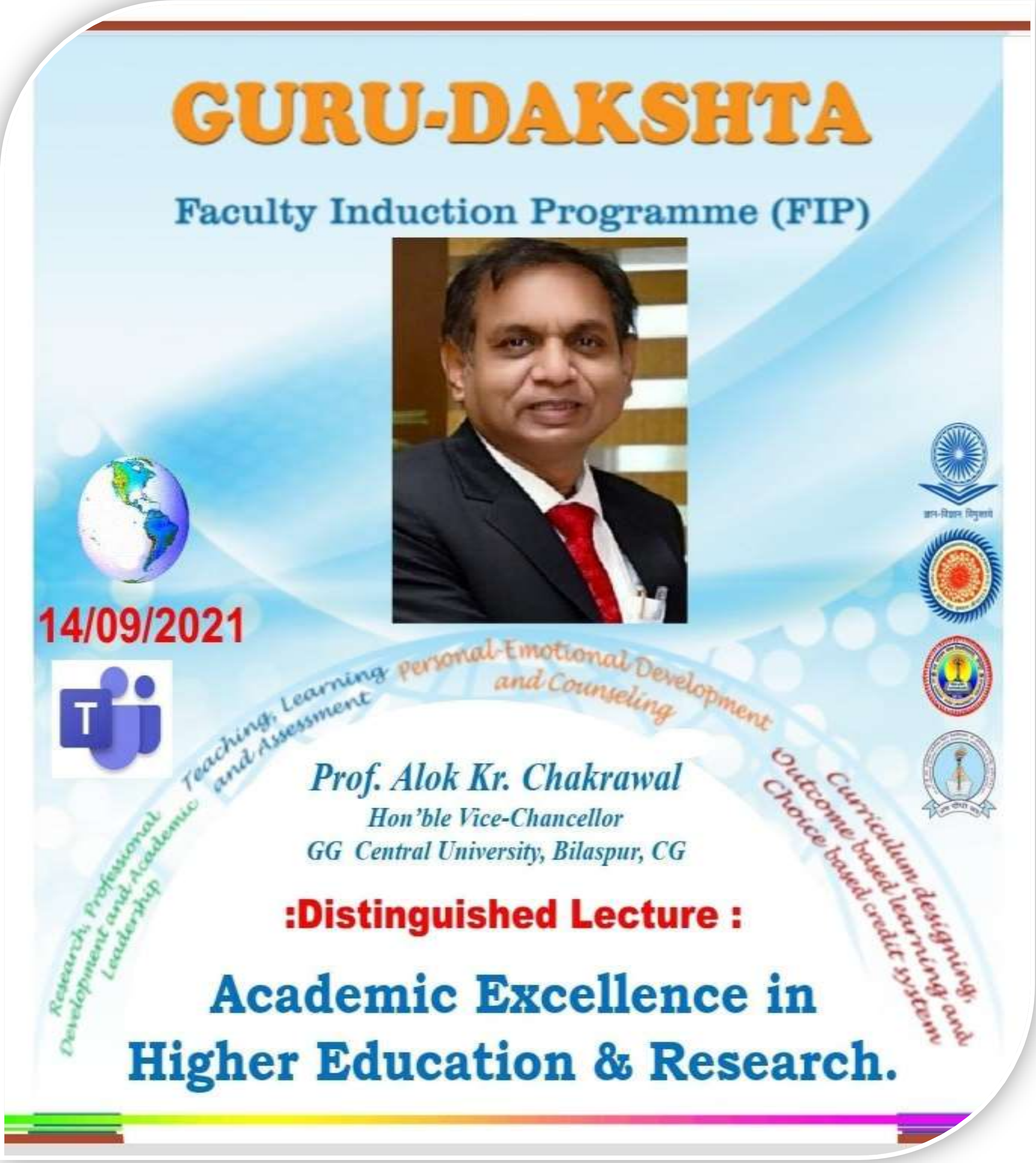
GURU-DAKSHTA
Faculty Induction Programme (FIP)
14/09/2021
Teaching, Learning and Assessment
Personal-Emotional Development and Counseling
Research, Professional Development and Academic Leadership
Curriculum designing, Outcome based learning and Choice based credit system
Prof. Alok Kr. Chakrawal
Hon'ble Vice-Chancellor
GG Central University, Bilaspur, CG
:Distinguished Lecture :
Academic Excellence in
Higher Education & Research.

TheHitavada
Raipur City Line | 2022-07-06 | Page- 4
ehitavada.com

Roadmap for effective implementation of Academic Bank of credits

■ By Prof Alok Kumar Chakrawal

GUEST COLUMN

UNIVERSITY Grant Commission (UGC) in concurrence with Ministry of Education has taken several steps to implement national Education Policy - 2020 in higher education. One of the most discussed dimensions is Academic bank of Credits (ABC) with multiple entry-exit system which has been conceived and designed as a national facility to promote flexibility of curriculum framework and interdisciplinary and or multidisciplinary academic mobility of students across higher education institution in the country.

The goal of NEP-2020 is to provide limitless, hassle-free, well oriented and structured defined path of holistic knowledge with industry interface curriculum. To ensure that these processes must reach to its goals, Ministry of Education and UGC has given appropriate credit transfer mechanism created through regulations. It intends to facilitate students to choose their own learning path to attain degree, diploma or any academic qualification, working on the principle of multiple-entry-multiple exit options.

ABC has been designed in such a way that enhanced creativity, innovation, higher order of thinking and critical analysis integrating interdisciplinary and multi-disciplinary courses under academic bank of credit facility. ABC shall provide significant autonomy to students by providing extensive choice of courses for programme of study, flexibility in curriculum, novel and engaging course options across a number of higher education disciplines or institutions.

The objectives of are to promote student centric, learner-friendly approaches in higher education across the country promoting more inter-disciplinary and multi-disciplinary with multiple-entry-multiple exit option. ABC enables students to select the best courses or combination of courses to suit their aptitude and quest for knowledge. It facilitates students to tailor their degrees or make specific modifications or specialization.

The student-centric ABC would be ideal for many who at present feel a deprivation in academic freedom or the inability to juggle between courses and credits along with a desire to doddle with different educational institution. The academic bank of credits shall deposit credits awarded by Registered Higher Education Institution, for courses pursued therein, in the academic bank account of the student and the validity of such credits shall be as per norms and guidelines issued by the commission from time to time. Courses undergone by the students through the online modes through national schemes like SWAYAM, NPTEL, V-Lab etc. or of any specified higher education institution shall also be considered for credit transfer and credit accumulation. Important aspect of ABC is that the credits obtained by the students by undergoing Skill courses from registered higher education institutions offering vocational degree or diploma or PG Diploma or Certificate programmes are also eligible for accrual and redemption of credits through the academic bank of credits.

A student can be enrolled for a programme in one institution (awarding institution) and simultaneously be enrolled for courses of her/his choice in multiple institutions (Registered HEI) for earning credits in the physical and/or online mode. This ensures an enhanced integration of institutions for conducting academic activities and facilitates lifelong learning opportunities. An added advantage is that the learners have the option to either learn formally and/or informally in full-time and/or part-time modes, and go for any credit course (theory/practical/project etc), excepting the core courses.

Effective implementation of ABC needs proactive and dynamic role of higher educational institutions to leverage its optimal benefits for the learners. The educational institutions through ABC facility can offer a wide range of programs to satisfy the learning needs of the youth and empowering them with the global competencies and skills and enabling them to become socially and economically relevant.

University Grants Commission has already issued regulation and guidelines for MEE to implement Academic Bank of Credits with MEE. Higher Education Institution have been advised to take action to implement the scheme. These include the Registration of Higher Education Institutions (HEI) on ABC, uploading data of student credit, organizing awareness campaign among the students and encourage them for opening Academic Bank Account on ABC PORTAL. Students who have registered on ABC should be allowed to write their ABC id on all examination forms.

However, despite these actions taken by UGC, effective implementation of ABC facility for academic programs of various HEIs, such as course registration, credit deposit, credit transfer, credit approval by awarding institutions and most importantly, students choice selection for the designed degree requires a smooth roadmap, wherein the role of HEIs, especially their academic leaders, faculty and students becomes very important.

Herein, some general roadmap is suggested that makes the implementation of ABC facility straight forward. It provides a flexible, interdisciplinary and extensive autonomy to learners for designing degree, diploma, post graduate diploma or certificate as per their choice. The first step in this direction is identifying the programs where institution wants to implement ABC facility. Thereafter, the HEIs having common interest in implementing ABC facility may sign MoU for permitting course registration, agree to incorporate common regulation. Accordingly, the existing ordinances governing the award of degree are appropriately modified to incorporate the provisions laid down in the regulation. After such provisions, the participating HEIs should make all out efforts to provide interdisciplinary, multidisciplinary and all such courses that enriches the learners and makes appropriate provisions of supernumerary seats for students registering in the course through ABC regulation in the registered HEI. The details of such facility will be on the websites of all participating HEIs and each registered HEI shall establish a student support centre for guiding the students about the degree design, course options and registration, etc. Summarily, the amendments in ordinances for incorporating regulation for implementing ABC facility, drafting a common regulation, identifying the list of courses available for course registration through credit transfer and signing of MoU for starting ABC facilities for notified courses is required. This can be done from the current session provided institutions are proactively come together and implement the regulatory provisions of ABC regulation and multiple entry-exit options as per UGC guidelines.

(The writer is Vice-Chancellor, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur)

Powered by iDocuments

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवीन और क्रांतिकारी पहल है एबीसी : प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल

स्वावलम्बी छत्तीसगढ़

एक अवधारणा

स्वावलम्बी छत्तीसगढ़

एक अवधारणात्मक टिप्पणी

एक आदर्श शिक्षा प्रणाली से न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करने की उम्मीद की जाती है, बल्कि विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाने की मानसिकता भी तैयार करने की होती है। वर्तमान भारतीय शिक्षण प्रणाली, जो ब्रिटिश राज की एक मजबूत विरासत थी, अब वह शिक्षित, लेकिन बेरोजगार युवाओं को तैयार कर रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस बात को समझते हुए शिक्षित, ज्ञानवान और कौशलयुक्त मानव शक्ति तैयार करने के लिए शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन का प्रारंभ कर दिया है। अब समय आ गया है कि हम कुछ अलग सोचें और रोजगार के लिए शासन तथा अन्य क्षेत्रों पर शिक्षित युवाओं की निर्भरता को कम करने के लिए कुछ रणनीति विकसित करें। एक शिक्षा प्रणाली को न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करने वाला होना चाहिए, बल्कि उसे आत्मनिर्भर युवा शक्ति का पोषण और विकास भी करना चाहिए। इसी संदर्भ को ध्यान में रखकर स्वावलंबी छत्तीसगढ़ की अवधारणा उभरी है।

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ : एक अवधारणा

उपरोक्त चर्चाओं को देखते हुए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर राज्य का एक मात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय होने के नाते, यह मानता है कि उसकी जिम्मेदारी है और उसके पास क्षमता भी है कि वह इसे बनाने में अपना योगदान दे तथा आत्म निर्भर युवा शक्ति तैयार करे।

हमारा मानना है एक युवा जो उच्च शिक्षा के लिए अपना नामांकन करवाता है, उसके पास इतना समय होता है कि कम से कम अपनी शिक्षा पर व्यय के लिए, वह खुद को किसी उद्योग अथवा किसी अन्य क्षेत्र से जोड़कर कुछ धनार्जन करें तथा आत्मनिर्भर बनें।

यह विश्वास इस धारणा पर भी आधारित है कि उद्योग और कॉर्पोरेट क्षेत्र को भी एक ऐसे कार्यबल की आवश्यकता होती है जो कुछ अंशकालिक कार्य करने के लिए उचित तौर पर शिक्षित हों। इनमें से कुछ अंशकालिक कार्य करनेवाले युवाओं को उनकी ईमानदारी, नियमितता और अन्य प्रदर्शन मानदंडों के आधार पर नियमित आधार पर नियुक्त भी किया जा सकता है।

उद्देश्य

स्वावलम्बी छत्तीसगढ़ कार्यक्रम का मूल उद्देश्य छत्तीसगढ़ के उच्च शिक्षा के संस्थानों में एक ऐसा सक्षम वातावरण बनाना है, ताकि छात्रों को प्रारंभ से में अपने शैक्षणिक खर्च को वहन करने में सक्षम तथा बाद में अपने जीवनयापन हेतु आत्मनिर्भर बनाया जा सके।आत्मनिर्भर छत्तीसगढ़ कार्यक्रम कॉर्पोरेट तथा व्यावसायिक घरानों के साथ एक जीवंत और गतिशील जुड़ाव की कल्पना करता है।

संभावित लाभ

1. उद्योग के साथ गतिशील जुड़ाव के कई संभावित लाभ हो सकते हैं. छात्र अपनी शिक्षा ग्रहण करते हुए अंशकालिक कार्य कर सकते हैं और इस प्रक्रिया से गुजरते हुए अपने माता–पिता को सहयोग कर सकते हैं।
2. अंशकालिक कार्यानुभव छात्रों को व्यावहारिक वास्तविक जीवन के कार्यानुभवों में मददगार साबित हो सकता है, जो उनके कौशल विकास एवं आत्मविश्वास को बढ़ा सकता है।
3. उद्योगों के साथ जुड़ाव, उद्योगों को श्रमशक्ति के लिए उनकी अस्थायी, अल्पकालिक जरूरतों को पूरा करने के लिए एक योग्य कार्यबल भी प्रदान करेगा।
4. उद्योगों को यह अवसर भी प्रदान करेगा कि वे नियमित रोजगार हेतु योग्य व्यक्तियों की पहचान कर सकते हैं।
5. उद्योगों के साथ काम करने से छात्रों को भी वास्तविक कार्यक्षेत्र के वातावरण में कार्य करने के लिए तैयार रहने का अनुभव मिलेगा।
6. उद्योगों के साथ जुड़ाव से पाठ्यक्रम को उद्योगों के अनुकूल बनाने के लिए आवश्यक सामग्री मिलेगी ।

कार्य योजना

इस कार्यक्रम को लागू करने के लिए स्थानीय उद्योगपतियों और व्यापारिक घरानों की सक्रिय भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए विशिष्ट कार्य योजना इस प्रकार है।

1. उद्योग घरानों, व्यावसायिक घरानों के साथ विचार–विमर्श करने और कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए उनकी प्रतिपुष्टि प्राप्त करने के लिए बातचीत करना।
2. औद्योगिक और व्यावसायिक घरानों के एक सम्मेलन की व्यवस्था करना।
3. कार्यक्रम के कार्यान्वयन तथा अवधारणा की जानकारी प्रदान करने हेतु अधिष्ठाता तथा विभागाध्यक्षों के साथ बातचीत।
4. उद्योगों की आवश्यकताओं, उनकी रुचि के क्षेत्र के साथ छात्र और उसकी रुचि के साथ आवश्यकताओं का मिलान करने हेतु राज्य में विभिन्न उद्योगों को जोड़ने वाले पोर्टल का निर्माण करना।

स्वावलंबी छत्तीसगढ़

(दैनिक भास्कर में प्रकाशित खबर)

छात्रों को रोजगार से जोड़ने सीयू में स्वावलंबी छत्तीसगढ़ पोर्टल पर पंजीयन शुरू

बिलासपुर। गुरु घासीदास सेंट्रल यूनिवर्सिटी में स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के स्वरूप ने मूर्त रूप ले लिया है। सीयू की वेबसाइट पर स्वावलंबी छत्तीसगढ़ पोर्टल पर पंजीयन करने लिंक https://swavalambi-chhattisgarh-ggv-g3uh y.ondigitalocean.app / जारी कर दिया है। कुलपति प्रो. आलोक चक्रवाल ने स्वावलंबी छत्तीसगढ़ को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने के साथ ही विद्यार्थियों के [illegible] के साथ [illegible] कुलसचिव सहित स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के संयोजक एवं विभिन्न विद्यापीठों के अधिष्ठाताओं के साथ बैठक की। इस पोर्टल पर छात्रों को सर्वप्रथम यूजर आईडी बनाना होगा। इसके बाद पंजीयन के लिए नाम, कोर्स का नाम, उच्च शिक्षण संस्थान का नाम, अध्ययन की शाखा, अनुक्रमांक, रोल नंबर, [illegible] का [illegible], लिंग, जन्म तिथि, अपने विषय में संक्षिप्त विवरण, प्रोफाइल का नाम, पाठ्यक्रम प्रारंभ एवं समाप्ति की [illegible] आदि की जानकारी दर्ज करनी होगी। उल्लेखनीय है कि इस पोर्टल को इस स्वरूप में डिजाइन किया गया कि नियोक्ता, कंपनी या व्यक्ति स्वयं का पंजीयन कर पोर्टल पर उपलब्ध डाटाबेस के माध्यम से विद्यार्थियों से संपर्क कर सकते हैं। रोजगार की इन संभावनाओं को देखते हुए विद्यार्थी कंपनी की आवश्यकता के अनुरूप आवेदन कर सकेंगे। इस पोर्टल पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता को मेंटर बनाया गया है, जो विद्यार्थियों और नियोक्ताओं के बीच [illegible] का कार्य करेंगे। कंपनी एवं विद्यार्थियों से मिलने वाले फीडबैक का विश्लेषण करेंगे। अभिनव पहल के इस संकल्प के अंतर्गत विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रथम वर्ष से ही स्टार्ट अप के विषय में मूलभूत जानकारियां प्रदान कर उद्यमिता के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित करना है। विद्यार्थी अध्ययनकाल के दौरान किसी पर भार नहीं होगा साथ ही वो शिक्षा के साथ भी और शिक्षा के बाद की चुनौतियों के लिए स्वावलंबन, [illegible]

स्वावलंबी छत्तीसगढ़

(हरिभूमि में प्रकाशित)

सीयू के स्वावलंबी छत्तीसगढ़ पोर्टल पर पंजीयन प्रारंभ

हरिभूमि न्यूज ⏭ बिलासपुर

गुरू घासीदास सेंट्रल यूनिवर्सिटी के वेबसाइट पर स्वावलंबी छत्तीसगढ़ पोर्टल पर पंजीयन कराने के लिए विद्यार्थियों को लिंक प्रदान किया गया है। सेंट्रल यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने मई 2022 में इस योजना के विषय में विस्तार से चर्चा की थी जिसे अब विद्यार्थियों के लिए पंजीयन के लिए खोल दिया गया है।

यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. चक्रवाल ने स्वावलंबी छत्तीसगढ़ को पाठयक्रम का हिस्सा बनाने के साथ ही विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन के साथ धनार्जन का साधन बनाने के लिए रजिस्ट्रार सहित स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के संयोजक एवं विभिन्न विद्यापीठों के अधिष्ठाताओं के साथ बैठक की। कुलपति प्रो. चक्रवाल ने कहा कि स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के माध्यम से शिक्षक, विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रेरित करने के साथ ही संबंधित क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों से अवगत कराएं। उन्होंने कहा कि हमें विद्यार्थियों को अर्न व्हाइल लर्न की परिकल्पना पर शिक्षित करना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने हमें यह सुनहरा अवसर प्रदान किया है कि हम विद्यार्थियों को अध्ययनकाल से ही स्वावलंबी बनाने के लिए राष्ट्र निर्माण में सहयोगी होने की सकरात्मक भावना के लिए प्रेरित करें, ताकि विद्यार्थी भविष्य की चुनौती और अवसर दोनों के लिए तैयार रहें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निहित समग्र विकास पर केन्द्रित रोजगारपरक शिक्षा, कौशल विकास एवं आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने के उद्देश्य से इस वृहद कार्ययोजना को सरल, सुविधाजनक एवं विद्यार्थियों के लिए सुगम बनाने के लिए पोर्टल को डिजाइन किया गया है।

- रोजगार की संभावनाओं को देखते हुए विद्यार्थी कर सकेंगे आवेदन

इस पोर्टल को इस स्वरूप से डिजाइन किया गया कि नियोक्ता, कंपनी या व्यक्ति का पंजीयन कर पोर्टल पर उपलब्ध डाटाबेस के माध्यम से विद्यार्थियों से संपर्क कर सकते हैं। रोजगार की इन संभावनाओं को देखते हुए विद्यार्थी कंपनी की आवश्यकता के अनुरूप आवेदन कर सकेंगे।

Hands-On Lessons
Holistic Education
Manners
Critical Thinking Skills
Healthy Social Skills
Character Formation
Conflict Resolution Skills

Technology Use & Integration (23.1-23.13)
Institutional Restructuring & Consolidation (10.1-10.14)
TOWARDS A MORE HOLISTIC EDUCATION (11.1-11.13)
Optimal Learning Environments and Support for Students (12.1-12.10)
Motivated, Energised, and Capable Faculty (13.1-13.7)
Teacher Education (15.1-15.11)
Reimagining Vocational Education (16.1-16.7)
Professional Education (17.1-17.5)
Promoting high-quality research (18.1-18.9)
Effective Governance & Leadership (19.1-19.5)
Transforming the Regulatory System (20.1-20.15)
Promotion of Indian Languages, Arts, & Culture (22.1-22.15)

समाचार कवरेज

छात्रों ने कमाए 61 हजार, 13 की फीस जमा की जाएगी

एजुकेशन रिपोर्टर | बिलासपुर

सेंट्रल यूनिवर्सिटी में छात्र पढ़ाई के साथ-साथ आत्मनिर्भर बनने के गुण भी सीख रहे हैं। कोरोना के बाद छात्रों ने पढ़ाई के साथ प्रैक्टिकल कर मशरूम, केंचुआ खाद, एलोवेरा, कपड़े-धागा का उत्पादन किया। वहीं हस्त निर्मित मशरूम बनाए, प्राकृतिक गुलाल और साबुन का उत्पादन किया। साथ ही यूनिवर्सिटी के तालाब में मछली पालन कर 61 हजार 100 रुपए कमाए। अब इन पैसों से 13 छात्रों की फीस भरी जाएगी।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी के ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक विकास विभाग के अंतर्गत वर्ष 2018 में अध्ययन सह आय योजना की शुरुआत की गई थी। कोरोना महामारी के कारण बंद पड़ी थी। इन इकाइयों का संचालन पुनः कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल के निर्देशन शुरू हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पराज सिंह ने बताया कि विभाग द्वारा विभिन्न उत्पादन इकाइयों का कार्य शुरू किया है। इसमें छात्रों का समूह बनाया गया है। वर्ष 2020 में प्राप्त आय से 12 छात्रों की 42 हजार फीस जमा की गई थी। विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. दिलीप कुमार बताया कि कोरोना महामारी की वजह से उत्पादन इकाइयों को विगत दो वर्षों में संचालित करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा था, लेकिन छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने कुछ उत्पादन इकाइयों को पुनः संचालित किया जा रहा है।

TheHitavada
Chhattisgarh Line | 2022-06-10 | Page-4
ehitavada.com

Emphasis on making students self-dependent

■ Our Correspondent
BILASPUR, June 9

IN AN initiative taken under 'Swabalambi Chhattisgarh Abhiyan', a significant programme was held by the School of Engineering and Technology of Guru Ghasidas Central University (GGCU). Human resource professionals from institutions related to civil, software, industrial production, mechanical and chemical industries were present.

Vice Chancellor Professor Alok Kumar Chakrawal was the Chief Guest while Registrar Professor Shailendra Kumar, was Special Guest of the programme presided over by Dean of the School of Engineering and Technology Professor M K Singh. Convener of the programme was Head of Department of Computer Science and Engineering Dr Alok Kumar Singh Kushwaha.

In his brief address, Professor Alok Kumar Chakrawal lauded the Engineering and Technology School for their initiative towards providing a common platform for students and job providers in association with 'Swabalambi Chhattisgarh Abhiyan'.

Vice Chancellor Alok Kumar Chakrawal

He emphasized on making the students self-dependent with the help of newly launched self-reliant Chhattisgarh portal by the university. Professor Chakrawal told that the students of GGCU were making progress in every field and with the help of training system; they can prove to be excellent in corporate world.

He thanked the officers of corporate world for being a part of the conference and supporting 'Swavalambi Chhattisgarh Abhiyan'. Registrar Professor Shailendra Kumar, reviewing the overall development of GGCU in last few years, highly appreciated the entire team for promoting the self-supporting Chhattisgarh campaign. He said that under the guidance of Vice-Chancellor, the university was moving towards progress and holistic development.

Program Convener Dr Alok Kumar Singh Kushwaha welcomed all the guests and dignitaries and told how 'Swavalambi Chhattisgarh Abhiyan' can prove to be an important platform for our students to showcase their skills and get information. Dean Professor M K Singh informed about the placements of the School of Engineering and Technology. The main objective of the session was to inspire students towards culture of 'Learning, Unlearning and Relearning' which is important for the fast growing corporate landscape. The programme was conducted by Assistant Professor Raksha Pandey.

Powered by iDocuments

कार्यक्रम

वाराणसी में तीन दिवसीय अखिल भारतीय शिक्षा समागम का आयोजन

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के माध्यम से युवा बनेंगे आत्मनिर्भर

बिलासपुर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक चक्रवाल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य रोजगार लेने वाला नहीं बल्कि देने वाले युवाओं को तैयार करने का है। इसके अंतर्गत गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने पहल करते हुए युवा शक्ति विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वावलंबी छत्तीसगढ़ योजना शुरू की है।

वाराणसी में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन के अंतर्गत किए जा रहे सकारात्मक प्रयासों एवं बेस्ट प्रैक्टिसेज के विषय में प्रो. चक्रवाल ने व्याख्यान दिया। वाराणसी के कन्वेंशन सेंटर में आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय शिक्षा समागम का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। शिक्षा समागम में देश के प्रतिष्ठित उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रमुखों को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. चक्रवाल ने कहा कि मुझे यह बताते हुए हर्ष और गौरव हो रहा कि स्वावलंबी छत्तीसगढ़ योजना के क्रियान्वयन के लिए पोर्टल भी प्रारंभ कर दिया गया है। इस पर विद्यार्थी और कंपनियों ने पंजीयन शुरू कर दिए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अकादमिक उत्कृष्टता, आर्थिक विकास, मूल्य संवर्धन में हमारे अर्जित और उपलब्ध ज्ञान की प्रत्यक्ष भूमिका का एक रोडमैप है। एनईपी-2020 का उद्देश्य 21वीं सदी के कौशल और नवाचार, जटिल समस्याओं का समाधान, रचनात्मकता और डिजिटल साक्षरता को बढ़ाने के साथ-साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक विरासत के साथ विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना है। इस दौरान प्रो. चक्रवाल ने पहली बार पर अकादमिक बैंक आफ क्रेडिट योजना का भी जिक्र किया। एबीसी छात्रों को इस रूप में सक्षम बनाता है कि वे अपनी अभिरुचि एवं ज्ञान पिपासा के अनुसार श्रेष्ठ पाठ्यक्रमों या सटीक पाठ्यक्रम समूह का चयन कर सकें। यह छात्रों को अपनी पसंद के अनुसार विषय चयन कर उपाधि प्राप्त करने या विशिष्टिकरण का अवसर प्रदान करता है।

कुलपति प्रो. आलोक चक्रवाल।

नवभारत

Bilaspur City - 26 May 2022 - 26nya3

विद्यार्थी छत्तीसगढ़ को सशक्त बनाएं: प्रो. चक्रवाल

- मानिटरिंग बोर्ड की बैठक में कुलपति

नवभारत रिपोर्टर | बिलासपुर.

www.navabharat.news

गुरु घासीदास विवि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक लोक कलाओं, गौरवशाली ऐतिहासिक धरोहरों और वैभवशाली इतिहास को संरक्षित करने का कार्य कर रहा है. विश्वविद्यालय में गठित अकादमिक प्लानिंग, डेवेलपमेंट एंड मानिटरिंग बोर्ड विश्वविद्यालय को स्वावलंबी बहुआयामी विकास का केन्द्र के रूप में स्थापित करेगा.

यह वक्तव्य कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार चक्रवाल ने अकादमिक प्लानिंग, डेवेलपमेंट एंड मानिटरिंग बोर्ड की सुबह 10 बजे प्रशासनिक भवन सभा कक्ष में आयोजित पहली बैठक में दिया. बैठक की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो चक्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय में तीव्र गति से अकादमिक, शोध, अनुसंधान एवं नवाचार क्षेत्र में विकास हो रहा है. पदभार ग्रहण करने के पश्चात से मेरा प्रयास है कि हमारे विद्यार्थी स्वावलंबन के पथ पर अग्रसर होकर छत्तीसगढ़ को सशक्त बनाएं.

प्रो. मनीष श्रीवास्तव ने बैठक में विभिन्न बिंदुओं को सदस्यों के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत किया. विभिन्न संस्थाओं से किये गये एमओयू, नये विभागों को खोले जाने, सीएसआर पॉलिसी, बायो रिसर्च डेवेलपमेंट एंड ट्रेनिंग सेंटर खोले जाने, सेंट्रल रिसर्च फैसेलिटीज खोले जाने, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप अधोसंरचना विकास से संबंधित योजना, महिमा गुरु पीठ की स्थापना एवं स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई. इस बोर्ड का गठन 22 नवंबर, 2021 को किया गया है.

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ की योजना पर किया जा रहा कार्य

कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार चक्रवाल ने कहा कि अकादमिक प्लानिंग, डेवेलपमेंट एवं मॉनिटरिंग बोर्ड स्वावलंबी छत्तीसगढ़ की योजना पर विस्तार से कार्य कर रहा है जिसमें हर क्षेत्र के विषय विशेषज्ञों के द्वारा सकारात्मक एवं सृजनात्मक सुझाव दिये जा रहे हैं.

धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो. शैलेन्द्र कुमार ने किया. बैठक में विभिन्न विद्यापीठों के अधिष्ठातागण, अधिकारीगण, बाह्य विशेषज्ञ के रूप में हरीश केडिया, अध्यक्ष, लघु एवं कुटीर उद्योग संघ एवं ऑनलाइन माध्यम से यूजीसी द्वारा नामित उप सचिव दीक्षा राजपूत, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामित समरेन्द्र सिंह तथा शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रो. जी.के. अग्रवाल एवं प्रो. सीमा चौहान शामिल हुए.

हरिभूमि

बिलासपुर - बिलासपुर

26 May 2022

सीयू स्वावलंबी समावेशी विकास का केंद्र बनेगाः प्रो. चक्रवाल

बिलासपुर। केन्द्रीय विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक लोक कलाओं, गौरवशाली ऐतिहासिक धरोहरों और वैभवशाली इतिहास को संरक्षित करने का कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय में गठित अकादमिक प्लानिंग, डेवेलपमेंट एंड मॉनिटरिंग बोर्ड विश्वविद्यालय को स्वावलंबी समावेशी विकास का केन्द्र के रूप में स्थापित करेगा। यह बाते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने अकादमिक प्लानिंग, डेवेलपमेंट एंड मॉनिटरिंग बोर्ड की 25 मई को प्रशासनिक भवन के सभाकक्ष में आयोजित बैठक में कही। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय में तीव्र गति से अकादमिक, शोध, अनुसंधान एवं नावाचार क्षेत्र में विकास हो रहा है। उन्होंने कहा कि मेरा प्रयास है कि हमारे विद्यार्थी स्वावलंबन के पथ पर अग्रसर होकर छत्तीसगढ़ को सशक्त बनाएं। उन्होने कहा कि अकादमिक प्लानिंग, डेवेलपमेंट एवं मॉनिटरिंग बोर्ड स्वावलंबी छत्तीसगढ़ की योजना पर विस्तार से कार्य कर रहा है जिसमें हर क्षेत्र के विषय विशेषज्ञों द्वारा सकारात्मक एवं सृजनात्मक सुझाव दिए जा रहे हैं। बैठक में लघु एवं कुटीर उद्योग संघ के अध्यक्ष हरीश केडिया, ऑनलाइन माध्यम से यूजीसी द्वारा नामित उप सचिव दीक्षा राजपूत, छतीसगढ़ शासन द्वारा नामित समरेन्द्र सिंह तथा शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज के जीके अग्रवाल एवं प्रो. सीमा चौहान शामिल हुए।

हरिभूमि

बिलासपुर - बिलासपुर भूमि
9 Jun 2022

नई दिल्ली में दो दिवसीय विजिटर्स कांफ्रेंस का आयोजन

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ से बनेगा स्वावलंबी भारत: प्रो. चक्रवाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बिलासपुर

हम स्वावलंबी छत्तीसगढ़ परियोजना पर कार्य कर रहे हैं, जिसमें छात्र अध्ययन के साथ उद्यमिता के गुर सीखते हुए धनार्जन कर सकेंगे। स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के माध्यम से स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर भारत का निर्माण होगा। उक्त बातें गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में 7 जून से आयोजित दो दिवसीय विजिटर्स कॉन्फ्रेंस में केन्द्रीय विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुए कही। श्री चक्रवाल ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के माध्यम से युवा विद्यार्थियों को सक्षम बनाने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के माध्यम से विद्यार्थियों को कौशल विकास के साथ उद्यमिता के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करते हुए धनार्जन होगा। उन्होंने कहा कि स्वावलंबी छत्तीसगढ़ से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का पथ प्रशस्त होगा।

कांफ्रेंस में 161 केंद्रीय उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रमुख हुए शामिल, शिक्षा नीति 2020 के तहत विवि में हो रहा काम

दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित सीयू के कुलपति प्रो. चक्रवाल।

दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए

इस दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस में केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष सरकार, सचिव (उच्च शिक्षा) शिक्षा मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के चेयरमैन प्रो. एम. जगदीश कुमार, एआईसीटीई के चेयरमैन प्रो. अनिल सहस्त्रबुद्धे, विभिन्न केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति, आईआईटी एवं आईआईएम के निदेशक मौजूद थे।

उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका और जिम्मेदारियों पर चर्चा

इस कॉन्फ्रेंस में आजादी का अमृत महोत्सव में उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका और जिम्मेदारियों, उच्च शिक्षा संस्थानों की अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग, अकादमिक-उद्योग और नीति निर्माताओं के बीच सहयोग, एकीकरण स्कूल, उच्च और व्यावसायिक शिक्षा, प्रौद्योगिकी शिक्षा और अनुसंधान विषयों पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया। विजिटर्स कॉन्फ्रेंस में देश के 161 केंद्रीय उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रमुख ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से शामिल हुए। जिनमें 53 उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रमुखों ने भौतिक रूप में कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। वहीं अन्य वर्चुअली जुड़े। विजिटर्स कॉन्फ्रेंस 2022 के लाइव प्रसारण की ऑनलाइन व्यवस्था प्रशासनिक भवन के सभा कक्ष में की गई थी। इस दौरान विवि के प्रभारी कुलपति प्रो. अमित सक्सेना, कुलसचिव प्रो. शैलेन्द्र कुमार आदि मौजूद थे।

नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा

Bilaspur City - 07 May 2022 - 07nya 2

सीयू और उद्योग मिलकर करेंगे रोजगार सृजन

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ बनाने सीयू का संकल्प: प्रोफेसर चक्रवाल

■ **नवभारत रिपोर्टर** | बिलासपुर.
www.navabharat.news

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ की परिकल्पना को साकार करने का संकल्प गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार चक्रवाल ने लिया है. इस संबंध में उनकी अध्यक्षता में गत दिवस एक बैठक भी हुई जिसमें उन्होंने युवा विद्यार्थियों को रोजगार लेने वाला नहीं बल्कि रोजगार का सृजन करने वाला बनने की बात कही. राज्य के एकमात्र केन्द्रीय विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण से स्थानीय युवाओं के सर्वांगीण विकास के अपने सामाजिक दायित्वबोध के साथ स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के संकल्प को साकार करने के लिए प्रो. चक्रवाल ने शिक्षा जगत से जुड़े विशेषज्ञों के साथ मंथन किया. कुलपति ने कहा कि, छत्तीसगढ़ राज्य के युवाओं में असीम संभावनाएं हैं. हमें इन्हें पहचानने तथा कौशल विकास के जरिये इनकी प्रतिभा निखारने के साथ उद्यमिता के गुणों का विकास करते हुए स्वावलंबी बनाना है. बैठक में उन्होंने कहा कि कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता है बल्कि इसे संपादित करने वाला व्यक्ति कार्य के आकार, प्रकार, प्रतिष्ठा और ख्याति को निर्धारित करता है.

प्रथम वर्ष से ही स्टार्ट अप

इस संकल्प के अंतर्गत विद्यार्थियों को प्रथम वर्ष से ही स्टार्ट अप के विषय में मूलभूत जानकारियां प्रदान कर उद्यमिता के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित करना है. विद्यार्थी अध्ययनकाल के दौरान किसी पर भार नहीं होगा. विश्वविद्यालय और उद्योग जगत से जुड़े हुए विषय विशेषज्ञ विद्यार्थियों को उद्यमिता के क्षेत्र में मौजूद असीम संभावनाओं से अवगत कराने के साथ उनकी बारीकियों के विषय में जानकारी साझा करेंगे.

पाठ्यक्रमों में बदलाव भी

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ की परिकल्पना को साकार करने के लिए केन्द्रीय विश्वविद्यालय सीआईआई, फिक्की, एसोचैम, जिला उद्योग केन्द्र, जिला उद्योग संघ, सीए, सीएस, आईसीडब्ल्यूए, एमएसएमई एवं राज्य के प्रतिष्ठित उद्यमियों से विचार विमर्श के साथ उद्योगों के अनुसार विश्वविद्यालय में जारी पाठ्यक्रमों में आवश्यक बदलाव भी किये जाएंगे.

सीयू स्वावलंबी विकास का केंद्र बनेगा: प्रो. चक्रवाल

बिलासपुर| सेंट्रल यूनिवर्सिटी में बुधवार को अकादमिक प्लानिंग, डेवलेपमेंट एंड मॉनिटरिंग बोर्ड की पहली बैठक हुई। इसमें कुलपति प्रो. आलोक चक्रवाल ने कहा कि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक लोक कलाओं, गौरवशाली ऐतिहासिक धरोहरों और वैभवशाली इतिहास को संरक्षित करने का कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय में गठित अकादमिक प्लानिंग, डेवलेपमेंट एंड मॉनिटरिंग बोर्ड विश्वविद्यालय को स्वावलंबी समावेशी विकास का केंद्र के रूप में स्थापित करेगा। कुलपति प्रो. चक्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय में तीव्र गति से अकादमिक, शोध, अनुसंधान एवं नवाचार क्षेत्र में विकास हो रहा है। विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी विकास अनुभाग प्रो. मनीष श्रीवास्तव ने विभिन्न संस्थाओं से किए गए एमओयू, नए विभागों को खोले जाने, सीएसआर पॉलिसी, बायो रिसर्च डेवलपमेंट एंड ट्रेनिंग सेंटर खोले जाने, सेंट्रल रिसर्च फैसिलिटीज खोले जाने, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप अधोसंरचना विकास से संबंधित योजना, महिमा गुरु पीठ की स्थापना एवं स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रो. जीके अग्रवाल, प्रो. सीमा चौहान शामिल हुए।

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ बनाने के लिए सीयू में कार्ययोजना तैयार करने पर हुई चर्चा

बिलासपुर| गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय स्वावलंबी छत्तीसगढ़ की अभिनव परिकल्पना को साकार करने का संकल्प कुलपति महोदय प्रोफेसर आलोक कुमार चक्रवाल ने लिया है। इसके लिए एक वृहद

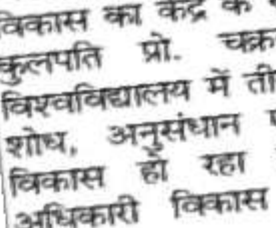

कार्ययोजना तैयार की जा रही है। जिसके संबंध में कुलपति की अध्यक्षता में 4 मई को सुबह 10 बजे बैठक आयोजित हुई। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित रोजगारपरक शिक्षा, कौशल विकास व आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने के उद्देश्य से कार्ययोजना को मूर्तरूप देने के लिए तीव्र गति से प्रयास शुरू किया गया। बैठक में राज्य के एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण से यहां के स्थानीय युवाओं के सर्वांगीण विकास के अपने सामाजिक दायित्वबोध के साथ स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के संकल्प को साकार करने के लिए कुलपति प्रो. चक्रवाल ने शिक्षा जगत से जुड़े हुए विशेषज्ञों के साथ मंथन किया। कुलपति ने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य के युवाओं में असीम संभावनाएं हैं। स्वावलंबी छत्तीसगढ़ में हमें इन्हें पहचानने व कौशल विकास के माध्यम से इनकी प्रतिभा को निखारने के साथ प्रस्तुतिकरण पर बल देते हुए उद्यमिता के गुणों का विकास करते हुए स्वावलंबी बनाना है। बैठक में उन्होंने कहा कि कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता है, बल्कि उस कार्य को संपादित करने वाला व्यक्ति कार्य के आकार, प्रकार, प्रतिष्ठा और ख्याति को निर्धारित करता है।

हरिभूमि

बिलासपुर - बिलासपुर भूमि

7 May 2022

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ बनाने सीयू का संकल्प: प्रो. चक्रवाल

सीयू और उद्योग मिलकर साकार करेंगे परिकल्पना, प्रदेश के युवाओं के सर्वांगीण विकास पर फोकस

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ के युवाओं में असीम संभावनाएं हैं। हमें इन्हें पहचानने और कौशल विकास के माध्यम से इनकी प्रतिभा को निखारने की जरूरत है। युवाओं में उद्यमिता के गुणों का विकास कर छत्तीसगढ़ को स्वावलंबी बनाना है। उक्त बातें गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक चक्रवाल ने कही। श्री चक्रवाल ने स्वावलंबी छत्तीसगढ़ का संकल्प लिया है। उन्होंने बताया कि इस परिकल्पना को साकार करने एक वृहद कार्ययोजना तैयार की जा रही है। इस संबंध में श्री चक्रवाल की अध्यक्षता में 4 मई को सुबह 10 बजे बैठक आयोजित की गई। बैठक में राज्य के एकमात्र केन्द्रीय विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण से यहां के स्थानीय युवाओं के सर्वांगीण विकास के साथ स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के संकल्प को साकार करने कुलपति प्रो. चक्रवाल ने शिक्षा जगत से जुड़े विशेषज्ञों के साथ मंथन किया।

श्री चक्रवाल युवाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में सक्रिय होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उनका मानना है कि युवा विद्यार्थियों को रोजगार लेने वाला नहीं बल्कि रोजगार का सृजन करने वाला बनना चाहिए। स्वावलंबी विद्यार्थी समाज के हित के साथ ही राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में अहम योगदान देता है।

उद्यमियों की सलाह पर पाठ्यक्रमों में करेंगे बदलाव

स्वावलंबी छत्तीसगढ़ की परिकल्पना को साकार करने केन्द्रीय विश्वविद्यालय सीआईआई, फिक्की, एसोचैम, जिला उद्योग केन्द्र, जिला उद्योग संघ, सीएसआर, आईसीएसआर, एमएसएमई एवं राज्य के प्रतिष्ठित उद्यमियों से विचार विमर्श के साथ उद्योगों के अनुसार विश्वविद्यालय में जारी पाठ्यक्रमों में आवश्यक बदलाव भी किए जाएंगे। बैठक में स्वावलंबी छत्तीसगढ़ योजना को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने राज्य एवं केन्द्रीय स्तर पर समन्वय एवं विश्वविद्यालय की आधोसंरचना के सुदृढ़ीकरण पर बल दिया गया।

एक्सपर्ट बताएंगे उद्यमिता की बारीकियां

विश्वविद्यालय और उद्योग जगत से जुड़े हुए विषय विशेषज्ञ विद्यार्थियों को उद्यमिता के क्षेत्र में मौजूद असीम संभावनाओं से अवगत कराने के साथ उसकी बारीकियों के विषय में जानकारी साझा करेंगे। बैठक में उद्योग और उद्योग के साथ समन्वय स्थापित कर कार्य करने का निर्णय लिया गया।

फर्स्ट ईयर से स्टार्ट अप पर जोर

विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रथम वर्ष से ही स्टार्ट अप के विषय में मूलभूत जानकारियां प्रदान कर उद्यमिता के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित करना है। विद्यार्थी अध्ययनकाल के दौरान किसी पर भार नहीं होगा। साथ ही वह भविष्य की चुनौतियों के लिए स्वावलंबन, साहस एवं बुद्धि कौशल से सक्षम होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने में आगे रहेगा सीयू: प्रो. चक्रवाल

बिलासपुर. गुरु घासीदास सेंट्रल यूनिवर्सिटी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने में अग्रणी संस्थान बनेगा. हमने इस कार्य के लिए 40 दिनों की समय सीमा तय की है, जिसमें क्रियान्वयन के प्रारूप को मूर्त रूप दिया जा सके. कामना है कि संत गुरु घासीदास जी की धरती का नाम राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर प्रतिमान के रूप में स्थापित हो. यह बातें सीयू के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: उच्च शिक्षा में क्रियान्वयन रणनीति विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में कहीं. विश्वविद्यालय के रजत जयंती सभागार में 17 सितंबर को सुबह 9.15 बजे से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया. शुरुआत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन समिति के संयोजक प्रो. बीएन तिवारी ने स्वागत उद्बोधन दिया. संगोष्ठी के समन्वयक डॉ. सीएस वझलवार ने राष्ट्रीय संगोष्ठी की रुपरेखा प्रस्तुत की. संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने कहा कि पदभार ग्रहण करने के पश्चात से ही मेरी प्राथमिकता में सबसे पहले राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को संपूर्ण स्वरूप में सीयू में लागू करना है. क्रियान्वयन समिति निरंतर सक्रियता के साथ प्रयासरत है कि हमारी यूनिवर्सिटी एनईपी-2020 को लागू करने वाले अग्रणी उच्च शिक्षण संस्थानों में से एक बने.

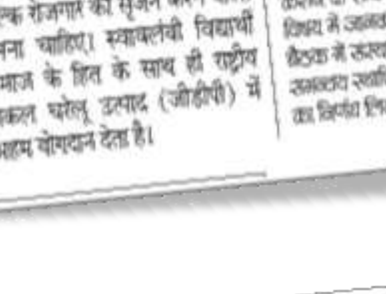

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: उच्च शिक्षा में क्रियान्वयन रणनीति विषय पर संगोष्ठी

शिक्षा राष्ट्र की नींव: कोठारी

शिक्षा राष्ट्र की नींव होती है जिसके आधार पर राष्ट्र का निर्माण होता है. शिक्षा का आधार सरल से कठिन की ओर होना चाहिए ताकि शिक्षा सभी के लिए सुलभ हो. अशोक कडेल, ओम प्रकाश शर्मा ने भी अपनी बातें रखी. आभार प्रदर्शन कुलसचिव प्रो. शैलेंद्र कुमार व संचालन सहायक प्राध्यापक डॉ. सोनिया स्थापक ने किया.

सुविधा

छात्र-छात्राओं को मिलेगा क्रेडिट अंक, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय में नए सत्र से व्यवस्था

सीयू में पहली बार एनएसएस को विषय के रूप में पढ़ेंगे विद्यार्थी

नईदुनिया एक्सक्लूसिव

वीरेंद्र सिन्हा • बिलासपुर (नईदुनिया)

[illegible]

2000 स्वयंसेवक बनाना लक्ष्य

[illegible]

कुलपति प्रो. चक्रवाल की पहल

[illegible]

विषय में ये तथ्य होंगे शामिल

[illegible]

एनएसएस को विषय के रूप में पढ़ने का प्रयास किया गया है। इसका काम अंतिम चरण में है। [illegible] क्रेडिट अंक भी मिलेगा। स्वयंसेवकों की संख्या 2000 करने का लक्ष्य है।

प्रो. आलोक चक्रवाल, कुलपति गुरु घासीदास केंद्रीय विवि

[illegible]

'Youths in Chhattisgarh have immense potential'

■ Our Correspondent

BILASPUR, May 8

GURU Ghasidas Central University (GGCU) Vice-Chancellor Professor Alok Kumar Chakrawal has taken a resolution to realise the innovative vision of self-supporting Chhattisgarh and for this a comprehensive action plan is being prepared. The Vice-Chancellor has started making efforts at a rapid pace to give shape to this mega action plan with the aim of realising the vision of employable education, skill development and self-reliant India contained in the National Education Policy-2020.

Professor Alok Kumar Chakrawal

The GGCU with a sense of social accountability and for the overall development of local youth and making self-supporting Chhattisgarh the Vice Chancellor brainstormed with experts associated with the education world during a meeting held recently. Professor Chakrawal said, "Youths in Chhattisgarh have immense potential. In a self-reliant Chhattisgarh, we have to make them self-reliant by developing and recognizing entrepreneurial qualities and honing their talent through skill development, emphasizing on presentation skills."

From the day he assumed office, the VC has been motivating the youths to be active in the field of entrepreneurship. Young students should not become job takers but job creators. He says that no work is small or big, but the person performing that work determines the size, type, prestige and reputation of the work. Self-supporting student contributes significantly to the national GDP along with the interests of the society.

Under this resolution, the students studying in university have to be motivated to work in entrepreneurship by providing basic information about start-ups from the first year itself. The students will not be a burden on anyone during the study period as they will be endowed with self-reliance, courage and intelligence skills for future challenges. Subject experts related to the university and industry will share information about the specifics entrepreneurship with the students along with making them aware of the limitless possibilities present in entrepreneurship. In a recent meeting, it was decided to work in co-ordination with the institute and the industry. In order to realize the vision of a self-reliant Chhattisgarh, GGCU will make necessary changes in the syllabus in consultation with Central Universities Confederation of Indian Industry (CII), FICCI, Associated Chambers of India Commerce and Industry of India (ASSOCHAM), District Industries Centre, District Industries Association, Chartered Accountants, Company Secretaries, Institute of Cost and Works Accountants of India (ICWA), Micro Small and Medium Enterprises (MSME) and as per the industry-wise needs. In the meeting emphasis was laid on co-ordination at state and central level and renewal of university infrastructure for successful implementation of self-supporting Chhattisgarh scheme.

नई शिक्षा नीति के तहत कभी भी बदल सकते हैं अपनी यूनिवर्सिटीः प्रो. आलोक

रविशंकर यूनिवर्सिटी की वर्कशॉप में राज्य के नामी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने रखे विचार

सिटी रिपोर्टर, रायपुर

मानव संसाधन विकास केन्द्र, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर दो दिवसीय कार्यशाला रखी गई। यहां राज्य की नामी यूनिवर्सिटीज के कुलपतियों ने विचार रखे। कार्यशाला में गुरु घासीदास केन्द्रीय विवि, बिलासपुर के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने अकादमिक बैंक क्रेडिट पर बात रखी। उन्होंने कहा, नई शिक्षा नीति के तहत विभिन्न शिक्षा संस्थाओं से अर्जित शैक्षणिक क्रेडिट डिजिटल रूप में संग्रहित होगा। छात्रों द्वारा अर्जित क्रेडिट को ध्यान में रखते हुए उन्हें डिग्री दी जाएगी। अब स्टूडेंट कभी भी विश्वविद्यालय बदलने का फैसला ले सकते हैं। इससे पुराने वर्षों में की जा चुकी पढ़ाई का नुकसान नहीं होगा। क्रेडिट बैंक में उपलब्ध अंक नए शिक्षण संस्थान में जुड़ेंगे। पढ़ाई पसंद न आने पर स्टूडेंट यूनिवर्सिटी बदलने का फैसला ले सकेंगे।

क्वालिटी एजुकेशन है मकसदः पं. रविवि के कुलपति प्रो. केशरी लाल वर्मा ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मकसद क्वालिटी एजुकेशन देना है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय आदिवासी विवि अमरकंटक के कुलपति प्रो. प्रकाश मणी त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों को न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण और सुरक्षित दुनिया के लिए सक्रिय योगदानकर्ता के रूप में भूमिका निभाने के लिये सशक्त बनाना है। देश के हर क्षेत्र में हर गांव में कुछ विशिष्टताएं होती हैं। इन विशिष्टताओं को राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर स्थापित करना शिक्षा नीति का उद्देश्य है। कार्यशाला में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विवि के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ला, हेमवती नंदन बहुगुणा विवि, गढ़वाल की कुलपति प्रो. अन्नपूर्णा नौटियाल, विकास केन्द्र के निदेशक प्रो. शैलेन्द्र सराफ व अन्य मौजूद रहे।

GGV will become an example of innovation in country, says Chakrawal

GGU implements NEP-2020 with innovative manner: V-C

■ **Staff Reporter**
RAIPUR, July 4

NATIONAL Education Policy (NEP-2020) is a much debated and deliberated transformative reform and a very positive step towards nation building. The Policy is a roadmap for knowledge transformation into value addition for economic growth and academic excellence among learners, said Prof Alok Kumar Chakrawal, Vice-Chancellor, Guru Ghasidas University (GGU), Bilaspur

For the University, implementation of NEP-2020 essentially means providing quality higher education to learners in a multidisciplinary eco-system and in a holistic manner as envisioned in NEP-2020.

Alok Kumar Chakrawal

GGU has started the journey for implementing NEP-2020 in an innovative manner, wherein the brain storming and churning of ideas among the faculty members, stake holders and interaction with national experts including well-known thinkers have resulted in the strategic plans and goals for implementing NEP-2020.

The marathon debate on how to institutionalise the outcome oriented higher education has resulted into learning outcome-based curriculum planning and development.

The Learning Outcome Curriculum Frameworks (LOCF) of UGC have been modified to align with NEP-2020. In GGV modified LOCF's based CBCS system is now operative.

GGU, situated in central tribal belt under Schedule 5 of Constitution of India, has made serious efforts for improving equity, access and inclusion, especially for tribal students and deprived classes in general. Establishment of Mahima Guru Chair, publication of the contribution of Bhagwan Birsa Munda in national uprising, bringing the contribution of unsung freedom warriors from tribal areas into the main stream are some such initiatives.

University has also designed four years Degree Programmes with multiple Entry-Exit Option and provisions of ABC. UGC Regulation for ABC and multiple entry/exit system have been adopted and amendment of relevant ordinances incorporating regulations for credit transfer under ABC, course registration, etc has been completed, said Vice-Chancellor.

The University has initiated an ambitious programme of contributing towards Swablambi Bharat through education named as Swablambi Chhattisgarh. In this programme, University has undertaken Self Reliant Chhattisgarh Programme through integrated approach. The whole idea is to provide learning opportunities to the students when they enter into the University thus providing them real life experience, opportunities for skill and capacity building, instilling their self-confidence and providing an eco-system that encourages them to become entrepreneurs.

11:41

facebook

Ministry of Education

53m ·

"#NEP2020 is a roadmap for knowledge transformation into value addition for economic growth and academic excellence among learners."

— Prof. Alok Kumar Chakrawal, VC, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur

GGU implements NEP-2020 with innovative manner: V-C

Staff Reporter
RAIPUR, July 4

NATIONAL Education Policy (NEP-2020) is a much debated and deliberated transformative reform and a very positive step towards nation building. The Policy is a roadmap for knowledge transformation into value addition for economic growth and academic excellence among learners, said Prof Alok Kumar Chakrawal, Vice-Chancellor, Guru Ghasidas University (GGU), Bilaspur

For the University, implementation of NEP-2020 essentially means providing quality higher education to learners in a multidisciplinary eco-system and in a holistic manner as envisioned in NEP-2020.

Alok Kumar Chakrawal

GGU has started the journey for implementing NEP-2020 in an innovative manner, wherein the brain storming and churning of ideas among the faculty members, stake holders and interaction with national experts including well-known thinkers have resulted in the strategic plans and goals for implementing NEP-2020.

The marathon debate on how to institutionalise the outcome oriented higher education has resulted into learning outcome-based curriculum planning and development.

The Learning Outcome Curriculum Frameworks (LOCF) of UGC have been modified to align with NEP-2020. In GGV modified LOCF's based CBCS system is now operative.

GGU, situated in central tribal belt under Schedule 5 of Constitution of India, has made serious efforts for improving equity, access and inclusion, especially for tribal students and deprived classes in general. Establishment of Mahima Guru Chair, publication of the contribution of Bhagwan Birsa Munda in national uprising, bringing the contribution of unsung freedom warriors from tribal areas into the main stream are some such initiatives.

University has also designed four years Degree Programmes with multiple Entry-Exit Option and provisions of ABC. UGC Regulation for ABC and multiple entry/exit system have been adopted and amendment of relevant ordinances incorporating regulations for credit transfer under ABC, course registration, etc has been completed, said Vice-Chancellor.

The University has initiated an ambitious programme of contributing towards Swablambi Bharat through education named as Swablambi Chhattisgarh. In this programme, University has undertaken Self Reliant Chhattisgarh Programme through integrated approach. The whole idea is to provide learning opportunities to the students when they enter into the University thus providing them real life experience, opportunities for skill and capacity building, instilling their self-confidence and providing an eco-system that encourages them to become entrepreneurs.

10

2 shares

आयोजन **संशोधित प्रत्यायन ढांचे पर नैक जागरूकता कार्यक्रम**

केंद्रीय विवि नवाचार की मिसाल बनेगा

एक दिवसीय कार्यशाला में उपस्थित कुलपति प्रो. आलोक चक्रवाल व अतिथि ● नईदुनिया

बिलासपुर(नईदुनिया प्रतिनिधि)। गुरु घासीदास केंद्रीय विवि देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शोध, अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में मिसाल बनेगा। यह बात संशोधित प्रत्यायन ढांचे पर नैक जागरूकता कार्यक्रम विषय पर राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. आलोक चक्रवाल ने कही।

रजत जयंती सभागार में ब्लेंडेड मोड(आनलाइन फेसबुक लाइव तथा यूट्यूब लाइव एवं आफलाइन) में हुआ। अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. चक्रवाल ने कहा कि यह पहला अवसर है जब नैक के तीन प्रतिनिधि एक साथ एक संस्थान में अपने मार्गदर्शन दे रहे हैं। कुलपति ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह प्रविधान किया गया है कि बिना प्रत्यायन के कोई भी उच्च शिक्षण संस्थान संचालित नहीं हो पाएगा। नैक का प्रत्यायन अनिवार्य होने जा रहा है, जो पहले स्वैच्छिक था। हमारा विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप नैक के प्रत्यायन के लिए सकारात्मक प्रयास कर रहा है। कार्यशाला में वाह्य विशेषज्ञों के रूप में डा. रुचि त्रिपाठी सहायक सलाहकार नैक ओवरआल असिसमेंट एंड एक्रिडेटेशन आफ नैक आइआइक्यूए विषय पर व्याख्यान दिया। डा. लीना गेहने उप सलाहकार नैक बैंगलोर ने एसएसआर एवं डीवीवी विषय पर जानकारी प्रदान की। डा. नीलेश पांडे सहायक सलाहकार नैक एसएसआर एंड पीयर टीम विजिट एंड लाजिस्टिक विषय के बारे में बताया।

अम्बिकावाणी

प्रतिबंधों का पलट-वार

सम्पादकीय

उच्च शिक्षा संस्थानों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) का कार्यान्वयन: गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर- सफलता की गाथा

TheHitavada

Chhattisgarh Line | 2022-02-06 | Page-4
ehitavada.com

Intl conference on 'Ancient Indian Knowledge System for Holistic Devpt in Science and Technology' held

Our Correspondent
BILASPUR, Feb 5

TWO-DAY International conference on 'Ancient Indian Knowledge System for Holistic Development in Science and Technology' was held recently by Department of Physics, Dr CV Raman University Kota, here. The sub-themes were Luminescence, Dielectric Behaviour of Materials, IOTs and Microwave Remote Sensing, Environmental Physics, Variable Antenna System, Astro Physics, Energy Engineering Applications, Meta Physics, Econo Physics, Spectroscopic Applications, Plasma Physics, Bio Physics, Soil Physics, Nano Particles, OLED and Sensors. This International Conference on virtual mode was organised in association with Indian Association of Physics Teachers, Raman Centre for Science Communication and IQAC.

Day one started with inaugural ceremony through you-tube link in which the chief guest was Dr Alok Kumar Chakrawal, Vice Chancellor, Guru Ghasidas Central University. There were six keynote speaker from the globally. The keynote speaker from Japan Dr Pankaj Koinkar delivered a talk on Strategies For Producing Two Dimensional Nanostructures Using Pulsed Laser Ablation Technique.

From Ambikapur Dr S K Shrivastava focused on Impact of Microwave Dielectric Behaviour of Soil in Agriculture. From Jodhpur, Professor O P N Calla Ex Director ISRO, Director ICRS, presented Utilisation of Microwave Remote Sensing. From Bilaspur, Professor P K Bajpai, Professor, Guru Ghasidas Central University delivered extempore lecture with PPT presentation on Ancient Indian Concept of Physical World-Need To Revisit The Holistic Vedic System For Sustainable and Liberal Education. From Russia, Dr K Gurushankar delivered a lecture on Plant Based Phytoconstituents in Ancient Indian Knowledge System and from Dubai Dr Vikram Rajendra Awate presented Fundamental of Luminescence with PPT presentation. In present scenario there is need to revisit the holistic Vedic system for sustainable and liberal education.

Keynote speakers presented very nicely in relation to holistic development. In nine session more than eight hundred Scholars were connected thorough the world. Two hundred Abstract and more than fifty research papers have been received by the Scholars. Seventy one research papers have been presented. The enthusiastic presenters were from Egypt, Nepal, Nigeria, Haryana, Guwahati, Odissa, Uttarakhand, Chhattisgarh, Gujarat, Maharashtra, Karnataka, Rajasthan, Madhya Pradesh, Bihar, Jharkhand, Jammu, Punjab, and Himachal Pradesh. Professor R P Dubey, Vice Chancellor Dr C V Raman University expressed that now there is need to holistic development in every field and this Conference will provide a new step for society. Gaurav Shukla Registrar, Dr C V Raman University extended his greetings towards participants as well as Scholars for their interest and inclination for such type of innovative ideas. Dr A K Shrivastava President, Indian Association of Physics Teachers and Head of Department of Physics stated that this International Conference will prove mile stone in the field of research for the larger interest of human being. Convener Dr M Z Khan was connected and vigilant throughout the Conference. On second day in valedictory function the chief guest Dr Shiv Varan Shuka, Chairman Chhattisgarh Private University Regulatory Commission, guest of honour Dr Lalit Prakas Pateria Shahid Nand Kumar Patel University Raigarh extended their greetings to participants. Dr Jayati Chatterjee Pro Vice Chancellor said that there is need of hour for such type of International Conference. Dr Arvind Tiwari Dean Academic, Dr Manish Upadhyay DSW, Dr Ashutosh Pandey, Dr Ratnesh Tiwari, Vikas Mishra, Umakant Shrivastava, DV K Narasingham, Nitesh Kumar, Dr A K Thakur, Dr S K Tiwari, Rajesh Tiwari well connected at a stretch in the International Conference.

धर्म-समाज/बिलासपुर

भारतीय कलेवर में बनी है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: प्रो. चक्रवाल

कार्यक्रम ● सीवी रामन विश्वविद्यालय के राज्य स्थापना एवं यूनिवर्सिटी स्थापना दिवस पर आयोजित छत्तीसगढ़ी महोत्सव का हुआ समापन

TheHitavada
Chhattisgarh Line | 2022-06-02 | Page-3
ehitavada.com

organised in the presence of about 500 people. A short-film titled 'Sarika-

District-level capacity building workshop sessions were organised

stru
a pc

'GGCU working to preserve folk art, glorious heritage of State'

Our Correspondent
BILASPUR, June 1

"GURU Ghasidas Central University (GGCU) is working to preserve the cultural heritage, traditional folk arts and glorious historical heritage of Chhattisgarh.

The Academic Planning, Development and Monitoring Board (APDMB) constituted in the University will establish GGCU as a centre for self-supporting and inclusive development", asserted Vice-Chancellor of the University Professor Alok Kumar Chakrawal in the first meeting of APDMB held in the meeting hall of the administrative building here.

The meeting set off with the lighting the traditional lamps by the guests and Saraswati Vandana. After the welcome address APDMB member and Officer on Special Duty (Development Section) Professor Manish Shrivastava introduced the topic.

Presiding over the meeting Professor Alok Kumar Chakrawal said that the University is developing rapidly in the fields of academics, research and innovation. "Since assuming charge, it was my endeavor that our students make Chhattisgarh strong by marching on the path of self-reliance", he informed. He said that APDMB is working in detail on the scheme of self-reliant Chhattisgarh in which positive and constructive suggestions are being given by subject experts of every field.

Member of APDMB Professor Manish Srivastava presented various points in the meeting for the consideration of members.

The topics of Memorandum of Understanding (MoU) signed with various institutions like opening of new departments, Corporate Social Responsibility (CSR) policy, opening of Bio Research Development and Training Center, opening of central research facilities, scheme related to infrastructure development as per National Education Policy-2020, establishment of Mahima Guru Peeth and self-supporting Chhattisgarh were discussed in detail. The purpose of the APDMB is to periodically to review short and long-term plans and submit necessary suggestions. The board has been constituted on November 22, 2021.

At the end, a vote of thanks was proposed by Registrar Professor Shailendra Kumar.

Powered by iDocuments

TheHitavada
Raipur City Line | 2022-07-06 | Page-4
ehitavada.com

Roadmap for effective implementation of Academic Bank of credits

■ **By Prof Alok Kumar Chakrawal**

GUEST COLUMN

UNIVERSITY Grant Commission (UGC) in concurrence with Ministry of Education has taken several steps to implement national Education Policy - 2020 in higher education. One of the most discussed dimensions is Academic bank of Credits (ABC) with multiple entry-exit system which has been conceived and designed as a national facility to promote flexibility of curriculum framework and interdisciplinary and or multidisciplinary academic mobility of students across higher education institution in the country.

The goal of NEP-2020 is to provide limitless, hassle-free, well oriented and structured defined path of holistic knowledge with industry interface curriculum. To ensure that these processes must reach to its goals, Ministry of Education and UGC has given appropriate credit transfer mechanism created through regulations. It intends to facilitate students to choose their own learning path to attain degree, diploma or any academic qualification, working on the principle of multiple-entry-multiple exit options.

ABC has been designed in such a way that enhanced creativity, innovation, higher order of thinking and critical analysis integrating interdisciplinary and multi-disciplinary courses under academic bank of credit facility. ABC shall provide significant autonomy to students by providing extensive choice of courses for programme of study, flexibility in curriculum, novel and engaging course options across a number of higher education disciplines or institutions.

The objectives of are to promote student centric, learn-...r-friendly approaches in ...her education across the ...try promoting more ...sciplinary and multi-disciplinary with multiple-entry-multiple exit option. ABC enables students to select the best courses or combination of courses to suit their aptitude and quest for knowledge. It facilitates students to tailor their degrees or make specific modifications or specialization.

The student-centric ABC would be ideal for many who at present feel a deprivation in academic freedom or the inability to juggle between courses and credits along with a desire to doddle with different educational institution. The academic bank of credits shall deposit credits awarded by Registered Higher Education Institution, for courses pursued therein, in the academic bank account of the student and the validity of such credits shall be as per norms and guidelines issued by the commission from time to time. Courses undergone by the students through the online modes through national schemes like SWAYAM, NPTEL, V-Lab etc. or of any specified higher education institution shall also be considered for credit transfer and credit accumulation. Important aspect of ABC is that the credits obtained by the students by undergoing Skill courses from registered higher education institutions offering vocational degree or diploma or PG Diploma or Certificate programmes are also eligible for accrual and redemption of credits through the academic bank of credits.

A student can be enrolled for a programme in one institution (awarding institution) and simultaneously be enrolled for courses of her/his choice in multiple institutions (Registered HEI) for earning credits in the physical and/or online mode. This ensures an enhanced integration of institutions for conducting academic activities and facilitates lifelong learning opportunities. An added advantage is that the learners have the option to either learn formally and/or informally in full-time and/or part-time modes, and go for any credit course (theory/practical/project etc), excepting the core courses.

Effective implementation of ABC needs proactive and dynamic role of higher educational Institutions to leverage its optimal benefits for the learners. The educational Institutions through ABC facility can offer a wide range of programs to satisfy the learning needs of the youth and empowering them with the global competencies and skills and enabling them to become socially and economically relevant.

University Grants Commission has already issued regulation and guidelines for MEE to implement Academic Bank of Credits with MEE. Higher Education Institution have been advised to take action to implement the scheme. These include Registration of Higher Education Institutions (HEI) on ABC, uploading data of student credit, organizing awareness campaign among the students and encourage them for opening Academic Bank Account on ABC PORTAL. Students who have registered on ABC should be allowed to write their ABC id on all examination forms.

However, despite these actions taken by UGC, effective implementation of ABC facility for academic programs of various HEIs, such as course registration, credit deposit, credit transfer, credit approval by awarding institutions and most importantly, students choice selection for the designed degree requires a smooth roadmap, wherein the role of HEIs, especially their academic leaders, faculty and students becomes very important.

Herein, some general roadmap is suggested that makes the implementation of ABC facility straight forward. It provides a flexible, interdisciplinary and extensive autonomy to learners for designing degree, diploma, post graduate diploma or certificate as per their choice. The first step in this direction is identifying the programs where institution wants to implement ABC facility. Thereafter, the HEIs having common interest in implementing ABC facility may sign MoU for permitting course registration, agree to incorporate common regulation. Accordingly, the existing ordinances governing the award of degree are appropriately modified to incorporate the provisions laid down in the regulation. After such provisions, the participating HEIs should make all out efforts to provide interdisciplinary, multidisciplinary and all such courses that enriches the learners and makes appropriate provisions of supernumerary seats for students registering in the course through ABC regulation in the registered HEI. The details of such facility will be on the websites of all participating HEIs and each registered HEI shall establish a student support centre for guiding the students about the degree design, course options and registration, etc. Summarily, the amendments in ordinances for incorporating regulation for implementing ABC facility, drafting a common regulation, identifying the list of courses available for course registration through credit transfer and signing of MoU for starting ABC facilities for notified courses is required. This can be done from the current session provided institutions are proactively come together and implement the regulatory provisions of ABC regulation and multiple entry-exit options as per UGC guidelines.

(The writer is Vice-Chancellor, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur)

Powered by iDocuments

TheHitavada
Chhattisgarh Line | 2022-07-17 | Page-4
ehitavada.com

Institution, teachers play an important role in success of student: GGCU VC Chakrawal

■ Our Correspondent
BILASPUR, July 16

VICE Chancellor of Guru Ghasidas Central University (GGCU) Professor Alok Kumar Chakrawal was honoured by Department of Commerce of Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth, Varanasi, in the first alumni conference. On the occasion, Professor Chakrawal while expressing his gratitude to all for being felicitated said that it was a moment of pride for him.

"I was honoured on my return to the place from where I got my education. Institution and teachers play an important role in the success of a student", he told.

Professor Chakrawal said that it was not only the responsibility of alumni to provide financial assistance to the institute, but they must also visit the institute and provide information to the students about their experience, knowledge and current professional requirements so that the students studying there can be prepared for professional challenges learning from the invaluable experiences of the alumni.

Professor Chakrawal during meeting with Geshe Gwang Samten.

"The role of alumni has been given special importance in the National Education Policy (NEP)-2020 so that young students can become participants in employment-oriented education in the field of entrepreneurship", he mentioned.

In this event, the Journal of the Department of Commerce was released by the visiting guests. In the award ceremony, Vice Chancellor of Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth Professor AK Tyagi was also present.

Professor Chakrawal also met Geshe Gwang Samten, Vice Chancellor of Central Institute of Higher Tibetan Education, Varanasi. There was a detailed discussion between the two Vice Chancellors about the value based education and inclusive development of the students, as mentioned in the NEP-2020. It was agreed to work together in future to integrate and share the themes of Tibetan Studies, Astrology and various knowledge traditions in the curriculum.

Powered by iDocuments

अम्बिकावाणी

सम्पादकीय

उच्च शिक्षा संस्थानों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) का कार्यान्वयन: गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर- सफलता की गाथा

PM Modi amazes people with his amazing leadership skills: Prof. Chakrawal

- National seminar on the book 'Modi@20: Dreams Meets Delivery' organized at CU

बिलासपुर - बिलासपुर भूमि

7 Aug 2022

हरिभूमि

आजादी के 75 वें अमृत महोत्सव पर सेंट्रल यूनिवर्सिटी में कार्यशाला

अद्वितीय, अकल्पनीय और बेजोड़ है राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: चक्रवाल

संगोष्ठी/वेबिनार/कार्यक्रम आदि का आयोजन

Webinar: NitiAayog and BSM - Role of Indian Knowledge system, cultural values

"Learning Outcomes based curriculum framework"
विषय पर आयोजित कार्यशाला का प्रतिवेदन

अध्यक्ष–	प्रो0 अमित सक्सेना, माननीय कुलपति (प्रभारी)
	माननीय कुलसचिव
मंचासीन अतिथिगण	प्रो0 एल0वी0के0एस0 भास्कर
	प्रो0 पी0के0 बाजपेयी
	प्रो0 ए0एस0 रणदिवे

प्रो0 पी0के0 बाजपेयी जी ने माननीय कुलपति प्रो0 आलोक कुमार चकवाल के निर्देशन में विश्वविद्यालय में आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया और उपस्थित सभी विभागाध्यक्षों का स्वागत करते हुये आगे कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करने का आग्रह किया। आपने भगवान बिरसा मुंडा के जीवन को याद किया और उनकी महानता को नमन किया। साथ ही आपने आज की महत्वपूर्ण तिथि एकादशी के अवसर पर सभी को बधाई प्रेषित की। आगे आपने कार्यशाला की विषय वस्तु पर विचार डाले। जिसमें उच्च शिक्षा में LOCF के महत्व को रेखांकित करते हुये एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की।

— नवाचार के तहत बदलाव करते हुए शिक्षा के फ्रेमवर्क में बदलाव लाना।
— भारत की विविधता को ध्यान में रखते हुए इनको शिक्षा में शामिल करना।
— आगे उन्होंने निवेदन किया कि वक्ता अपने वक्तव्य में उपरोक्त बातों पर विशेष ध्यान निहित करें।

प्रो0 शैलेन्द्र कुमार (आदरणीय कुलसचिव) द्वारा सभागार में उपस्थित सभी का स्वागत किया और कार्यशाला में सभी की भागीदारी के लिए स्वागत किया। आपने CBCS सिस्टम में LOCF के लागू किये जाने पर विचार व्यक्त किये। अंत में आपने इस वर्कशाप के फलदायक होने की शुभकामनाएं व्यक्त की।

प्रो0 अमित कुमार सक्सेना, माननीय कुलपति (प्रभारी) जी ने माननीय कुलपति प्रो0 आलोक कुमार चकवाल जी का धन्यवाद करते हुए मंचासीन एवं सभागार में उपस्थित सभी का स्वागत किया और विश्वविद्यालय के द्वारा पाठ्यक्रम में LOCF के लागू किये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। आपने **"आओ करके सीखें"** का उदाहरण देते हुए शिक्षा में इसकी महत्ता बतायी। उन्होंनें आशा व्यक्त की कि कार्यशाला में LOCF से जुडे सभी बिन्दुओं पर चर्चा होगी और प्राप्त सुझाओं पर विचार करते हुये उन्हें लागू किया जायेगा।

धन्यवाद ज्ञापन — प्रो0 ए0एस0 रणदिवे, निदेशक, आई0क्यू0ए0सी0

प्रो0 ए0एस0 रणदिवे, निदेशक, आई.क्यू.ए.सी. द्वारा मंचासीन एवं सभागार में उपस्थित विद्वत्जनों का आभार व्यक्त किया। NEP और LOCF के संदर्भ में विश्वविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी देते हुये LOCF पर इस कार्यशाला में हमें निश्चित रूप से पाठ्यक्रम में सुधार करने में चुनौतियों पर चर्चा कर इन बिन्दुओं पर सुधार के लिए तैयार रहने हेतु आवाहन करते हुए इसे पूर्ण रूप से सफलतापूर्वक लागू करने हेतु प्रयत्न जारी रखने पर बल दिया।

तकनीकी सत्र

प्रथम वक्ता के रूप में — प्रो0 अनुपमा सक्सेना, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग ने अपने पाठ्यक्रम से जुडे LOCF के बिन्दुओं पर चर्चा की।

— आपने माननीय कुलपति प्रो0 आलोक कुमार चकवाल जी के निर्देशन के रूप में कार्य करने पर प्रसन्नता व्यक्त की और अपने विषय से संबंधित प्रस्तुतीकरण (PPT) दिया।

— हमने बाह्य विषय विशेषज्ञ के साथ एक माह के कठोर संघर्ष के बाद यह LOCF पर आधारित NEP पाठ्यक्रम को तैयार किया है।

— हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निर्धारित सभी मूल्यों को पाठ्यक्रम में निहित करने की कोशिश की है।

— LOCF 21वीं शताब्दी की आवश्यकता है। आपने विश्वविद्यालय में LOCF और NEP को लागू किये जाने से संबंधित आवश्यकताओं पर बल दिया जिसमें डिजिटल सुविधाएं, कम्प्यूटर लैब, स्मार्टक्लास रूम, रेग्यूलर टीचर, टीचर रूम आदि।

— टीचर वर्क लोड (2) विषय एक शिक्षक को (प्रति सप्ताह)। बाह्य विषय विशेषज्ञों को शामिल करना।

द्वितीय वक्ता के रूप में — प्रो0 अशोक मिश्रा, विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग ने वाणिज्य विषय में LOCF लागू किये जाने पर अपने विचार समस्याएं और दिशाएं पर चर्चा की।

तृतीय वक्ता के रूप में — डॉ0 नमिता शर्मा, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग ने LOCF पर अपने विचार व्यक्त किये।

चतुर्थ वक्ता के रूप में — डॉ0 संतोष सिंह ठाकुर, विभागाध्यक्ष, रसायनशास्त्र विभाग ने LOCF पर अपने विचार व्यक्त किये।

पंचम वक्ता के रूप में — डॉ0 एस0के0 शाही, विभागाध्यक्ष, वनस्पतिशास्त्र विभाग ने LOCF पर अपने विचार व्यक्त किये।

छठवें वक्ता के रूप में — डॉ0 सागर जायसवाल, विभागाध्यक्ष, विधि विभाग ने LOCF पर अपने विचार व्यक्त किये।

सप्तम वक्ताके रूप में — प्रो0 प्रतिभा जे0 मिश्रा ने LOCF पर अपने विचार व्यक्त किये।

अष्ठम वक्ता के रूप में — प्रो0 मुकेश सिंह ने अपने विचार व्यक्त किये। जिसमें आपने बताया कि अपने विभाग के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में आपने LOCF को लागू किया है।

<u>प्रेस रिपोर्ट</u>

- डॉ0 पुष्पराज सिंह — ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग
  - मत्स्यपालन, खाद्य संरक्षण, शोध प्रविधि
- डॉ0 एस0सी0 तिवारी — वानिकी विभाग
  - चतुवर्षीय पाठ्यकम, 182 केडिट (CBCS)
  - संप्रेषण कौशल एवं गणितीय अभिकियाओं को समाहित किया गया है।
  - अभियांत्रिकीय कौशल
- डॉ0 अनुराग चौहान — अग्रेजी विभाग
  - प्रवासी लेखन, उत्तरस्त्री विमर्श केन्द्रित नवीन पाठ्यक्रम लागू करने की प्राथमिकता बतायी।
- प्रो0 वी0डी0 रंगारी — भैषजिक विज्ञान विभाग
  - ए0आई0सी0टी0ई0 के निर्देशानुसार संचालित पाठ्यक्रम को लागू करने की बात की।
- डॉ0 बी0डी0 मिश्रा — प्रबंध अध्ययन विभाग
- प्रो0 प्रवीण मिश्रा — अर्थशास्त्र विभाग
  - पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप को स्थान दिया गया है।
  - भारतीय संस्कृति की महान विरासत को ओपन इलेक्टिव के रूप में रखने की बात की गई है।
- प्रो0 चन्द्रशेखर वझलवार — शिक्षा विभाग
  - शिक्षा विभाग के समस्त पाठ्यक्रम एन0सी0टी0ई0 के मार्गदर्शन में संचालित होते है। अतः वर्तमान LOCF मॉडल हेतु एन0सी0टी0ई0 के निर्देश की प्रतीक्षा है, यद्यपि प्रथम दृष्ट्या हमारा पाठ्यक्रम LOCF मॉडल के अनुकूल ही है।

प्रो0 पी0पी0 मूर्ति — गणित विभाग

प्रो0 नीलकंठ पाणिग्रही — मानवशास्त्र विभाग

- चुनौतियाँ यू0जी0सी0 नियमानुसार अध्यापकों की आवश्यकता
- विभाग में प्रयोगशाला, पुरातत्व संग्रहालय, सांस्कृतिक संग्रहालय, जीव विज्ञानिक प्रयोगशाला हेतु स्थान की कमी।
- इन सबकी कमी से छात्रों को उनकी आवश्यकता एवं मानसिकता के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में असुविधा।

सुझाव —

- यू0जी0सी0 नियमानुसार अध्यापकों की भर्ती
- तकनीकी पदों का निर्माण
- विभाग के लिए पृथक भवन

प्रो0 अमित सक्सेना — सी0एस0आई0टी0 विभाग

- कम्प्यूटर प्रयोगशाला एवं अध्यापकों की आवश्यकता

अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया कि LOCF का मूल उद्देश्य वास्तविक स्नातक एवं योग्य नागरिक निर्माण है। पाठ्यक्रम हमें इस प्रकार बनाना चाहिए कि एक रूप से विभिन्न धाराओं के विद्यार्थी समान रूप से लाभान्वित हो सकें।

कार्यक्रम 02 दिवस (प्रति दिवस) अपरान्ह 2.00 बजे से शायं 6.00 बजे तक आयोजित किया गया। उपस्थिति इस प्रकार रही :—

प्रथम दिवस — 85

द्वितीय दिवस — 126

राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – उच्च शिक्षा–क्रियान्वयन नीति

(दिनांक 17 सितम्बर 2021)

शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 17 सितंबर2021 कोसुबह 9.15 बजे, गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रजत जयंती सभागार में "**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – उच्च शिक्षा–क्रियान्वयन नीति**"विषयपर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अतिथियों द्वारा सर्वप्रथम सरस्वती माता की प्रतिमा एवं संत गुरु घासीदास जी के तैलचित्र पर पुष्प अर्पित किए गए और दीप प्रज्वलित किया गया।इस दौरानतरंग बैंड के विद्यार्थियो ने सरस्वती वंदना एवं विश्वविद्यालय कुलगीत की मनमोहक प्रस्तुति दी गयी उसके बादमंच पर अतिथियों का स्वागत छोटे पौधों से किया गया। विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020टास्क फ़ोर्स समिति के संयोजक प्रो. बी.एन. तिवारी जी ने स्वागत भाषणदिया एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के समन्वयक डॉ. सी.एस. वजलवार ने राष्ट्रीय संगोष्ठी की रूपरेखा और उद्देश्यों को प्रस्तुत किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए, प्रोफेसर आलोक कुमार चक्रवाल, माननीय कुलपति गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर ने कहा कि पदभार ग्रहण करने के बाद से मेरी सर्वोच्य प्राथमिकता है किराष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सबसे पहले गुरु घासीदास में पूर्ण रूप से लागू किया जाये एवं गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय पूरे देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने में एक अग्रणी संस्थान बने। उन्होने बताया कि हमने इस कार्य के लिए चालीस दिनों की समय सीमा निर्धारित की है जिसमेंNEP-2020के कार्यान्वियन मॉडल को आकार दिया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि मेरी इच्छा है कि गुरु घासीदास विश्वविद्यालय का नाम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानचित्रों पर एक आदर्श के रूप में स्थापित हो। प्रोफेसर चक्रवाल ने आगे कहा कि विश्वविद्यालय की NEP-2020क्रियान्वयन समिति हमारे विश्वविद्यालय को विश्वपटल पर ले जाने हेतु निरंतर प्रयासरत है और मेरा पूरा विश्वास है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को पूरी तरह से क्रियान्वयित करने में पूरे भारत वर्ष में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय सर्वप्रथम विश्वविद्यलय होगा।

आयोजित संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री अतुल भाई कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृतिउत्थान न्यास, नई दिल्ली ने माननीय कुलपति महोदय एवं आयोजन समिति के सदस्यो को उक्त सारगर्भित विषय पर संगोष्ठी आयोजित करने पर प्रसन्नता व्यक्तकी और बधाई दी। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन हेतु हमे कठोर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने NEP–2020 के उद्देश्यों का उल्लेख करते हुए कहा था कि इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो विचार, बुद्धि और कर्म से भारतीय बनते हैं।NEP–2020 में व्यक्ति के समग्र विकास की गुणवत्ता व्यापक जोर दिया गया है, जिसमें अध्ययन, शिक्षण और शिक्षा कोरोजगारोन्मुखी बनाने को कहा गया है। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सूचाना प्रौद्योगिकी के अधिकतम उपयोग पर बल दिया गया है। उन्होने बताया कि इस नीति में सभी के सकारात्मक और रचनात्मक सुझावों को अपनाया गया हैताकि हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा का गौरवशाली प्राचीन इतिहास एवं आधुनिकता दोनों का सामंजस्य स्थापित हो सके। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा राष्ट्र की नींव है, जिसके आधार परराष्ट्र का निर्माण होता है अतः शिक्षा सभी के लिए सुलभ होना चाहिए। उन्होंने कहा कि "**यदि राष्ट्र को बदलना है तो राष्ट्र कि शिक्षा व्यवस्था को बदलना होगा**"। श्री अतुल भाई कोठारी जी ने

कहा कि राष्ट्रीयशिक्षा नीति 2020 में पाठ्यक्रम निर्धारण,अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट, विभिन्न कौशल विकास के पाठ्यक्रमों का निर्माण, बहु-स्तरीय प्रवेश और निकास योजना एवं अनुसंधानइत्यादि को शामिल किया गया है।

इस अवसर पर संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि श्री अशोक कदेल जी निदेशक, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी,भोपाल ने कहा कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियो के जीवन में सुख-समृद्धि एवं आनंद लाए और ऐसे सभीचीजों को हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शामिल किया गया है। इसी प्रकार संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि श्री ओम प्रकाश शर्मा जी, क्षेत्रीय संयोजक, शिक्षासंस्कृति उत्थान न्यास, भोपाल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में आत्मनिर्भरता की बात महत्वपूर्ण हैऔर इसका विकास प्राथमिक स्तर से शुरू किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम में अंत में अतिथियों का सम्मान शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। संगोष्ठी में धन्यवाद ज्ञापन गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. शैलेन्द्र कुमार द्वारा दिया गया। उक्त संगोष्ठी में संगोष्ठी के सह-समन्वयक डॉ

सुजीत कुमार मिश्रा और डॉ. संबित कुमार पाढ़ी, विश्वविद्यालय के सभी संकायों के डीन, विभागाध्यक्ष, शिक्षक,आधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। संगोष्ठी का संचालन डॉ. सोनिया स्थापक, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग द्वारा किया गया था।

नोट : संगोष्ठी में भारत सरकार, राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा समय-समय पर कोविड-19 की सुरक्षा और रोकथाम से संबंधित दिशा-निर्देशों और अन्य नियमों का ध्यान रखा गया और उनका पालन किया गया था।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : उच्च शिक्षा का रूपांतरण

(दिनांक 19 फरवरी 2021)

दिनांक 9 फरवरी 2021 को शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय), बिलासपुर छत्तीसगढ़ एवं विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: उच्च शिक्षा का रूपांतरण" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य था उच्च शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा गुणवत्ता, परस्पर संबंध, संस्थागत पुनर्गठन, बहु-विषयक दृष्टिकोण एवं समग्र शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020पर चर्चा करना था।इस संगोष्ठी में भारतीय उच्च शिक्षा के मार्ग में क्रियान्वयन चुनौतिया जैसे पाठ्यवस्तु, शिक्षणशास्त्र, कार्यक्षेत्र और चुनौतियों, समस्याओं और संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया था।संगोष्ठी के विषय विशेषज्ञों द्वारा उच्च शिक्षा पर कुछ ठोस प्रतिबिंबों के साथ अनुभव और सिद्धांत द्वारा प्रदत्त कुछ व्यावहारिक सुझाव प्रदान किए गए। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर वी.एस. राठौर, संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने स्वागत भाषण दिया और संगोष्ठी के प्रमुख लक्ष्यों से सभी को परिचित कराया।उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों को समझने और इसके क्रियान्वयन की राह में आने वाली चुनौतियों की पहचान करने में यह संगोष्ठी किस तरह से हमारी मदद करेगी। उन्होंने प्रत्येक प्रतिभागी को NEP के कार्यान्वयन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने और रूपांतरण की प्रक्रिया में उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने की सिफारिश की।

संगोष्ठी के संयुक्त संयोजक डॉ. सी.एस.वजलवार, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, गुरुघासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर ने संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे हमें 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति मिली है जो ऐसे समय में आई है जब हम सच्चे परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं। उन्होने कहा कि भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया भर में वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली में बहुआयामी चुनौतियों से गुजर रही है।उच्च शिक्षा के पुनर्गठन के लिए नीति निर्माताओं के ध्यान में पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र और जलवायु जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। डॉ वज़लवार ने उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन के मार्ग में आने वाली चुनौतियों की संख्या और प्रकार पर भी विस्तार से प्रकाश डाला जोकि निम्नानुसार है –

- विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट ज्ञान को एकीकृत करना और परस्पर जोड़ना।

- उच्च शिक्षा के 'वर्ग से जन' रूपांतरण के लिए, हमे विशिष्ट ज्ञान को प्रत्येक विद्यार्थी को उनकी भाषाई और सामाजिक पृष्ठभूमि में विभिन्नता के बावजूद उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करना होगा। देशी भाषाओं में, विशेष रूप से भारत जैसे बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी राष्ट्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण संसाधनों के उत्पादन की चुनौती भी हमारे सम्मुख खड़ी है।
- एक बहुत ही प्रासंगिक मुद्दा है कि देश के सुदूर छोर पर सभी वर्ग के लोगों के करीब लाने के साथ–साथ उनके लिए कक्षा में सीखने के उपयुक्त तरीकों को खोजना होगा ताकि प्रत्येक आधिगमकर्ता अपनी गति से, अपने स्थान पर, अपने समय पर सीखने को सुनिश्चित कर सके।
- COVID 19 की इस दुर्भाग्यपूर्ण महामारी की स्थिति में, हम भाग्यशाली थे कि हम उस समय की आवश्यकता

के अनुसार तैयार रहे जो तकनीकी और सामाजिक रूप से समावेशी है।
- सबसे बड़ी चुनौती है साधन संपन्न, कुशल और जानकार शिक्षकों को विकसित करना है जो प्रौद्योगिकी उन्नयन, पहुंच और समावेशन के मुद्दों का समाधान कर सकते हैं।
- उच्च शिक्षा संस्थानों को, यहां तक कि जमीनी स्तर पर भी, एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षण अधिगम वातावरण का निर्मित करने के लिए अपनी बुनियादी सुविधाओं के उन्नयन के लिए समर्थन की आवश्यकता होगी।
- स्मृति और परीक्षा आधारित उच्च शिक्षा प्रणाली से परिणाम और मूल्य आधारित परीक्षा प्रणाली की ओर बढ़ने के लिए, हमें दोषारोपण को छोड़कर, अपने शिक्षकों और प्रशासनिक कर्मचारियों को उपयुक्त रूप से उन्मुख और सक्षम करने की आवश्यकता है। इसलिए हमे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल उद्देश्यों और इसकी अनुशंसाओं को समझने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी के मुख्य उद्देश्यों को डॉ. वज़लवार ने इस प्रकार बताया गया –

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत हमे किस तरह के संस्थागत पुनर्गठन और समेकन का प्रस्ताव है, साथ ही उच्च शिक्षा के रूपांतरण और नियामक प्रणालियों की भूमिका को समझने के लिए इस संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है ।
- यह समझने के लिए की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, क्यों अधिक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर बढ़ना चाहती है और उदार कलाओं को भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वापस लाना चाहती है।
- कल्पनाशील और लचीली पाठ्यचर्या संरचना कैसे प्रदान करें जो विषयों के रचनात्मक संयोजनों को सक्षम करती है और स्थानीयकरण से अंतर्राष्ट्रीयकरण की ओर बढ़ने के लिए इष्टतम सीखने का निर्माण करती है।उन्होंने बताया कि संगोष्ठी उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और अनुसंधान के लिए संकाय विकास के मुद्दों पर केंद्रित है।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता, डॉ. रवींद्र कान्हेरे, अध्यक्ष, एएफआरसी, मध्य प्रदेश सरकार ने उच्च शिक्षा संस्थानों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के लिए बहुत महत्वपूर्ण मुद्दों और जमीनी चुनौतियों पर प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन और उच्च शिक्षा के रूपांतरण में हितधारक (माता-पिता, छात्र और शिक्षक) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, उच्च शिक्षा संस्थानों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत करता है लेकिन हम उन्हें कैसे अलग कर सकते हैं यह एक बड़ी चुनौती है। कॉलेजों के वित्त पोषण, निगरानी और संबद्धता के संबंध में उच्च शिक्षा की स्वायत्तता एक और चुनौती है। उच्च शिक्षा के रूपांतरण में निम्नलिखित चुनौतियाँ हैं-

- क्रेडिट कैसे ट्रांसफर करें
- एकीकृत विश्वविद्यालय प्रबंधन प्रणाली (आईयूएमएस)
- बहुविषयक पाठ्यक्रम (MOOC, विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम) और उनकी प्रमाणन प्रक्रिया।
- एकाधिक निकास और प्रवेश: बहु-विषयक पाठ्यक्रमों के अनुकूलन के प्रति स्वीकृति और दृष्टिकोण।
- शिक्षा के माध्यम से कला को शामिल करना, कौशल और मूल्यों को बढ़ावा देना।

- स्थानीय आवश्यकता, पाठ्यचर्या में लचीलापन और स्थानीय और राष्ट्रीय मांग के साथ पाठ्यक्रम को संशोधित करते हुए नवीन पाठ्यक्रम का पुनर्गठन करना।
- प्रदर्शन उन्मुख और परिणाम आधारित मूल्यांकन और परीक्षा प्रणाली में पूरी तरह से सुधार किया जाना चाहिए।
- शिक्षक शिक्षा में सुधार के लिए समय-समय पर दो चीजों की आवश्यकता होती है:

1. प्रवेश प्रक्रिया

2. परीक्षा प्रणाली

राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षकों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए केंद्रीकृत प्रवेशपरीक्षा जोकि कौशल और परिणाम आधारित होनी चाहिए। उन्होंने बुनियादी ढांचे की समस्याओं, सीबीसीएस प्रणाली, परीक्षा पैटर्न में सुधार, एकाधिक प्रवेश और निकास विकल्प, संकाय विकास और शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में आईसीटी के एकीकरण के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुझावों पर जोर दिया कि हम कैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से क्षेत्रीय, भाषा और लैंगिक असमानता को कैसे संतुलित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन के लिए सभी हितधारकों और विशेष रूप से शिक्षा प्रणाली में माता-पिता की भागीदारी की महत्वपूर्ण भूमिका है। उच्च स्तर पर शिक्षा की योजना और प्रशासन में उनकी निरंतर प्रतिक्रिया को ध्यान में रखा जाना चाहिए। स्थानीय और क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण और बहुसांस्कृतिक शिक्षा की शुरूआत विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए प्रासंगिक एवं वर्तमान समय की मांग है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रोफेसर बलदेव शर्मा, कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सभी स्तरों पर शिक्षा के परिवर्तन के लिए ऐतिहासिक दस्तावेज और दूरदर्शी दिशानिर्देश है। यह नीति है, जो आधुनिक तकनीक के साथ पारंपरिक शिक्षा के एकीकरण के माध्यम से समग्र रूप से शिक्षा के सही अर्थ को समझती है। उन्होंने कहा कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में चरित्र निर्माण शिक्षा, राष्ट्रीय एकता और नैतिक मूल्यों का अभाव है।हमें वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इन चीजों को शामिल करने की जरूरत है। उन्होने आगे कहा कि **"विद्याजैसाकोई मित्र नहीं, जोविद्याकासम्मानकरतेहै, उनकासम्मानसभीकरतेहै"**उन्होंने चिंतन प्रक्रिया में मातृभाषा की भूमिका पर जोर दिया और कहा कि शिक्षा में बुनियादी सोच की कमी है इसलिए हम गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य नहीं कर पा रहे हैं। सोच हमारी शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है और विचार प्रक्रिया के बिना जीवन बेकार है। हमे हमारी पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता हैजिसमें कई गुण हैं जिनका आधुनिक शिक्षा में पूरी तरह से उपयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा को ज्ञान में बदलने से हमें जीवन के समग्र तरीके को समझने में मदद मिलती है। उन्होंने सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से मानवता के प्रति चेतना पर बल दिया। शिक्षा का समाजीकरण किया जाना चाहिए और शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को चरित्र और मूल्यों से परिपूर्ण होना चाहिए। हमें 'शिक्षा' को 'विद्या' में बदलने और उसके अनुसार लागू करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों को उत्कृष्टता और अनुसंधान की गुणवत्ता का केंद्र बनना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति, प्रोफेसर अंजीला गुप्ता ने संगोष्ठी के विषय की प्रासंगिकता के बारे में बात की और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने की उनकी तत्परता पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि नई नीति में छत्तीसगढ़ जैसे आदिवासी और सतनामी समाज के विकास के अवसरों का सम्मान करने के लिए समावेशी विकास प्रशिक्षण मॉडल बनाया गया है जिसमें आवश्यकता अनुसार कौशल विकास का प्रावधान भी शामिल है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि गौरवशाली अतीत को पुनर्स्थापित करना, मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहित करना एवं सत्य, ज्ञान और ज्ञान के विचार

को आत्मसात करना हमारा कर्तव्य है। विदेशी शक्तियों ने हमारे प्राचीन शिक्षण संस्थानों और प्रथाओं को समाप्त करने का प्रयास किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा को विकसित करना है। उन्होंने बताया कि हमारे विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत कई प्रावधान पहले से ही विभिन्न स्तरों पर हैं जिनमें च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम, मल्टी-लेवल एग्जिट ऑप्शन, को-करिकुलर एक्टिविटीज और स्किल डेवलपमेंट कोर्स पर क्रेडिट का प्रावधान शामिल है। विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल सिद्धांतों को लागू करने के लिए उनके कार्यकाल में 118 नए शिक्षकों की नियुक्ति की गई। नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के लिए विश्वविद्यालय में 10 स्मार्ट क्लासरूम, 30 सेमी-स्मार्ट क्लासरूम, MOOCSलैब और मीडिया लैब की स्थापना की गई। उन्होने बताया कि हमारे पास कैंपस में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' और 'उन्नत भारत अभियान', एनएसएस यूनिट और एनसीसी यूनिट की टीमें हैं। उन्होंने अपने भाषण को समाप्त करते हुए कहा कि हालांकि विकास के रास्ते में कुछ बाधाएं हैं, हम अपने विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को पूरी तरह से लागू करने के लिए हम

अपनी कोर टीम के सदस्यों के साथ निरंतर अग्रसर हैं।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन पेश किया और दर्शकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन के लिए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की तैयारी के बारे में बताया। उन्होंने राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति के सदस्यों को भी बधाई दी। राष्ट्रीय संगोष्ठी का संचालन डॉ सोनिया स्थापक, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, द्वारा किया गया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

'सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के विकास में गुरुकुल शिक्षा का योगदान'

(दिनांक 28 सितम्बर 2021)

दिनांक 28 सितंबर, 2021 को नीति आयोग और भारतीय शिक्षा मंडल ने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के सहयोग से "सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के विकास में गुरुकुल शिक्षा का योगदान" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था।

यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के सभी संकायों के शिक्षको और अधिकारियों एवं विभिन्न संस्थानों और संघों के अन्य विशिष्ट अतिथियों के लिए खुली थी। संगोष्ठी का शुभारम्भ आमंत्रित अतिथियों हेतु विश्वविद्यालय के तरंग बैंड द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना और कुलगीत एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया। अतिथियों काऔपचारिक स्वागत मंच पर नन्हे पौधे देकर किया गया था। संगोष्ठी में स्वागत भाषण प्रो. बी.एन. तिवारी, सदस्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 टास्क फोर्स, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने किया। प्रो. पी.के. बाजपेयी, समन्वयक, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 टास्क फोर्स, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के विषय के बारे में एक संक्षिप्त परिचय दिया और नीति की विषयवस्तु को बताया जो आत्मविश्वास, बहु-आयामी आधिगम, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक मूल्य एवं समग्र शिक्षा को महत्व देती है। संगोष्ठी के प्रथम सत्र के विशिष्ट अतिथि डॉ. उमाशंकर पचौरी, महासचिव, भारतीय शिक्षा मंडल, ने शब्दों के महत्व और उसकी शक्ति से अवगत कराया और कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का कार्यान्वयन केवल शिक्षक बिरादरी द्वारा ही किया जा सकता है।

संगोष्ठी के अध्यक्षीय भाषण में माननीय कुलपति, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल जी ने उच्च शिक्षा में "कार्य और गुण" के महत्व को रेखांकित किया और अपनी रुचि व्यक्त की कि यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने वाला पहला विश्वविद्यालय हो और सभी संकायों को एकजुट किया जाए हमे उसी के लिए काम करना। विशिष्ट अतिथि डॉ. दीपक कोइराला, राष्ट्रीय, सह संयोजक, गुरुकुल फाउंडेशन ने तकनीकी सत्र में कहा कि गुरुकुल एक पद्धति है और इस गुरुकुल परम्परा के अनुसार व्यक्ति को जीवन में लक्ष्य प्राप्त करने के लिए निर्णायक होना चाहिए। शिक्षक समाज के निर्माण के लिए जिम्मेदार है और इसलिए शिक्षकों का सम्मान किया जाना चाहिए। भारतीय शिक्षा मंडल के संयुक्त महासचिव और तकनीकी सत्र में विशिष्ट अतिथि श्री महेश डबक ने कहा कि महामारी कोविड के दौरान शिक्षक अग्रिम पंक्ति में थे और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन में शिक्षकों की भूमिका का बहुत महत्व है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि शिक्षा निर्माताओं, शिक्षकों और छात्रों को नीति के कार्यान्वयन में योगदान देने के लिए हाथ मिलाना चाहिए। नीति में बहुत से लचीलेपन दिए गए हैं जिन पर सिस्टम में चुनौतियों को हल करने के लिए काम किया जाना चाहिए। साथ ही उन्होंने तीन 'एच' (सिर, हृदय और हाथ) की अवधारणा दी। इस संगोष्ठी के दौरान आरएफआरएफ, नागपुर के साथ गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन हुआ जिसमे आरएफआरएफ, नागपुर, महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर, डॉ. सीवी रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, ओपी जिंदल विश्वविद्यालय, रायगढ़ के साथ एक और समझौता ज्ञापन पर विधिवत हस्ताक्षर किए गए। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर शैलेन्द्र कुमार ने धन्यवाद

प्रस्ताव दिया। इसी क्रम में तकनीकी सत्र के अंत में प्रो. ए.एस. रणदीव, निदेशक, आईक्यूएसी, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। आयोजन समिति के संयोजक, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष, डॉ. सी.एस.वजलवार थे। कार्यक्रम का संचालन वानिकी, वन्य जीव एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ गरिमा तिवारी ने किया।

एक दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय वेबिनार

'समकालीन शोध जगत में साहित्यिक चोरी के रोकथाम'

(दिनांक 29 नवम्बर, 2021)

शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय) बिलासपुर (छ.ग.) द्वारा दिनांक 29 नवंबर, 2021 को 'समकालीन शोध जगत में साहित्यिक चोरी के रोकथाम' पर एक दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम ऑनलाइन गूगल मीट के माध्यम से सुबह 11:00 बजे शुरू हुआ।सबसे पहले कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. ज्योति वर्मा ने सभी अतिथियों एवं कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। वेबिनार के समन्वयक शिक्षा विभाग के वरिष्ठ संकाय सदस्य,डॉ संबित कुमार पाढ़ी ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और वेबिनार के विषय एवं उद्देश्यों की जानकारी दी। कार्यक्रम के अतिथि डॉ. सुजीत कुमार, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग एवं एसोसिएट प्रोफेसर, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर थे। उन्होंने वेबिनार की आयोजक समिति को बधाई दी एवं सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। वेबिनार के मुख्य अतिथि प्रो. ए.एस. रणदिवे, निदेशक, आईक्यूएसी, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर थे। उन्होंने कहा कि इस प्रकार का कार्यक्रम समय की मांग है, जो युवा शोधकर्ताओं और संकाय सदस्यों को अनुसंधान नैतिकता और शोध कार्य की गुणवत्ता के प्रति जागरूक कर सकता है। हमें शोध प्रक्रिया के दौरान अनुसंधान नैतिकता का पालन करना चाहिए और कोई भी सॉफ्टवेयर 100 प्रतिशत साहित्यिक चोरी को नहीं माप सकता। साहित्यिक चोरी से बचने के लिए, पर्यवेक्षक और शोधकर्ता दोनों की जिम्मेदारी है कि वे शोध संहिता तथा नैतिकता का पालन करें करते हुए अपने अनुसंधान को करें। उन्होंने अच्छी शोध पद्धतियों के प्रसार और शोध की प्रक्रिया में अनैतिक प्रथाओं से बचने के लिए इस तरह के एक प्रासंगिक, गुणवत्तायुक्त कार्यक्रम के आयोजन के लिए पूरी आयोजन समिति को बधाई दी। वेबिनार के उद्घाटन सत्र में देश के विभिन्न राज्यों से कुल149 प्रतिभागी शामिल हुए, जिनमें से अधिकांश युवा शोधार्थी थे। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. ज्योति वर्मा ने धन्यवाद ज्ञाज्ञापन दिया।

उद्घाटन सत्र के बाद, वेबिनार का मुख्य सत्र 11:30 बजे शुरू हुआ जिसमें वेबिनार के विषय विशेषज्ञ श्री महेंद्रनाथ सरकार, प्रशिक्षक और विकास, सूचना विज्ञान प्रकाशन लिमिटेड बैंगलोर से थे। अपनी प्रस्तुति के दौरान उन्होंने प्रासंगिक उदाहरणों के साथ वैचारिक साहित्यिक चोरी की घटनाओं का वर्णन किया। उन्होंने शोध कार्य में इस प्रकार की अनैतिक प्रथाओं से बचने के उपाय भी बताए। उन्होंने सुझाव दिया कि उचित संदर्भ और ग्रंथ सूची प्रबंधन समय की आवश्यकता है और प्रत्येक शोधकर्ता को अपने शोध कार्य में साहित्यिक चोरी उपकरण और ग्रंथ सूची प्रबंधन सॉफ्टवेयर का उपयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि शोध की प्रक्रिया में पर्यवेक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण

होती है। उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके शोधार्थी शोध कार्य के नैतिक दिशानिर्देशों का पालन करते हैं और शोध कार्य में साहित्यिक चोरी से बचने की जरूरत है। सत्र के अंत में, प्रश्न–उत्तर सत्र का आयोजन किया गया था जिसमे शोधार्थियों ने अपने संशय एवं संकाओ दूर करने के लिए विषय विशेषज्ञ के साथ बातचीत की।

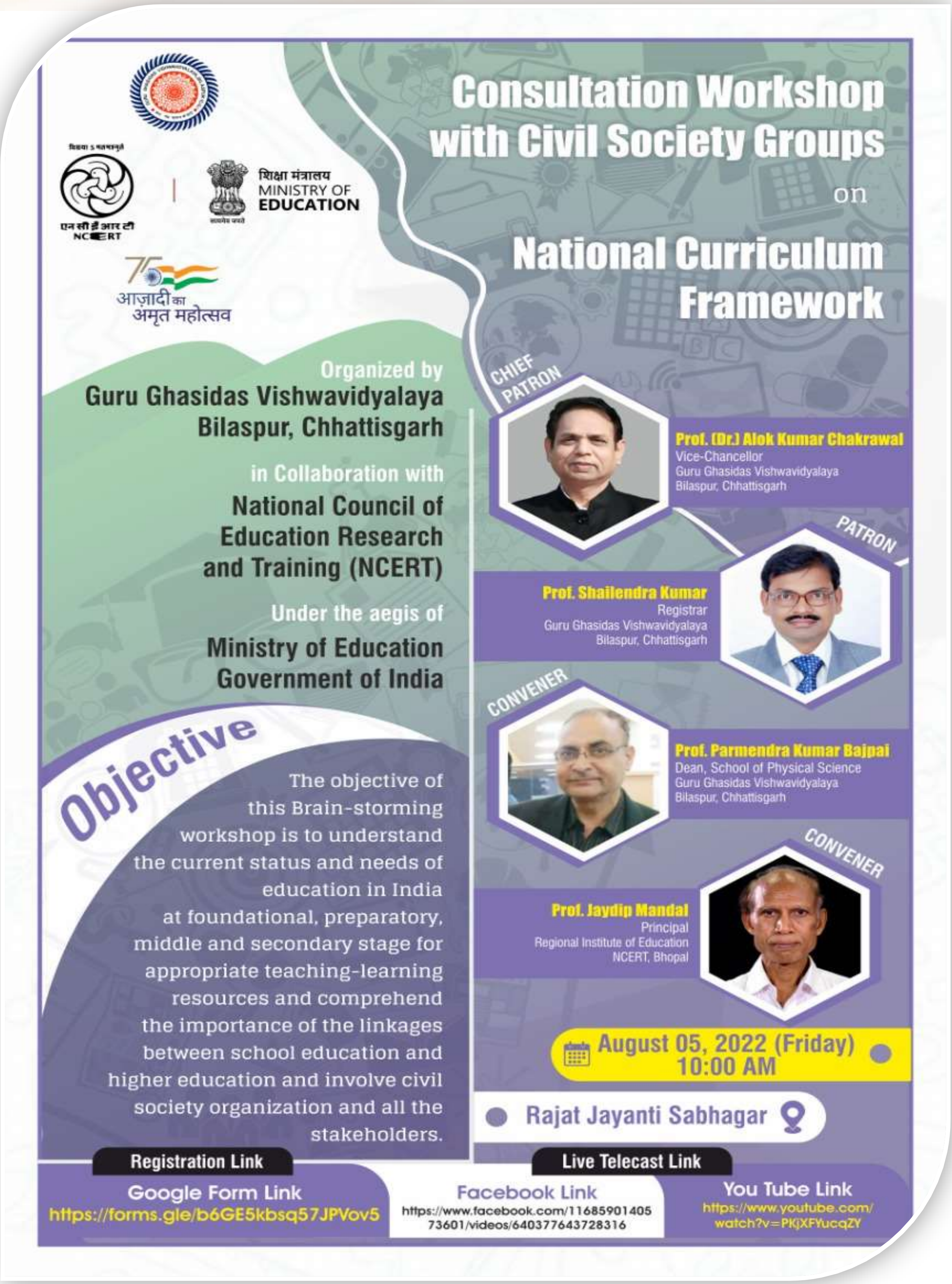
शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF
EDUCATION
आज़ादी का
अमृत महोत्सव
Consultation Workshop
with Civil Society Groups
on
National Curriculum
Framework
Organized by
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
Bilaspur, Chhattisgarh
in Collaboration with
National Council of
Education Research
and Training (NCERT)
Under the aegis of
Ministry of Education
Government of India
Objective
The objective of this Brain-storming workshop is to understand the current status and needs of education in India at foundational, preparatory, middle and secondary stage for appropriate teaching-learning resources and comprehend the importance of the linkages between school education and higher education and involve civil society organization and all the stakeholders.
CHIEF PATRON
Prof. (Dr.) Alok Kumar Chakrawal
Vice-Chancellor
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
Bilaspur, Chhattisgarh
PATRON
Prof. Shailendra Kumar
Registrar
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
Bilaspur, Chhattisgarh
CONVENER
Prof. Parmendra Kumar Bajpai
Dean, School of Physical Science
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
Bilaspur, Chhattisgarh
CONVENER
Prof. Jaydip Mandal
Principal
Regional Institute of Education
NCERT, Bhopal
August 05, 2022 (Friday)
10:00 AM
Rajat Jayanti Sabhagar
Registration Link
Google Form Link
https://forms.gle/b6GE5kbsq57JPVov5
Live Telecast Link
Facebook Link
https://www.facebook.com/11685901405
73601/videos/640377643728316
You Tube Link
https://www.youtube.com/
watch?v=PKjXFYucqZY

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा मंत्रालय को प्रस्तुत प्रतिवेदन

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रमों की कुल संख्या:

1. स्नातक : 36
2. स्नातकोत्तर : 28
3. पीएच.डी. : 33
4. सर्टिफिकेट : 02
5. डिप्लोमा : 04
6. व्यावसायिक : 00

विश्वविद्यालय ने NEP-2020 टास्क फोर्स का गठन किया। टास्क फोर्स ने NEP 2020 के कार्यान्वयन के लिए रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों के विकास के लिए एक मसौदा रूप रेखा प्रस्तुत की है जिसे विद्या परिषद की स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित किया गया है। टास्क फोर्स ने विभिन्न अध्ययन मंडलों द्वारा एलओसीएफ की समीक्षा और अपनाने की भी अनुशंसा की। इसके अलावा, इसने सीबीसीएस योजना के तहत स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के पुनर्गठन के साथ-साथ स्नातक कार्यक्रमों को बहु-विषयक बनाने का काम भी किया है। सभी अनुशंसाएं, अध्ययन मण्डल द्वारा की गई हैं और उनका कार्यान्वयन नवंबर, 2021 तक पूरा कर लिया जाएगा।

क्र.सं.	NEP-2020 नीतिगत पहल	मुख्य निष्पादन संकेतक	NEP 2020 विश्वविद्यालय के सर्वोत्तम प्रयास
01.	बहु-विषयक शिक्षण	प्रस्तुत किए गए कुल कार्यक्रमों में से बहु-विषयक दृष्टिकोण के तहत शुरू किए गए शिक्षण कार्यक्रम/पाठ्यक्रम की संख्या	कार्यक्रम = 16 पाठ्यक्रम = 31 (अनुलग्नक-I)
02.	सीखने के परिणाम आधारित पाठ्यक्रम ढाँचा (एलओसीएफ)	प्रस्तावित कार्यक्रमों में से कितने कार्यक्रम सभी एलओसीएफ आधारित हैं?	सत्र 2021-22से कुल सभी स्नातक कार्यक्रम एलओसीएफ आधारित हैं. पीजी कार्यक्रमों में पीओस और पीएसओएस होते हैं.
03.	अनुभवात्मक शिक्षण	अनुभवात्मक शिक्षण घटक वाले यूजी और पीजी कार्यक्रमों में पाठ्यक्रम के औसत प्रतिशत पर	पीजी में औसत प्रतिशत = 34% यूजी में औसत प्रतिशत = 23% प्रैक्टिकल/ प्रोजेक्ट/ इंटर्नशिप कार्यक्रम में औसत प्रतिशत निबंध क्षेत्र कार्य प्रशिक्षण/उद्योग सीखने के दौरे जो सभी कार्यक्रमों में अनुभवात्मक सीखने का हिस्सा हैं
04.	एकाधिक प्रवेश-निकास	एकाधिक प्रवेश-निकास के लिए कार्यक्रम/पाठ्यक्रम	सत्र 2022-23 में मी के साथ कार्यक्रमों की संख्या = 15

05.	क्रेडिट के लिए अकादमिक बैंक (एबीसी)	क्रेडिट के लिए अकादमिक बैंक पर पंजीयन की स्थिति	विश्विद्यालय द्वारा अकादमिक बैंक क्रेडिट विनियम को अपनाया गया है. हालाँकि एनआईआरएफ रैंकिंग और नैक के कारण विश्वविद्यालय पंजीकरण नहीं करा सका.
06.	राष्ट्रीय शैक्षणिक निक्षेपागार	राष्ट्रीय शैक्षणिक निक्षेपागार में लाभार्थी विद्यार्थियों की संख्या	एनएडी को 2014-15 से लागू किया गया है. एनएसडीएल से 9696 छात्रों का डाटा ट्रांसफर कर डिजीलॉकर में अपलोड किया गया है. एनएडी के तहत लगभग 9960 छात्र लाभान्वित.
07.	स्वयं पाठ्यक्रम के लिए ट्रांसफर क्रेडिट (ऑनलाइन पाठ्यक्रम)	'स्वयं' पाठ्यक्रम के लिए ट्रांसफर क्रेडिट की संख्या	एम.टेक. में प्रस्तुत पाठ्यक्रम 01 रजिस्टर्ड विद्यार्थियों की संख्या - 13 क्रेडिट ट्रांसफर निरंक है, क्योंकि पाठ्यक्रम चल रहा है
08	कौशल विकास पाठ्यक्रम	कौशल विकास कार्यक्रम/पाठ्यक्रम की संख्या	कार्यक्रम : प्रस्तुत : 01 (योगा सर्टिफिकेट) 2022-23 में अनुमोदन हेतु भेजे गए प्रस्तुत कार्यक्रम = 03 (नैनो टेक्नोलॉजी में पीजी प्रोग्राम, नैनोसाइंस और एडवांस मैटेरियल्स परफॉर्मिंग आर्ट्स (बीपीए) और फाइन आर्ट्स (बीएफए) में यूजी प्रोग्राम. **पाठ्यक्रम** स्नातक -74परास्नातक -28 पीएच.डी.-33 प्रमाणपत्र-01 डिप्लोमा-01
09	कार्यक्रम/ क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम	कार्यक्रमों की संख्या/ क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम	2022-23 में प्रस्तुत पाठ्यक्रम= 03
10	ऑनलाइन कार्यक्रम	ऑनलाइन मोड में पेश किए जाने वाले पाठ्यक्रमों की संख्या	निरंक
11	NEP कार्यान्वयन के लिए भवन	NEP2020 के बारे में जागरूकता और कार्यान्वयन के लिए आयोजित विकास कार्यक्रम / वेबिनार / प्रशिक्षण	क्रियान्वित कार्यक्रमों की संख्या - 10
12.	NEP2020 के कार्यान्वयन के लिए कोई अन्य पहल	रणनीतिक योजना	NEP2020 टास्क फोर्स और 08 उपसमितियों ने NEP2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सूक्ष्म विवरण और विकसित रणनीतिक योजनाओं और लक्ष्यों पर काम किया है। योजना का मसौदा रणनीतिक योजना

			का मसौदा वैधानिक निकायों के अनुमोदन की प्रक्रिया में है।

Letter to Consultant NPIU, New Delhi on NEP in Technical/Engineering Education

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय,बिलासपुर (छ०ग०)

GURU GHASIDAS VISHWAVIDYALAYA, BILASPUR (CG)

(A Central University established by the central University Act.2009 No. 25 of 2009)

No. 104 /Dev/2021 Bilaspur, Dated: 30.11.21

To,

Dr. Yogesh Srivastava
Consultant Academic
National Project Implementation Unit
Copia Corporate Suites, 3rd Floor
301-302, Plot No. 9, Jasola Vihar,
New Delhi – 110025

Sub: New Central Sector Scheme of Ministry of Education, Govt. of India for assisting implementation of NEP 2020 in Technical/Engineering Education – submission of data pertaining to Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur (C.G.)

Ref: Your email dated 23 November, 2021 and letter No. F.No.NPIU/MERITE/Prep/251 dated 18th November, 2021.

Sir,

With reference to the above mentioned subject, kindly find attached herewith the details of the Engineering/Technology Education offered by Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur (C.G.) in the prescribed format. Kindly also find attached herewith the details about status of implementation of NEP 2020 in the University as Annexure – I, for kind perusal and further action please.

Thanking you,

By Orders,

Encl: As stated above.

30/11/21
Registrar (Acting)

Copy to:
1. The Secretary to the Vice-Chancellor for information to the Hon'ble Vice-Chancellor.
2. The Dean, SoS, Engineering & Technology, GGV, for information and necessary action.
3. The Coordinator, NEP 2020, Task Force, GGV, for information and necessary action.
4. Office copy.

Assistant Registrar (Dev.)

(1) Name of Institute (with location):

School of Studies of Engineering & Technology,
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya,
P.O. Koni, Bilaspur, Chhattisgarh - 495009

(2) Contact Information of Dean Academic (or equivalent officer which can provide the information asked below)

- Name : Prof. T. V. Arjunan
- eMail Id : deanetggv@gmail.com
- Cell No. : 91-9894332446
- WhatsApp No.: 91-9894332446

(2) Number of engineering programmes

- BE/BTech programmes : 07
- ME/MTech programmes : 07**

** 05 programmes are started from the academic session 2021-22

(3) Number of engineering students

Programme level	Total no. of students
UG: BE/BTech (Students of 1st , 2nd , 3rd and 4th year in 2020-21)	1352
PG: ME/MTech (Students of 1st and 2nd year in 2020-21)	30

(4) NBA Accreditation as on date

Programme level	Programmes Accredited (No.)	Applied- for (SAR uploaded) (No.)
UG: BE/BTech	Nil	Nil
PG: ME/MTech	Nil	Nil

Progress on Implementation of NEP 2020 to Joint Sec. UGV, New Delhi

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय,बिलासपुर (छ०ग०)

GURU GHASIDAS VISHWAVIDYALAYA, BILASPUR (CG)

(A Central University established by the central University Act.2009 No. 25 of 2009)

No. 90 /Dev/2021 Bilaspur, Dated: 06/10/2021

Dr. Jitendra K. Tripathi
Joint Secretary
University Grants Commission
Bahadur Shah Zafar Marg,
New Delhi – 110 002

Sub: Progress on Implementation of National Education Policy (NEP)
Ref: D.O. No. 79-1/2021(CU) dated 18 September, 2021.

Sir,

With reference to the above cited letter, it is to mention that, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur has taken many initiatives for the implementation of NEP-2020 in the University and constituted an Implementation Committee for NEP-2020. Committee organized a number of programmes and interacted with eminent educationists and experts to discuss and plan the implementation strategies. Progress of the same has been reported to UGC from time to time. In order to speed up the implementation and prepare NEP-2020 Implementation Plan: Strategic Plan and Goals as well as phase wise Roadmap for implementation of NEP-2020, University has constituted a Taskforce in September, 2021. The Taskforce has prepared NEP-2020 implementation time line that has been approved by Standing Committee of Academic Council in its meeting held on 14.09.2021. Accordingly, the Strategic Implementation Plan will be prepared within 40 days (copy of the timeline attached for kind perusal). Point wise response on each point as desired in the letter referred to above is as under:

1. Regarding Multiple Entry and Exit System (MEES) – University has earlier reported that the MEES will be implemented in GGV from session 2022-2023. In this regard, Board of Studies for various programmes will discuss, design and recommend MEES provisions in their programs by the end of November, 2021 after the approval of Strategic Implementation Plan.
2. Initiation of multidisciplinary & interdisciplinary courses in the initial phase will be taken up for the existing Undergraduate and Postgraduate programmes. This exercise will also be completed by the last week of November, once the strategic plan is approved.
3. SWAYAM regulation has been already approved by the statutory bodies of the University (circular attached).
4. The UGC Apprenticeship/Internship Embedded Degree Programme Guidelines have been already approved by the Standing Committee of Academic Council. We have partially implemented them in professional programmes and some postgraduate programmes.
5. LOCF for various Undergraduate programmes as uploaded by the UGC has been discussed in the meeting of the NEP-2020 Implementation Task Force and University resolved that the same be deliberated upon in the respective Board of Studies (BoS)) in the light of NEP provisions and their opinion/response be submitted to academic section on or before 14.10.2021. Therefore, the LOCF will be submitted for adoption in the statutory bodies of the University.

Thanking you,

By Order,

Registrar (Acting)

MOOC's courses adoption GO by GGV and Guidelines

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 क्रमांक 25 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

GURU GHASIDAS VISHWAVIDYALAYA, BILASPUR (C.G.)

(A Central University established by the Central University Act., 2009 NO 25 of 2009)

Web Site – www.ggu.ac.in, ph. No. 07752-260342, fax No. 07752-260148,154

क्रमांक 108 /अका./2020

बिलासपुर, दिनांक 23/07/2020

कार्यालयीन ज्ञाप

MOOCs के लिये प्रस्तावित विनियम एवं इस हेतु गठित अनुशंसाओं को विद्यापरिषद की स्थायी समिति की बैठक दिनॉक 19-06-2020 के विषय क्र0-11 के अंतर्गत किया गया। समिति ने निम्नानुसार निर्णय लिया है :–

"स्थायी समिति ने यह निर्णय लिया कि भारत सरकार के राजपत्र में दिनॉक 19-7-2016 को प्रकाशित MOOCs संबंधित विनियम को अंगीकृत किया जाय।"

विद्यापरिषद की स्थायी समिति द्वारा लिये गये निर्णयानुसार अंगीकृत यूजीसी विनियम 2016 इस ज्ञाप के साथ संलग्न कर सर्व-सूचनार्थ जारी किया जाता है।

साथ ही साथ विद्यापरिषद की स्थायी समिति की बैठक दिनॉक 15-7-2020 में MOOCs के सुचारू संचालन हेतु गुरू घासीदास विश्वविद्यालय के लिये दिशा-निर्देशों का अनुमोदन किया गया है। अनुमोदित गाईड लाईन भी इस ज्ञाप के साथ संलग्न कर सर्व-सूचनार्थ एवं संबंधितों के द्वारा आवश्यक कार्यवाही हेतु एतद द्वारा जारी किया जाता है।

आदेशानुसार,

कुलसचिव (कार्यवाहक)

प्रतिलिपि :–

1– कुलपति/कुलसचिव जी के सचिव/निज सहायक को मान0कुलपति/कुलपति जी के सूचनार्थ।
2– अधिष्ठाता,समस्त विद्यापीठ, गुरू घासीदास वि0वि0बिलासपुर की ओर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
3– समस्त विभागाध्यक्ष, गुरू घासीदास वि0वि0बिलासपुर की ओर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
4– परीक्षा नियंत्रक,गुरू घासीदास वि0वि0बिलासपुर की ओर सूचनार्थ प्रेषित।
5– उप-कुलसचिव, परीक्षा विभाग की ओर सूचनार्थ प्रेषित।
6– नोडल अधिकारी, MOOCs सिविल इंजीनियरिंग विभाग की ओर सूचनार्थ ।
7– समन्वयक, आई टी. सेल, संगणक विभाग की ओर सूचनार्थ ।
8– कार्यालय प्रति।

सहा.-कुलसचिव (अका.)

Guidelines for online courses through SWAYAM

The courses studied through Massive Open online Courses (MOOCS) of UGC/ National Programme on Technology Enhanced Learning (NPTEL)/Consortium for Educational Communication (CEC)/AICTE under Study Webs of Active -Learning for Young Aspiring Minds (SWAYAM) in Indian Universities/Institutions by the students during their study period at GGV Bilaspur (C.G.) may count towards the credit requirements for the award of Degree. The credits earned by the student for such online courses will reduce the number of courses to be registered by the student at GGV in that particular semester. The guidelines for such transfer of credits shall be as per the Gazette of India, Extraordinary Part-III - Section 4, No. 295, dated July 20, 2016 and the subsequent amendments made by MHRD/UGC/GoI from time to time. On successful completion of the courses opted by the students under SWAYAM, the credits earned by them shall be included in their Grade Card. The credits/grades indicated in the grade sheet obtained from the university in which the student has completed the courses through MOOCs shall be used by the student as part of his/her transcripts. The guidelines for which are as follows.

Definitions:

PI: Principle investigator who offers the course through SWAYAM

Host/Offering University/Institute: The PI of the University/Institute which offers the course through SWAYAM

1) As and when the SWAYAM (UGC, NPTEL, and CEC) notify the list of courses to be available for registration to the Registrar/UGC SWAYAM Coordinator (Nodal officer, MOOCs) on 1st June and 1st November every year in the forthcoming semester. The Nodal officer MOOC's will circulate the list of courses to all the Heads of the Departments for identifying the courses.
2) Based on the list of courses, the head of the department in consultation with the faculty members shall identify the courses (maximum 20% of the courses of the curriculum of a particular program in that semester) that can be adopted from SWAYAM for credit transfer. Such identified couries and its credits equivalence shall be approved by the respective BoS.

LOCF आधारित स्नातक पाठ्यक्रम संरचना का निर्माण

LOCFआधारित च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (CBCS) के लिए सामान्य योजना का प्रारूप:

कोर: 3+2 (लेक्चर : प्रैक्टिकल) या 4+1 (लेक्चर :थ्योरी) या 3+1+1 (लेक्चर : प्रैक्टिकल : थ्योरी) 5 क्रेडिट

सामान्य ऐच्छिक: 3+2 (लेक्चर : प्रैक्टिकल) या4+1 (लेक्चर : थ्योरी) या 3+1+1 (लेक्चर : प्रैक्टिकल : थ्योरी) 5 क्रेडिट

क्षमता वृद्धि कोर्स: 2-4 क्रेडिट, पूरे यूजी कार्यक्रम के दौरान 2 (4 क्रेडिट) से 5 गुना (2 क्रेडिट) तक की पेशकश की जा सकती है।

कौशल वृद्धि कोर्स: 2 बार, 2 क्रेडिट (लेक्चर :प्रैक्टिकल - 2+0, 1+1, 0+2) की पेशकश की जा सकती है।

संकाय विशिष्ट कोर्स: 3+2 (लेक्चर : प्रैक्टिकल) या 4+1 (लेक्चर : थ्योरी) या 3+1+1 (लेक्चर : प्रैक्टिकल : थ्योरी) 5 क्रेडिट

निबंध: 4 -6 क्रेडिट

संगोष्ठी: 2 क्रेडिट

इंटर्नशिप: 2-6 क्रेडिट

इंटर्नशिप एक व्यावसायिक सीखने का अनुभव है जो एक छात्र को उसके अध्ययन के क्षेत्र या कैरियर की रुचि से संबंधित सार्थक, व्यावहारिक कार्य अनुभव प्रदान करता है। एक इंटर्नशिप एक छात्र को कैरियर की खोज, उसमे विकास और नए कौशल सीखने का अवसर प्रदान करता है। यह नियोक्ता को कार्यस्थल में नए विचार और ऊर्जा लाने, प्रतिभा विकसित करने और भावी पूर्णकालिक कर्मचारियों के लिए संभावित रूप से एक पाइपलाइन बनाने का अवसर प्रदान करता है।

एक इंटर्नशिप में निम्नलिखित घटक होते है -

• यह एक अंशकालिक कार्य अनुसूची से मिलकर बनता है जिसमें रिपोर्ट के रूप में लिखित दस्तावेज का एक भाग शामिल होता है।

• विशिष्ट क्षेत्र से संबंधित कार्य अनुभव के लिए एक स्पष्ट परियोजना विवरण प्रदान करता है।

• व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए छात्र को संगठन, उसकी संस्कृति और प्रस्तावित कार्य असाइनमेंट आदि की ओर उन्मुख करता है।

• सीखने के लक्ष्यों को विकसित करने और हासिल करने में विद्यार्थी की मदद करता है।

इंटर्नशिप में शामिल हो सकते हैं: परियोजना कार्य, विषय-विशेष कौशल पाठ्यक्रम, इंटर्नशिप, ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप, क्षेत्र स्थल का दौरा, भ्रमण, औद्योगिक दौरे, औद्योगिक प्रशिक्षण, अनुसंधान गतिविधियां, और कोई अन्य जो व्यावहारिक आधार पर विशिष्ट डिग्री कार्यक्रमों के लिए आवश्यक हो सकता है।

अतिरिक्त क्रेडिट पाठ्यक्रम: विश्वविद्यालय अतिरिक्त क्रेडिट ऐच्छिक (UACE), मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम (VAC), प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (CC), ऑनलाइन प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (OCC), और अन्य जैसा कि समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित किया जाता है। 2 -4 क्रेडिट

ऑनलाइन MOOC' sकोर्स: विश्वविद्यालय के दिशानिर्देशों के अनुसार विशिष्ट डिग्री कार्यक्रम के बीओएस द्वारा तय किया गया।

*ऑनलाइन समझौता ज्ञापन पाठ्यक्रम: विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित (यदि कोई हो)

एक सेमेस्टर के लिए ड्राफ्ट नमूना: कृपया सभी सेमेस्टर के लिए पाठ्यक्रम (आवश्यकता के अनुसार) संशोधित करें।

कोर्स		कोर्स कोड	कोर्स का नाम	क्रेडिट
कोर	कोर – 1 थ्योरी			3
	कोर – 1 प्रैक्टिकल			2
	कोर –2 थ्योरी			3
	कोर –2 प्रैक्टिकल			2
सामान्य ऐच्छिक (GE)	सामान्य ऐच्छिक (GE) – 1 थ्योरी			3
	सामान्य ऐच्छिक (GE)– 1 प्रैक्टिकल			2
DSE	संकाय विशिष्ट कोर्स (DSE)			
AEC	क्षमता वृद्धि कोर्स (AEC)		विभाग द्वारा प्रस्तावित पूल में से कोई एक	2
SEC	कौशल वृद्धि कोर्स (SEC)			2
लघु शोध				4- 6
संगोष्ठी				2
ऑनलाइन MOOC's कोर्स				2-5
इंटर्नशिप*	डिग्री विशेष कौर्स: परियोजना कार्य, विषय-विशिष्ट कौशल कोर्स, इंटर्नशिप, ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप, क्षेत्र स्थान का दौरा, भ्रमण, औद्योगिक दौरे, औद्योगिक प्रशिक्षण, अनुसंधान गतिविधियां, और विशेष डिग्री के लिए आवश्यक अन्य कोई भीकार्यक्रम।			2-6

अतिरिक्त क्रेडिट कोर्स:	विश्वविद्यालय अतिरिक्त क्रेडिट (ऐच्छिक)			2-4 प्रत्येक विश्वविद्यालय के अनुसार
	मूल्य वर्धित कोर्स			
	सर्टिफिकेट			
	ऑनलाइन सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम			
	अन्य			

कार्यान्वयन: विश्वविद्यालय द्वारा संचालित किए जाने वाले सभी स्नातक कार्यक्रम (नियामक अधिकारियों द्वारा विनियमित व्यावसायिक कार्यक्रमों के अलावा) को एलओसीएफ और क्षमता वृद्धि कोर्स के सामान्य व्यावसायिक संघ, कौशल वृद्धि कोर्स (एसईसी), सेमिनार, अनिवार्य इंटर्नशिप आदि के आधार पर सामान्य योजना के अनुसार पुनर्गठित किया गया है।इन कार्यक्रमों को बहु–विषयक, समग्र और कौशल आधारित बनाने के लिए शुरू किए गए हैं।